श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) की वार्षिक स्मारिका

माणिभद्र

40वां पुष्प वि. सं. 2055 सन् 1998

✤ दिनांक 23.8.98 ✤ भादवा सुद एकम्, रविवार ✤ महावीर जन्म वांचना दिवस

सम्पादक मण्डल

सम्पादन

मोतीलाल भड़कतिया

सदस्य

राकेश मोहनोत

गुणवन्तमल सांड

राजेन्द्र कुमार लूनावत

संजीव कुमार जैन

प्रकाशक :

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) जयपुर

आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालो का रास्ता, जयपुर - 302 003

फोन : 563260/569494

मुद्रक

खुशबू ऑफसेट प्रिन्टर्स

41, एकता मार्ग, घाटगेट रोड, आदर्श नगर, जयपुर

फोन : (ऑ.) 609038, (नि.) 313036

(पुखराज जैन)

॥श्री ऋषभदेवाय नम ॥

प्राचीन बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार में योगदान हेतु

सादर विनती

तीर्थ की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

जगद्गुरु जैनाचार्य अकबर प्रतिबोधक आचार्य विजय श्री हीरसूरीश्वरजी म सा स 1640 मे सम्राट अकबर के निमन्त्रण पर इस क्षेत्र मे विचरण करते हुए फतेहपुर सीकरी पधारे थे । इसका उल्लेख इसी श्री सघ के अन्तर्गत चन्दलाई ग्राम मे स्थित जिनालय मे मिलता है ।

किदवन्ती यह भी है कि बरखेड़ा ग्राम से अन्यत्र स्थान पर भूगर्भ से निकलने के पश्चात् जब बैलगाड़ी मे रखकर प्रतिमाजी को ले जा रहे थे तो इसी स्थान पर आकर गाड़ी रूक गई और किसी भी हालत मे आगे नहीं बढ सकी । तब इसी स्थान पर मदिरजी का निर्माण कराकर प्रतिमाजी को प्रतिष्ठित किया गया था ।

जिन बिम्ब

जयपुर-कोटा के राष्ट्रीय राजमार्ग सख्या 12 पर जयपुर से 30 किलोमीटर दूर शिवदासपुरा के पास बरखेडा ग्राम मे यह तीर्थ स्थित है । पास मे ही प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्री पदमप्रभुजी स्थित है । यहा यात्रा के लिए आने वाले श्वेताम्बर यात्रीगण बरखेड़ा आकर ही सेवा पूजा करते है ।

प्रथम तीर्थकर भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी की प्रकट प्रभावी प्रतिमाजी 35 इची मनोरम एव मनोज्ञय है जिनके पाषाण से प्रतीत होता है कि यह प्रतिमाजी सात आठ सौ वर्ष पुरानी है एव तीन सौ वर्ष पुराना जिनालय होने से यह महिमामय तीर्थ है ।

पूर्व जीर्णोद्धार

सुरम्य सरोवर किनारे स्थित यह जिनालय काल के थपेडो से ग्रसित होता रहा एव समय-समय पर जीर्णोद्धार भी होते रहे । अतिम जीर्णोद्धार वि स 1984 ई सन् 1927 के फाल्गुन मास मे होना पाया जाता है । यहाँ पर फाल्गुन सुदी मे वार्षिकोत्सव सम्पन्न होने के साथ-साथ यात्रियो का निरन्तर आवागमन बना रहता है ।

पुन जीर्णोद्धार

पुन जीर्णोद्धार कराने के बार मे चिंतन मनन चलते रहे । आखिर मे पूज्य महत्तरा साध्वीजी म सा एव पूरे समाज द्वारा लिये गये सकल्प के साथ मूर्ति उत्थापन के बाद कार्यारम्भ हो गया । गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म सा के शुभाशीर्वाद आचार्य श्री नित्यानन्दसूरीजी म सा के मार्गदर्शन एव शासन दीपिका महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म सा की सद्प्रेरणा, निश्रा एव मार्गदर्शन मे 1 दिसम्बर 1995 से निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ जो निरन्तर अबाध गति से जारी है । मण्डावर गम्भारे का निर्माण कार्य पूर्ण होकर शिखर निर्माण का आधा कार्य भी पूर्ण हो गया है । रग मण्डप के लिए प्लेट फार्म भी तैयार हो गया है । गम्भारे के लिए पूरा आरास श्री शखेश्वर पार्श्वनाथ ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध कराए गए है । मार्च 1998 मे आचार्य श्री पदमसागरजी म सा के जयपुर आगमन के अवसर पर हीराभाई मगलचन्द चौधरी परिवार के सौजन्य से चतुर्विध पैदलयात्री सघ का अनूठा आयोजन भी सम्पन्न हुआ है ।

आवासगृह और भोजनशाला

बाहर से यात्रीसघ बस व कारो द्वारा तथा अन्यान्य भी आते ही रहते है । यात्रियो के आवागमन को देखते हुए इसी तीर्थ मे यात्रिया के आवास हेतु

साधारण द्रव्य द्वारा दो मजिल का भवन जिसमे दो बडे हाल के साथ कमरे, शौचालय आदि का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है । भोजनशाला का भवन भी निर्माणाधीन है जिसके पूर्ण होते ही पूर्णरूपेण भोजनशाला प्रारम्भ कर दी जावेगी । फिलहाल सूचना देने पर भोजन की सुविधा उपलब्ध है । भोजनशाला भवन में एक फोटो लगाने का नकरा 5100/- निर्धारित किया गया हैं ।

आर्थिक योगदान हेतु विनम्र निवेदन

ऐतिहासिक तीर्थ स्थलों की कडी में यह स्थल भी अपने आप मे बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । योजना विशाल एव महत्त्वाकाक्षी है जिसकी पूर्णता श्रद्धालुओ के सतत् सहयोग से ही सम्भव है । श्री आणंदजी कल्याणजी, श्री नाकोडाजी, श्री चन्द्रप्रभु भगवान का नया मदिर, चैन्नई, श्री शखेश्वर पार्श्वनाथ ट्रस्ट, श्री आत्मानन्द सभा बम्बई-दिल्ली आदि विविध सघो एव ट्रस्टो ने इसकी महत्ता को स्वीकार कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया है । फिर भी योजना की पूर्णता हेतु अभी बहुत कुछ करना शेष है । जिनालयो एव ट्रस्टो मे जमा देव द्रव्य की धनराशि का तत्काल एव सही सदुपयोग करने का यह स्वर्णिम अवसर है ।

अब तक इस कार्य पर देवद्रव्य से करीब 80 लाख एवं साधारण द्रव्य से करीब 10 लाख का खर्चा किया जा चुका है जबकि अनुमानित योजना लगभग डेढ करोड से भी ऊपर की है ।

पूर्व घोषित योजनाओ में कतिपय पूर्ण होने के पश्चात् अब निम्न कार्यो मे विशेष धनराशि प्रदान करने हेतु निम्न योजनाये उपलब्ध हेः-

1. शिखर रू. 18, 11, 111

2. रंग मण्डपः-
- **खम्मे व पाट 11, 11, 111**
- **दादरी 11, 11, 111**
- **सामरण 12, 11, 111**

3. त्रि-चौकी 9, 11, 111

4. सम्पूर्ण जिनालय के मार्बल के पाटिए (गंभारे को छोडकर) एवं फर्श 11, 11, 111

5. हर व्यक्ति विशेष के लामार्थ एक ईट का नकरा 3111) रू. निर्धारित किया गया है जिनके नाम मी शिला लेख पर अंकित किए जावेंगे ।

6. मोजनशाला में एक फोटो लगाने का नकरा 5100/-

7. बरखेड़ा तीर्थ पर 8 कमरों की प्रस्तावित आवासीय धर्मशाला :- प्रत्येक ब्लाक का नकरा 1,11,111/-
सम्पूर्ण भवन के नामकरण का नकरा 11,11,111/-

अतः भारतवर्ष के समस्त सघो, पेढियो, तीर्थ-ट्रस्टियो एव प्रत्येक श्रद्धालु भाई-बहिन से विनम्र निवेदन है कि ऐसे महान एव ऐतिहासिक तीर्थ के जीर्णोद्धार मे उपरोक्त योजनाओ मे अथवा भावनानुसार ईटो एव फोटुओ के आधार पर अथवा एकमुश्त अधिक से अधिक आर्थिक योगदान करने की कृपा करे ।

बरखेडा तीर्थ के सम्पूर्ण वहीवट का हिसाब तपागच्छ सघ जयपुर के अधीन है । तपागच्छ सघ जयपुर पजीकृत संस्था है जिसका सम्पूर्ण हिसाब आडिट होकर प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता हे ।

अपने आर्थिक सहयोग का नगद/चैक/ड्राफ्ट श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ, जयपुर के नाम से भिजवाने की कृपा करे । ☆

विनीत

हीराभाई चौधरी	उमरावमल पालेचा	मोतीलाल भडकतिया
अध्यक्ष	सयोजक बरखेड़ा तीर्थ एवं जीर्णोद्धार समिति	संघ मत्री

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालो का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302 003 फोन : 563260/569494

श्री जैन श्वे सघ, मालवीय नगर, जयपुर द्वारा निर्मित
आराधना भवन के जिनालय के मूलनायक भगवान श्री वासुपूज्य स्वामी

राजस्थान की राजधानी जयपुर का द्रुत गति से विकास हो रहा है और यह महानगर बनने की ओर अग्रसर है। चारो ओर बड़े बड़े उपनगर विकसित हो रहे है जिनमे मालवीयनगर भी एक है जहा पर श्वेताम्बर आमनाय के लगभग चार सौ परिवार निवास करते है।

कहते है कि अगर अपने धर्म और सस्कृति की रक्षा करनी है तो उन्ही के अनुरूप आराधना स्थल होने भी आवश्यक है जहा जाकर आराधक अपनी आध्यात्मिक गतिविधियो को सम्पादित कर सके। इसी भावना के अनुरूप 1988 मे श्री जैन श्वे सघ, मालवीय नगर की स्थापना हुई। विधिवत विधान बना कर सघ को पजीकृत कराया गया और निर्वाचित कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमे श्वेताम्बर आमनाय के चारो अगो को सम्मिलित किया गया।

मदिरमार्गी, स्थानकवासी और तेरापथी मान्यताओ का सम्मिश्रण होकर एक ही स्थान पर सभी को अपनी भावना एव मान्यतानुसार आराधना करने का साधन उपलब्ध हो सके इसके लिए मदिर और स्थानक बनाने का निश्चय किया गया और दि 26-12-95 को यहा पर भूखण्ड खरीद कर श्री वासुपूज्य आराधना भवन के नाम से रजिस्ट्री कराई गई। वर्ष 1995 मे पजाब केसरी विजय वल्लभसूरीजी म सा की समुदायवर्ती महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म का जयपुर मे चातुर्मास था जिनका इस हेतु सम्पूर्ण मार्गदर्शन एव प्रेरणा पाप्त हुई एव अभी भी उन्हीं की मार्गदर्शन मे कार्य जारी है। दि 24-8-96 को मदिर एव उपाश्रय के लिए भूमि पूजन के साथ निर्माण कार्य का शुभारम्भ खरतरगच्छीय आचार्य श्री महोदयसागर जी म एव महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म की निश्रा मे सम्पन्न हुआ।

मदिर का निर्माण कार्य चल रहा है और गम्भारे का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर जयपुर मे विराजित साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म सा आदि ठाणा-5 की निश्रा मे मूलनायक भगवान श्री वासुपूज्य स्वामी शान्तिनाथ स्वामी महावीर स्वामी, गौतम स्वामी दादा गुरूदेव घण्टा कर्ण, माणिभद्र भैरवबाबा, पद्मावती देवी आदि की प्रतिमाओ का प्रवेश हो गया है और अब शुभ मुहुर्त मे इनकी प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। यह चित्र इन्हीं मूलनायक भगवान का है।

आराधना भवन का उद्घाटन तो 22 फरवरी, 1998 को ही सम्पन्न हो गया था।

यहा पर महत्तरा साध्वी जी म सा की सुशिष्या साध्वी श्री पूर्णकला श्री जी म सा आदि ठाणा-2 का चातुर्मास भी हो रहा है। विविध तपस्याये और आराधनाये सम्पन्न हो रही है।

इस वासुपूज्य आराधना भवन की प्रेरणादात् एव पूर्ण सहयोगी तपागच्छीय आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरीजी म की समुदायवर्तीनी शासन दीपिका महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्री जी म सा रही है।

ऐसे महान कार्य मे अधिक से अधिक आर्थिक योगदान कर अर्जित लक्ष्मी के सही सदुपयोग का स्वर्णिम अवसर है। अत यथा सम्भव अधिक से अधिक धनराशि भेट करके ऐसे महान् कार्य मे भागीदार बनने की सग्रह विनती है।

अपनी भेट की जाने वाली धनराशि का चैक/ड्राफ्ट/नगद श्री जैन श्वे सघ मालवीय नगर, जयपुर के पते पर भिजवाने की कृपा करे। ☆

भगवान श्री वासुपूज्य स्वामी

श्री जैन श्वे. संघ, मालवीय नगर, जयपुर द्वारा निर्मित कराए गए जिन मंदिर के मूलनायक भगवान जिनका दिनांक 6.7.98 को गर्भ गृह में प्रवेश सम्पन्न हुआ।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, (पंजी.) जयपुर
की
स्थायी प्रवृत्तियाँ

1. श्री सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर, घी वालों का रास्ता, जयपुर
2. श्री सीमंधर स्वामी मन्दिर, पाँच भाइयों की कोठी, जनता कॉलोनी, जयपुर
3. श्री रिखब देव स्वामी तीर्थ (जीर्णोद्धारान्तर्गत नव-निर्माण), ग्राम बरखेड़ा (जिला जयपुर) एवं निर्माणाधीन भोजनशाला
4. श्री शांतिनाथ स्वामी मंदिर, ग्राम चन्दलाई (जिला जयपुर)
5. श्री जैन चित्रकला दीर्घा एवं भगवान महावीर के जीवन चरित्र-भित्ती चित्रों में सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर, घी वालों का रास्ता, जयपुर
6. श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालों का रास्ता, जयपुर
7. श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय, मारूजी का चौक, जयपुर
8. नूतन भवन सं. 1816-18, घी वालों का रास्ता, जयपुर
9. श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर
10. श्री जैन श्वे. भोजनशाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर
11. श्री जैन श्वे. मित्र मण्डल पुस्तकालय एवं सुमति ज्ञान भण्डार
12. श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष
13. धार्मिक पाठशाला
14. स्वरोजगार प्रशिक्षण, उद्योग शाला, सिलाई शाला
15. जैन उपकरण भण्डार, घी वालों का रास्ता, जयपुर
16. ''माणिभद्र'' वार्षिक स्मारिका

अनुक्रमणिका

1	बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार मे योगदान हेतु विनती	तपागच्छ सघ	2
2	चित्र परिचय-वासुपूज्य भगवान	सपादक मण्डल	4
3	तपागच्छ सघ की स्थायी प्रवृत्तिया	तपागच्छ सघ	5
4	सम्पादकीय	सपादक मण्डल	8
5	गणधर इन्द्रभूति गौतम	आ श्री नित्यानन्द सूरिश्वरजी म सा	9
6	सम्यक् आचरण ही ज्ञान का श्रृगार है	महत्तरा सा सुमगला श्री जी म सा	15
7	आध्यात्मिक भजन	सा श्री प्रशातगिरा श्री जी म सा	18
8	मन की शक्ति	सा श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म सा	19
9	मानव जीवन का सार धर्माचरण है	सा श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म सा	22
10	अष्ट प्रातिहार्य	सा श्री शुभोदया श्री जी म सा	25
11	इच्छा को मारो मन को सयमी बनाओ	आ श्री हिरण्यप्रभ सूरीश्वर जी म सा	28
12	मास क्षमण की तपस्विनी सा मोक्षरत्ना श्री जी म	सम्पादक मण्डल	29
13	स्नेह ले हृदय दीप ने धरती का श्रृगार किया है	श्री हीराचन्द ढड्ढा	30
14	मानव जीवन मुक्ति का मगल द्वार	मुनि श्री पूर्णचन्द्र विजय जी म सा	31
15	श्री बरखेड़ा ऋषभदेव प्रभु प्रथम तीर्थकर	सा सौम्यकला श्री जी म सा	35
16	पेरणा सच्ची आराधना	श्री वीरचन्द लघाभाई धरमसी	36
17	श्री नमस्कार महामत्र का अपूर्व महात्म्य	सा पूर्णनन्दिता श्री जी म सा	37
18	प्रभु वीर को यशोदा करे विदा	सा श्री पावनगिरा श्री जी म सा	40
19	पर्युषण का कथन आत्म मथन	प श्री जिनोत्तम विजयजी गणिवर्य म सा	41
20	सभव-असभव	श्री बाबुलाल शाह	44
21	पर्वाधिराज एक आदर्श	प श्री रत्नचन्द्रविजय जी म सा	45
22	बिखरे मोती	मुनि श्री रत्नसेन विजय जी म सा	47
23	भगवान महावीर का सोलहवा भव	मुनि श्री भुवन सुन्दर विजय जी म सा	51
24	पेम के आसू	मुनि श्री प्रेमप्रभ सागर जी म सा	57
25	मिथ्यात्व के अधकार से आत्मा को बचाना	सा श्री पूर्णप्रज्ञा श्री जी म सा	59
26	धर्म का मर्म	कु ममता	62
27	सच्चा सुख	सा श्री पद्मरेखा श्री जी म सा	63
28	पाकृतिक आग से अधिक मानसिक आग	सा श्री पूर्णकला श्री जी म सा	65

29	पुष्प का सदेश	श्रीमती शान्ती देवी लोढा	68
30	क्या ? क्यों ? और कैसे ?	श्री राजमल सिंघी	69
31.	शान्ति समन्वय के प्रेरणा स्रोतः प्रभु महावीर	सुश्री सरोज कोचर	73
32	प्रभु भक्ति का प्रभाव	श्रीमती संतोष देवी छाजेड	76
33	नमस्कार महामत्र नवकार	श्री रतन चन्द कोचर	77
34.	खुद समझो और समझाओ	श्री आशीष कुमार जैन	79
35	उधार, धर्म मे नहीं चलेगा	श्री गुणवन्तमल सांड	81
36.	अहिसा से ही विश्व शान्ति	श्री विनित सांड	82
37.	कन्या व दहेज	सुश्री अन्जू जैन	83
38	जीवन का सार	श्री दर्शन छजलानी	84
39.	ऐसी बानी बोलिए	सुश्री सजीता कोचर	85
40	जैन नेतृत्व एव अपेक्षाए	श्री सुशील कुमार छजलानी	86
41	स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर	सुश्री सरोज कोचर	87
42	हार्दिक श्रद्धाजलि :-		
	1 स्व श्री कस्तूर मल जी शाह	संपादक मण्डल	89
	2 श्री निहालचन्द जी नाहटा	सपादक मण्डल	90
	3 श्री भगवान दास जी पल्लीवाल	सपादक मण्डल	91
43	श्री सुमति जिन श्राविका सघ- वार्षिक प्रतिवेदन	श्रीमती उषा सांड	92
44.	श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल वार्षिक प्रतिवेदन	श्री अशोक पी. जैन	94
45.	श्री बरखेडा तीर्थ का पैदल यात्री सघ	श्रीमती मंजू पी. चौरडिया	96
46.	श्री वर्द्धमान आयम्बिल शाला की स्थायी मित्तिया	तपागच्छ सघ	100
47.	आयम्बिल शाला परिसर में सहयोगकर्ता	तपागच्छ सघ	101
48.	श्री सुमतिनाथ जिनालय में पूजा सामग्री भेटकर्ता	तपागच्छ सघ	101
49.	बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार में विभिन्न संस्थाओ से प्राप्त योगदान	तपागच्छ संघ	102
50.	तपागच्छ संघ की महासमिति के सदस्य	तपागच्छ संघ	104
51.	श्री सम्मेद शिखर जी तीर्थ की नवीनतम स्थिति	श्री नरेन्द्र कुमार लूनावत	105
52.	वार्षिक प्रतिवेदन, 1997-98	मोतीलाल भड़कतिया, संघ मंत्री	107
53.	आय-व्यय विवरण 1997-98	दान सिह कर्नावट, कोषाध्यक्ष	122
54	चिट्ठा	,, ,, ,,	126
55.	अकेक्षक का प्रमाण-पत्र	श्री आर के.चत्तर, अंकेक्षक	128

56 विज्ञापन

सम्पादकीय...

श्री जैन श्वे तपागच्छ सघ (पजी), जयपुर की वार्षिक स्मारिका का 40वा अक श्रीसघ की सेवा मे प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है । किसी भी कार्य की निरन्तरता के लिए चालीस वर्ष की अवधि अपने आप मे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। सघ के तत्कालीन आगेवानो ने जब इस प्रकार की स्मारिका निकालने की कल्पना की एव सम्वत् 2016 मे "मणिभद्र" के प्रथम अक का प्रकाशन किया जिसमे लेखको की रचनाओ के साथ-साथ सघ की विगत वर्ष की गतिविधियो का विवरण एव सघ के आय-व्यय का विवरण प्रकाशित किया, उन्हीं के पद चिन्हो पर चलते हुए इन तीनो सम्भागो को कायम रखते हुए उत्तरोत्तर जिस प्रकार का निखार आता रहा है वह श्रीसघ एव सम्पादक मण्डल के लिए प्रसन्नता एव आत्म सन्तोष का विषय है । स्मारिका का प्रकाशन वर्ष मे एक बार भगवान महावीर जन्म वाचना दिवस के दिन निश्चित रूप से हो रहा है। सारे भारतवर्ष मे विभिन्न स्थानो पर चातुर्मास हेतु विराजित सभी साधु-साध्वी वर्ग को नवीनतम अक की प्रतिक्षा रहती है ।

इस वर्ष श्रीसघ मे महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्री जी म सा की शिष्या प्रशिष्या साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी आदि ठाणा का चातुर्मास हो रहा है। उनके आगमन से ही सघ मे त्याग तपस्या, आराधना साधना की झडी लगी हुई है और विविध आयोजन सम्पन्न हुए है । बरखेडा तीर्थ पर भी प्रथम बार चातुर्मास हुआ है एव साध्वी श्री मृदुरसाश्री जी आदि ठाणा वहा बिराजित है ।

इस अक मे भगवान श्री वासुपूज्य स्वामी का चित्र प्रकाशित किया गया है । महत्तरा साध्वीजी म सा की कर्मठता, कार्यसिद्धि के प्रति समर्पणता एव सफलता की सीढी के सौपान को प्राप्त करने के सकल्प का ही परिणाम है कि बरखेडा तीर्थ एव मालवीयनगर मे जिनालय निर्माण का कार्य अबाध रूप से जारी है और इन्ही कार्यों हेतु अपनी शिष्या साध्वी *श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म सा आदि ठाणा का मार्ग* दर्शन एव प्रेरणा प्राप्त है । आपके जयपुर आगमन के तत्काल पश्चात् दि 6-7-98 को श्री जैन श्वे सघ मालवीयनगर के तत्वावधान मे आयोजित समारोह मे नव-निर्मित जिनालय मे मूलनायक भगवान श्री वासुपूज्य स्वामी सहित अन्य जिन बिम्ब, देवी देवताओ की प्रतिमाओ का प्रवेश हुआ हे और उन्हीं का चित्र इस अक मे प्रकाशित किया गया है।

इस अक को पठनीय एव सग्रहणीय बनाने का श्रेय विद्वान लेखको, आचार्य, उपाध्याय, साधु साध्वी वृन्द को तो है ही, साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी, सा श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म सा का सहयोग एव मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ उसके लिए सम्पादक मण्डल सभी का आभारी है ।

लेखको की रचनाओ को मूल रूप मे प्रकाशित *किया गया* है जिससे सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नही है । लेखको की अपनी मान्यताये एव विचार है, सत्यासत्य का निर्णय पाठको को ही करना है ।

आशा है पूर्ववत् यह अक भी सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, इसी आशा एव विश्वास के साथ,

सम्पादक मण्डल

साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभा श्रीजी म.सा.

आ. श्री वल्लभसूरीजी म.सा. की समुदायवर्ती महत्तरा साध्वी श्री सुमंगला श्री जी म.सा. की सुशिष्या सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म. जिनकी पावन निश्रा में चातुर्मास वर्ष 1998 सम्वत् 2055 की आराधनाएं सम्पन्न हो रही हैं।

जीर्णोद्धारान्तर्गत—निर्माणाधीन बरखेड़ा तीर्थ
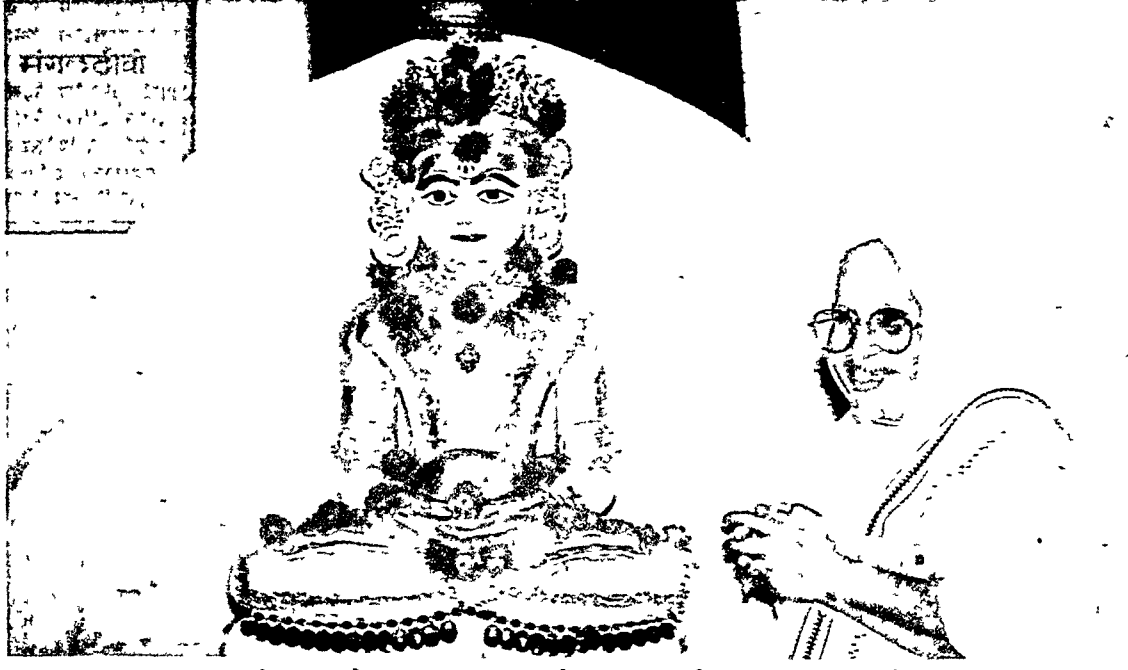
मूलनायक भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी का दर्शन करती हुई महत्तरा सा. सुमंगला श्रीजी म.सा. जिनकी प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं निश्रा में तीर्थ जीर्णोद्धार का कार्य जारी है।
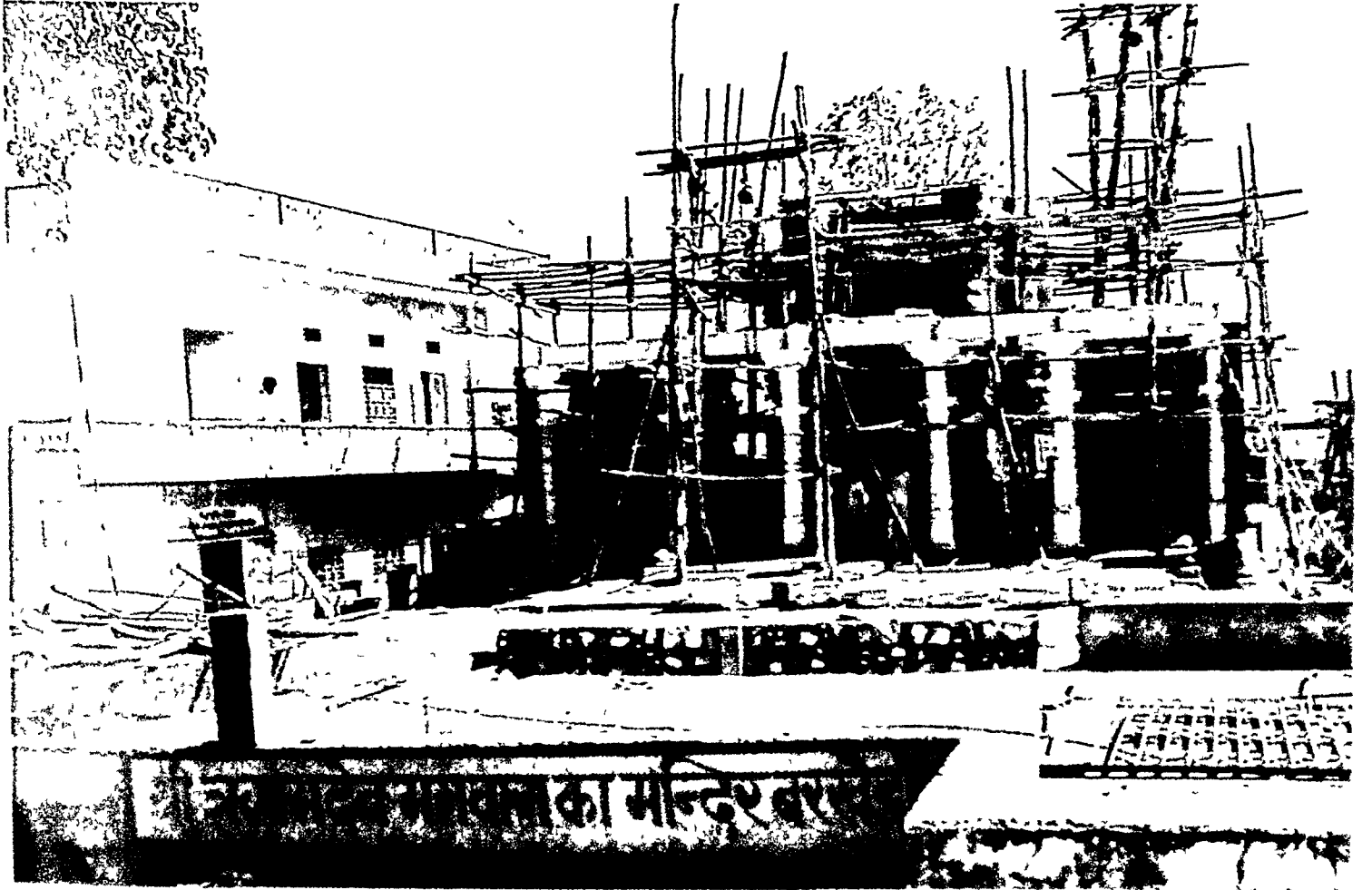
निर्माण कार्य मई, 1998 तक की स्थिति। गंभारा पूर्ण होकर शिखर के निर्माण का कार्य हो रहा है। यात्रियों के आवास हेतु दो मंजिला आवासगृह पूर्ण हो गया है। भोजनशाला का भवन निर्माणाधीन है।

विदाई समारोह

चातुर्मास वर्ष 1997 सम्वत् 2054 मे विराजित मुनिराज श्री पुण्यरत्नचन्द्रजी म एव साध्वी श्री पद्मरेखा श्रीजी म सा को दि 12 फरवरी 1998 को भावभरी विदाई दी गई। दोनो का ही कामली वोहरा कर अभिनन्दन किया गया। सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी कामली वोहराते हुए। इस अवसर पर महत्तरा सा सुमगला श्रीजी म सा भी उपस्थित थीं।

पारितोषिक वितरण समारोह

सघ के तत्वावधान मे आयोजित महिला स्व-रोजगार प्रशिक्षण शिविर मई, 1998 का पारितोषिक वितरण समारोह
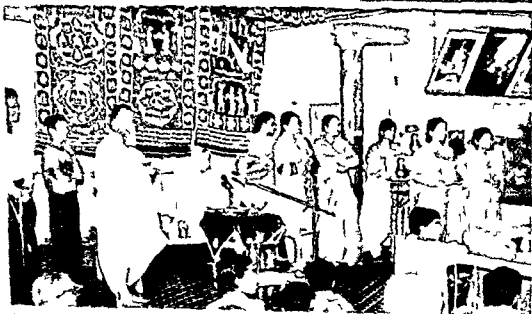
वरखेड़ा तीर्थ का चतुर्विध पैदल यात्री संघ दि. 20-22 मार्च, 98 की दृश्यावली

आ. श्री पद्मसागर सूरीश्वर जी म.सा. मांगलिक देकर पैदल संघ को विदा करते हुए।

आ. श्री पद्मसागर सूरीश्वर जी म.सा. संघपति श्री हीराभाई चौधरी एवं धर्मपत्नी श्रीमती जीवण बाई चौधरी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए।

पैदल यात्री संघ के वरखेडा ग्राम में प्रवेश का विहंगम दृश्य

सघ प्रयाण मे आ श्री पद्मसागर जी, उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागर जी म आदि मुनिमडल के साथ सघपति जी।

बरखेडा तीर्थ के मूलनायक भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी का दर्शन करते हुए महत्तरा सा सुमगला श्रीजी म , खरतरगच्छ की सा श्री शशिप्रभा श्रीजी म सा आदि साध्वी मडल
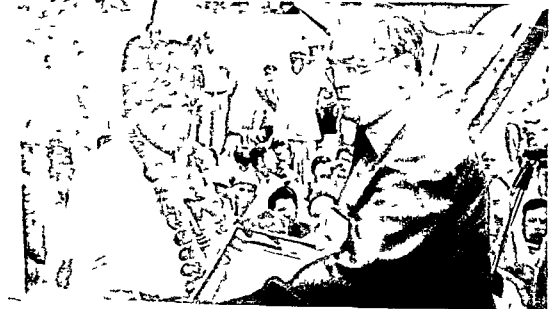
तपागच्छ सघ जयपुर की ओर से सघपति जी का बहुमान करते हुए सघ के उपाध्यक्ष श्री तरसेम कुमार जी पारख

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.) जयपुर

आत्मानन्द जैन सभा भवन घी वालो का रास्ता जयपुर फोन 563260/569494

निर्माण कराये जा रहे भवन की रूपरेखा एवं नकरे

श्री सघ के नये खरीदे हुए भवन स 1816-18 ठाकुर पचेवर का रास्ता घी वालो का रास्ता, ठोलियो की धर्मशाला के पास जयपुर की जमीन पर नव-निर्माण होने वाले हॉल व कमरो आदि के प्रस्तावित नकरे जिसका पूरा भुगतान स्वय करेगे अथवा अपने सहयोग से करायेगे —

1	खाद मुहूर्त एव भूमि पूजन	भवन के प्रवेश द्वार की दीवार पर 3 x 2 फुट की तख्ती जिसमे नाम के साथ खुद के परिवार वालो के नाम लिखे जायेगे।	2 51,111 00
2	शिलान्यास	भवन के प्रवेश द्वार की दीवार पर 3x2 फुट की तख्ती जिस पर नाम के साथ खुद के परिवार वालो के नाम लिखे जायेगे।	2 51,111 00
3	व्याख्यान हॉल	19 फुट ऊँचाई म 80 x 37 6 फुट = 3000 स्का फुट हॉल के गेट पर नाम हाल मे दो फोटुए 20 x 24 इच व हाल के अन्दर 4 x 2 5 फुट की तख्ती पर नाम के साथ खुद के परिवार के सदस्यो के नाम लिखे जायेगे। गेट पर नाम- 'व्याख्यान हाल' श्रीमान् सुपुत्र गोत्र द्वारा	11 11 111 00
4	मेजनाइन	व्याख्यान के हॉल मे सामने की बालकनी 40 x 37 6 फुट = 1500 स्का फुट। मेजनाईन के गेट पर नाम ऊपर के हॉल मे दो फोटुए 20 x 24 इच व हॉल मे ही 3 x 2 फुट की तख्ती पर नाम के साथ खुद के परिवार के सदस्यो के नाम लिखे जायेगे। गेट पर नाम- मेजनाइन (व्याख्यान हाल) हाल श्रीमान् सुपुत्र गोत्र द्वारा	7,11,111 00
5	प्रथम मजिल		
		1 भोजन शाला का हाल रसोई व स्टोर के साथ 50 x 36 फुट =1800 स्का फुट भोजनशाला के गेट पर नाम-अदर दो फोटुए 20 x 24 इच व हाल मे ही 3 x 2 फुट की तख्ती पर नाम के साथ खुद के परिवार के सदस्यो के नाम लिखे जायेगे। गेट पर नाम- भोजनशाला श्रीमान् सुपुत्र गोत्र द्वारा	7 11 111/00

		1 आवासन हॉल 30 x 15 फुट = 450 स्का फुट आ हॉल के गेट पर नाम-अदर तख्ती व दो फोटो 18x20'' गेट पर नाम- आवास हॉल न 1 श्रीमान् . .... सुपुत्र. . . गोत्र .. द्वारा	3,11,111 00
		1 कार्यालय : 11 6 x 8 5 फुट = 98 स्का फुट कार्यालय के गेट पर तख्ती व दो फोटो 18 x 20''	2,11,111 00
6	द्वितीय मजिल		
		1 आवास हॉल 26 x 15 फुट/390 स्का फुट हॉल के गेट पर नाम अदर तख्ती व दो फोटो 18 x 20'' गेट पर नाम- आवास हॉल न 2 श्रीमान् . .. . सुपुत्र . . . गोत्र . .... द्वारा	2,51,111 00
		1 हॉल 20 x 15 फुट = 300 स्का फुट हॉल के गेट पर नाम व तख्ती व दो फोटो 18 x 20'' गेट पर नाम- आवास हॉल न 3 श्रीमान् . . . . सुपुत्र . गोत्र ... . द्वारा	2,11,111 00
		8 ब्लॉक मय बाथ -ले0 नक्शे मे नबर दिये गये है । प्रत्येक का साईज कम से कम 120 स्का फुट । प्रत्येक ब्लाक का नकरा 81,111/00 x 8 गेट पर तख्ती	6,48,888 00
7	तीसरी मजिल	13 ब्लॉक मय बाथ -ले0 नक्शे में नंबर दिये गये है । प्रत्येक का साइज कम से कम 120 स्का फुट । प्रत्येक ब्लॉक का नकरा 81,111 x 13 । गेट पर तख्ती	10,54,443 00
8.	बोरिग	तख्ती	51,111.00
9	लिफ्ट	गेट पर नाम व अदर दो फोटो 12 x 15 इच	5,00,000 00
		कुल योग	62,73,331.00

10.निर्माण सहयोगी- *नवीन धर्मशाला के भवन निर्माण में प्रत्येक सदस्य* 21,000 (*इक्कीस हजार रुपये) देकर सहयोगी बनेंगे उनके नाम व्याख्यान हाल में मार्बल की तख्ती पर लिखा जायेगा।*

इस महान् कार्य में दानवीर श्रीमंतों से विभिन्न नकरों के अन्तर्गत सहयोग की सानुरोध प्रार्थना है ।

सम्पर्क सूत्र एवं विनीत :

हीराभाई चौधरी	नरेन्द्र कुमार लूणावत	मोतीलाल भडकतिया
अध्यक्ष	सयोजक, भवन निर्माण समिति	संघ मंत्री
204611	561882	602277
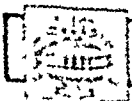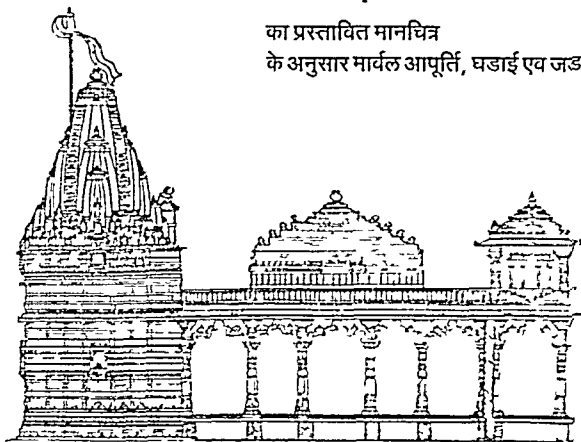
ऋद्धि सिद्धियों का संगम

गणधर इन्द्रभूति गौतम

❑ आचार्य श्री विजय नित्यानन्द सूरिश्वर जी म. सा., कुचेरा

एक आचार्य ने एक सुन्दर रूपक बनाकर बताया है - एक बार अमृत ब्रह्माजी के पास गया और बोला - महाराज, मेरी रक्षा करो, मै बहुत परेशान हूँ ।

ब्रह्माजी आश्चर्य करके बोले - तुम अमृत हो, संसार शांति तृप्ति के लिए तुम्हारी खोज में भटक रहा है और तुम स्वयं कहीं छुपना चाहते हो । यह क्या बात है ?

अमृत बोला - महाराज, देखो, पहले मैं क्षीर-सागर में आराम से पडा रहता था; किसी को मेरा कुछ पता भी नहीं था । जब विष्णु भगवान ने समुद्र मन्थन किया तो मै एक कलश में भरा हुआ उन्हें मिला । देव-दानव मुझ पर झपट पडे । दोनों में बडा भारी संघर्ष हुआ, मुझे पाने के लिए । अन्त में विष्णु भगवान ने चतुरतापूर्वक मुझे देवताओं को सौप दिया और मैं स्वर्ग में चला गया। राक्षसों को मेरे स्थान का पता चल गया । वे मुझे चुराने के लिए स्वर्ग में चक्कर काटते रहे और बार-बार देव-दानवों का युद्ध होता रहा । दोनों की इस छीना-झपटी में मेरी दुर्दशा होती रहती है । देवता मुझे देना नहीं चाहते और दानव कहते हैं- हम अमृत लिये बिना चैन से नहीं बैठेंगे । इस खीचातानी में मै बहुत परेशान हूँ ।''

ब्रह्माजी ने पूछा - तो अब क्या चाहते हो ?

अमृत बोला - महाराज, मुझे छुपने का कोई ऐसा सुरक्षित स्थान बताओ जहॉ से दानव मुझे चुरा न सके तथा कोई परेशान भी नही करे ।

ब्रह्माजी ने कहा- पृथ्वीलोक पर एक महान तपस्वी है । किसी भी देव-दानव मे ऐसी शक्ति नही, जो उनका सामना कर सके या उनका तेज सह सके, तुम जाकर उनकी शरण ले लो । तपस्वी की इच्छा के बिना कोई तुम्हे स्पर्श भी नहीं कर सकेगा ।

अमृत ने कहा- बताइए महाराज, मुझे ऐसे ही तपस्वी की शरण चाहिए ।

ब्रह्माजी ने कहा - इन्द्रभूति गौतम नाम के एक महान तपस्वी है, महान ज्ञानी और अनन्त गुणी है । अनन्तलब्धि निधान है । उनके अंगूठे में जाकर तुम छुप जाओ, वहॉ तुम्हें कोई कष्ट नही होगा ।

कहते हे अमृत ने आकर गणधर गोतम के अंगूठे में निवास कर लिया तव से यह बात प्रसिद्ध हो गयी।
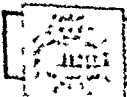
अगुष्टे अमृत बसे लब्धि तणा भडार
श्री गुरु गौतम सुमरिये वाछित फल दातार ॥

गुरु गौतम के अगूठे मे अमृत का निवास था, यह जन-जन का विश्वास है इसलिए उन्हे अमृत पुरुष कहा गया हे। जो उनके अगूठे का स्पर्श कर लेता, उसके रोग-शोक-चिन्ता-भय-कष्ट-दरिद्रता सब दूर हो जाते। हजारो वर्ष वीत जाने के बाद आज भी जनसाधारण का यह विश्वास है कि गुरु गौतम का नाम लेने से सर्व कार्य सिद्ध हो जाते है। भडार भरे रहते हे, विघ्न दूर हो जाते है। लक्ष्मी-सरस्वती की कृपा हो जाती है उस पर।

प्रात काल के समय हजारो भक्त आज भी भक्तिभाव के साथ उनकी वन्दना करते है।

सर्वारिष्ट प्रणाशाय सर्वाभिष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धि निघानाय गौतमस्वामिने नम

सब विघ्नो का नाश करने के लिए सब इच्छित वस्तुओ की प्राप्ति के लिए सर्व लब्धि निधान गुरु गौतम स्वामी को नमस्कार।

गुरु गौतम की वन्दना करते हुए हम भक्तिपूर्वक बोलते हे

गुरु गौतम के नाम मे भी अद्‌भुत शक्ति है। जो भक्तिपूर्वक उनका नाम स्मरण करता हे उसके घर मे ऋद्धि-सिद्धि की कमी नहीं रहती। रोग शोक मिट जाते है।

आचार्यो ने बताया है कि—

यस्याभिधान मुनयोऽपि सर्वे
गृह्णन्ति भिक्षा भ्रमणस्य काले
मिष्टान्न-पानाम्बर पूर्ण काम
स गोतमो यच्छतु वाञ्छित मे ।

जो मुनि गौतम स्वामी का नाम स्मरण करके भिक्षा के लिए जाता है उसे जहॉ लूखी-सूखी भिक्षा मिलने की आशा भी नही होती वहॉ खूब भक्तिपूर्वक मधुर-मिष्टान्न मधुर पेय-वस्त्र आदि की प्राप्ति होती है।

गौतम नाम मे तीन अक्षर हे। आचार्यो ने इनका अर्थ करते हुए बताया हे-

गौ कहिए कामधेनु तरु कल्पवृक्ष जान।
गौ - का अर्थ हे कामधेनु गाय।
तरु - अर्थात् कल्पतरु वृक्ष
म - अर्थात् चिन्तामणि रत्न ।

ससार मे ये तीनो वस्तुऍ दुर्लभ हे और महान प्रभावशाली हे। इनसे भी विशिष्ट प्रभाव गौतम नाम मे है।

जिनप्रभसूरि जी म ने प्राकृत भाषा मे गोतम स्वामी का एक स्तोत्र बनाया है जिसमे कहा गया है-

तुह अग फरिसिय ज फासइ पवणो जलासयाण जल।
त पीऊण मणुस्सा उविति छम्मास मारुग्ग।

हे गौतम प्रभु! आपके शरीर का स्पर्श करके जो पवन बहता है, उस पवन का स्पर्श किसी के शरीर को हो जाये। आपके चरणो का स्पर्श किया हुआ जल जलाशय मे भी मिल जाय और उसे कोई पी ले, तो छह मास का भयकर रागी भी शीघ्र आरोग्य प्राप्त कर लेता है इसका कारण क्या हे ? गौतम स्वामी महान तपस्वी थे। अद्‌भुत ध्यानी थे।

शास्त्र मे भगवान महावीर अपने श्रीमुख से उनकी जीवनचर्या बताते हैं कि दीक्षा ली उस दिन से लगातार जीवन पर्यन्त 42 वर्ष तक बेले-बेले तप करते रहे । आठ प्रहर में दो प्रहर स्वाध्याय और चार प्रहर तक ध्यान करते थे । मन से अत्यन्त पवित्र, कषाय मुक्त और प्रभु भक्ति में अनन्य भाव से समर्पित ! ऐसे महान तप एवं परम योगसाधना के प्रभाव से उन्हें अनेकानेक अगणित लब्धियॉ प्राप्त हो गई थीं। शास्त्र में 28 लब्धियों का वर्णन है तथा उन्ही का विस्तार करके 50 प्रकार की लब्धियॉ भी बताई गई हैं, वे सभी लब्धियॉ गौतम स्वामी को प्राप्त थी। उनके शरीर के पसीने, मल-मूत्र थूक में भी ऐसी शक्ति थी कि वह सब अमृत रसायन का काम करते थे। उनकी वाणी में अमोघ वचन सिद्धि थी। उनके अंगूठे में अमृत का निवास था, जिस वस्तु को स्पर्श कर लेते वह अमृत समान गुणकारी हो जाती थी। पारस का स्पर्श केवल लोहे को सोना बनाता है, किन्तु गौतम का चरण-स्पर्श तो जहर को भी अमृत बना सकता है।

शास्त्र में बताया है कि संसार में तीर्थकर देव अनन्त पुण्यशाली होते है। उनके बाद उनसे कुछ कम किन्तु इन्द्र-चक्रवर्ती-वासुदेव-बलदेव आदि से अधिक पुण्यशाली होते हैं गणधर देव। गणधर पद एक विशिष्ट पुण्योदय का परिणाम है और वह तीर्थकर भगवान के पश्चात् सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। गौतम भगवान के प्रथम गणधर थे। समूचे श्रमण संघ में ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, महान तपस्वी, महान ज्ञानी और अनन्त लब्धि के स्वामी थे।

जन्म परिचय

गणधर गौतम का जन्म ईस्वी पूर्व 607 में भगवान महावीर जन्म से लगभग 8 वर्ष पूर्व मगध देश के गुब्बर ग्राम में हुआ था। उनके पिता वसुभूति मगध के राज पुरोहित थे। बड़े विद्वान और धन-सम्पन्न ब्राह्मण थे। उनकी पत्नी का नाम था पृथ्वी। माता पृथ्वी के तीन पुत्र थे। सबसे बडे इन्द्रभूति, दूसरे अग्निभूति और तीसरे वायुभूति। ऐसा लगता था कि तीनों स्वयं इन्द्रदेव-अग्निदेव और वायुदेव के अवतार ही थे। अत्यन्त मेधावी, तेजस्वी और प्रभावशाली थे। पिता वसुभूति ने तीनों को ही वेद वेदांग आदि चौदह विद्याओं की शिक्षा दिलाई। भारत के महापंडितो में उनका नाम था। दूर-दूर के विद्यार्थी आकर उनके पास अध्ययन करते थे। उनके गुरुकुल में हर समय 500-500 छात्र अध्ययन करते रहते थे।

पावापुरी में आर्य सोमिल नामक एक धनाढ्य ब्राह्मण ने महायज्ञ का आयोजन किया था, जिसमें भारत के दूर-दूर प्रदेशों के दिग्गज विद्वानों को आमंत्रित किया गया। इस यज्ञ के यज्ञाचार्य और प्रमुख सूत्रधार थे महापंडित इन्द्रभूति। इनके साथ अग्निभूति, वायुभूति आदि अन्य 10 महापंडित और भी थे। इधर पावापुरी में यज्ञ का विशाल आयोजन हो रहा है, उसी समय केवलज्ञान प्राप्त कर श्रमण भगवान महावीर पावापुरी में पधारते हैं। महसेन उद्यान में देवताओं ने समवसण की रचना की। अगणित देव आकाश मार्ग से उद्यान की तरफ आ रहे है। हजारों नागरिक भी भगवान की देशना

सुनने समवसरण की ओर नदी पवाह की तरह उमड़ रहे है ।

अपार जनसमूह को और देवताओ को भगवान के समवसण की ओर देखकर इन्द्रभूति गौतम विस्मय मे पड़ जाते है । क्या महावीर मुझसे भी वडे विद्वान और पभावशाली है ? मै यदि अकेले महावीर को जीत लेता हूँ तो सम्पूर्ण भारत वर्ष मे मेरी विजय दुदुभि वज उठेगी । चलो, मै पहले महावीर को ही जीतता हूँ ।

इन्द्रभूति महावीर को वाद-विवाद म जीतने के लिए 500 शिष्यो को साथ लेकर आते है । समवसरण म प्रवेश करने पर जेसे ही वे भगवान महावीर की दिव्य शान्तमूर्ति का दर्शन करते हैं, उनकी विचारधारा बदल जाती है । अहकार समर्पण के लिए उतावला हो जाता है। गौतम महावीर के समक्ष जिज्ञासु बनकर तत्त्व चर्चा करते है और मन का समाधान पाते ही उनका शिष्यत्व ग्रहण कर लेते है ।

इन्द्रभूति गौतम सत्य के प्रवल पक्षधर है । सत्य की प्रबल जिज्ञासा और गुरु के पति अनन्य समर्पण भाव गौतम का अद्भुत है । भगवान महावीर के वे प्रथम शिष्य है । प्रथम गणधर है । महावीर की ज्ञान गगा को ग्रहण करने वाले भगीरथ ह, जिन्होने सर्वप्रथम भगवान महावीर की वाणी को द्वादशागी का रूप प्रदान किया । एक अकेले भगवती सूत्र मे ही गौतम स्वामी के 36 हजार प्रश्नो का समाधान भगवान महावीर द्वारा दिया गया हे । भगवान महावीर के धर्म-शास्त्र रूप नन्दनवन का कल्प वृक्ष है गौतम । गौतम का व्यक्तित्व अनूठा है । मधुरता मृदुलता विनय, विवेक साधना और ज्ञान का ऐसा विचित्र सगम ससार म शायद ही किसी व्यक्तित्व म मिल जैगा गौतम मे है । गौतम का जीवन मोर परव जैसा मनोरम रगो का सगम है । उनके जीवन की एक-एक दुर्लभ विशेषताओ पर आप चिन्तन करग तो हृदय गद्‌गद् हो उठगा । श्रद्धा स अभिभूत हो उठेगा । इतना महान ज्ञानी ऐसा महायोगी और वालक जैसा सरल हृदय । ज्ञान-भक्ति और कर्म का ऐसा अद्‌भुत समन्वय कि तीनो मे ही वे श्रेष्ठ शेल शिखर के समान है । मे उनके व्यक्तित्व की महानता का दर्शान वाले दो चार प्रसगो की चर्चा करूँगा ।

सत्य के सच्चे शोधक

गौतम स्वामी को जय पता चलता है कि आनन्द श्रावक का अवधिज्ञान हुआ है और वह जीवन की अन्तिम आराधना कर रहा है तो गौतम स्वामी आनन्द श्रावक के पास जात है और उससे पूछते है कि - आनन्द ! क्या तुमको इतना विशाल अवधिज्ञान हुआ है ? आनन्द कहता है - हाँ सत्य है मुझ ऐसा अवधिज्ञान पाप्त हुआ है । गौतम चकित होकर कहते है - आनन्द ! श्रावक को इतना विशाल अवधिज्ञान नहीं हो सकता । तुम भूल कर रहे हो इसलिए अपने कथन की आलोयणा करो, प्रायश्चित लो ।

आनन्द पूछता है - भगवन् ! पायश्चित कौन लेता है ? सत्य कथन करने वाला या असत्य का पक्ष लने वाला ?

गौतम सशय मे पड़ जाते है । क्या वास्तव मे ही मै भूल कर रहा हूँ ? वे भगवान महावीर के पास आते है और पूछते हे - भन्ते ! क्या आनन्द

श्रावक का कथन सत्य है ? क्या उसे इतना विशाल अवधिज्ञान हुआ है ।

भगवान कहते हैं- गौतम ! आनन्द श्रावक का कथन सत्य है । तुमने उसके सत्य कथन की अवहेलना की है इसलिए जाओ, तुम उससे क्षमायाचना करो और अपने असत्य आग्रह का प्रायश्चित्त करो ।

गौतम जैसा महान ज्ञानी ! भगवान का ज्येष्ठ शिष्य प्रथम गणधर, एक श्रावक के पास जाकर उसे खमाता है - आनन्द ! तुम्हारा कथन सत्य है मेरी भूल हुई इसलिए मुझे तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

सत्य के प्रति कितनी गहरी आस्था है गौतम के मन में । न ज्ञान का गर्व, न पद का अभिमान ! न ही अपनी ज्येष्ठता का दर्प ! कितना विनय ! कितने सरल हृदय है कि तुरन्त श्रावक के पास जाकर अपनी भूल का पश्चाताप करते हैं। (उपासकदशा सूत्र)

सर्वधर्म आदर भावना

दूसरा प्रसंग देखिए- भगवान महावीर गौतम स्वामी से कहते हैं- गौतम ! तुम आज अपने पूर्व परिचित पूर्व मित्र से मिलोगे ।

गौतम प्रसन्न होकर पूछते हैं- भन्ते ! कौन है वह मेरा पूर्व परिचित पूर्व मित्र !

भगवान कहते है- स्कन्दक परिव्राजक नामक एक सन्यासी है । उसके मन में तत्त्व सम्बन्धी कुछ जिज्ञासाएँ हैं जिनका समाधान पाने वह अभी यहाँ आने वाला है । तब तक स्कन्दक संन्यासी भगवान के समवरण में आ जाता है । गौतम उसे आते देखकर स्वयं उसके सामने जाते है । आदर और सम्मानपूर्वक उसे पुकारते है- सागयं खदंया ! सुसागयं खंदया ! हे स्कन्दक ! भगवान के समवसरण में तुम्हारा स्वागत है सुस्वागत है, आओ ! तुम्हारा आगमन कल्याणकारी हो । (भगवती सूत्र)

एक पर धर्मावलम्बी सन्यासी के प्रति कितनी उदारता, कितना प्रेम और सत्कार भाव हैं गौतम के मन में । जो जितना महान ज्ञानी होता है वह उतना ही विनम्र होता है । जो जितना ऊँचा साधक होता है वह उतना ही सरल और मधुर मन का होता है, यह हम गणधर गौतम के जीवन से सीख सकते है ।

अति मुक्तक राजकुमार जो एक छह सात वर्ष का बालक है । गौतम स्वामी की अंगुली पकडकर अपने घर ले जाता है- मेरे घर पर पधारो ! मेरे यहाँ आहार ग्रहण करो और गौतम स्वामी उस बालक के साथ बालक जैसी बातें करके उसके मन को भी जीत लेते हैं । उसे भगवान के चरणों में लाकर उपस्थित कर देते है। कितनी कोमल और स्नेहिल है उनकी वाणी ! जिससे खिंचा छोटा सा राजकुमार भगवान के चरणों में आता है । (अन्तकृद्दशा सूत्र)

और दूसरी तरफ भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के महान श्रुतज्ञानी केशीकुमार श्रमण । उनके साथ भी गौतम उतनी ही उदारता और गंभीरता से वार्तालाप करते हैं । केशीकुमार के गंभीर रहस्यात्मक प्रश्नों का इतना सुन्दर युक्तियुक्त समाधान देते हैं कि केशीकुमार गदगद हृदय से कह उठते हैं- "हे महाप्रज्ञ ! धन्य हे

आपकी प्रज्ञा, धन्य है आपका शील । बहुत ही सुन्दर है आपकी बोध वाणी । मेरे सब सशय दूर हो गये ।" और वे भगवान महावीर के सघ मे सम्मिलित हो जाते है । इस गगा यमुना सगम के सूत्रधार गौतम है । गौतम समन्वय के सेतु हैं । जिनकी उदारता और विद्वता से प्रभावित होकर वैदिक सन्यासी परिव्राजक, आजीवक, बौद्ध, श्रमण और प्राचीन पार्श्व परम्परा के श्रमण अपने पूर्वाग्रह को छोड़कर भगवान महावीर का शिष्यत्व स्वीकार करते हैं । (उत्तराध्ययन सूत्र)

इस प्रकार हम गौतम स्वामी के अद्भुत ज्ञान गभीर मधुर और साधना से पवित्र व्यक्तित्व को देखते है तो सहज श्रद्धा से उनके प्रति हमारा मस्तक विनत हो जाता है ।

भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात उसी कार्तिक प्रतिपदा को गौतम स्वामी केवलज्ञानी होते है और फिर बारह वर्ष तक ससार का धर्मोपदेश देते हुए अन्त मे राजगृह मे एक मास का अनशन करके मोक्ष प्राप्त करते है । गौतम स्वामी भगवान महावीर से उम्र मे आठ वर्ष ज्येष्ठ थे और भगवान के निर्वाण के 12 वर्ष पश्चात मोक्ष पधारे । इस प्रकार उनका आयुष्य काल 92 वर्ष का माना जाता है ।

गणधर इन्द्रभूति जैसे महान ज्ञानी, महान साधक और अनन्त लब्धि सम्पन्न महायोगी को शत-शत वन्दना ।

☆

अपना अन्त करण पवित्र रखो,
धर्म का समस्त सार इसी मे समाया हुआ है ।

जिस घर मे प्रेम, स्नेह का निवास है
जहाँ धर्म का साम्राज्य है
जहाँ परिवार सम्पूर्णतया सतुष्ट रहता है
उसके सभी मनोरथ सफल होते हैं ।

जो गृहस्थ दूसरे लोगो को कर्त्तव्य पालन मे सहायता देता है
और स्वय भी धार्मिक जीवन व्यतीत करता है
वह ऋषियो से भी अधिक पवित्र है ।

सम्यक् आचरण ही ज्ञान का श्रृंगार है

❑ महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री म., कुचेरा

जैनागमों में बहुत सुन्दर शब्दों की आकृति वाला पद आता है-

''आचार : परमो धर्म'' आचार ही सबसे पहला धर्म है। व्यक्ति कितने भी धर्मशास्त्र पढ लें और श्रवण कर ले, किन्तु यदि उसे जीवन में न उतारे तो उससे कोई लाभ नही होता। वह तो भारभूत ही माना जाता है। गधे की पीठ पर चाहे जितनी मरजी चन्दन की भारी रख दी जाय पर वह उसके लिए बोझ के अलावा और कुछ महत्त्व नही रखता। इसी प्रकार विद्वान अगर ज्ञान को अपने आचरण में न उतारे तो उसकी विद्वत्ता का कोई मूल्य नहीं होता। ''न ज्ञानात्परं चक्षु'' ज्ञान सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ वस्तु हैं। भौतिक पदार्थो के और आध्यात्मिक तत्त्वों के स्वरूप को समझने के लिए ज्ञान के अतिरिक्त दूसरी कोई आंख इतनी शक्तिशाली नहीं है। ज्ञान के अभाव में न भौतिक सुख प्राप्त होता है और न ही आध्यात्मिक साधना होती है। ज्ञान ही वह अद्वितीय शक्ति है जो मन के विकारों को नष्ट करके उसे दोष रहित और पवित्र बनाती है तथा आत्मा को कर्म बन्धनों से मुक्त होने में सहायक बनती है। कहा भी है- ''तवसा क्लिविषं हन्ति, विद्ययाऽमृतमश्नूते''। मनुस्मृति में कहा है कि तप की साधना से पाप नष्ट हो जाते हे और ज्ञान की आराधना करने से ''आत्मा को अनन्तता'' प्राप्त होती हैं।

किन्तु यह कब हो सकता है ? जबकि ज्ञान को केवल मस्तिष्क में ही संचित न करके आचरण में उतारा जाये।

जिस प्रकार रोगी औषधि के उच्चारण मात्र से निरोगी नहीं हो सकता, तोता रटंत स्वाध्याय अर्थात् शास्त्र पठन पाठन से भी मनुष्य को कोई लाभ नहीं होता। ढेर सारे शास्त्र पढकर भी लोग मूर्ख रह जाते हैं, विद्वान केवल वही कहलाता है जो उनके अनुसार आचरण करता है। आज के युग पुरुष महात्मा गांधी ने भी कहा है कि ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिये।

फकीर हजरत मोहम्मद प्रतिदिन मस्जिद में नमाज पढने जाया करते थे। रास्ते में एक बुढिया का घर था जो कि बडी कर्कशा और धर्म से घृणा करने वाली थी। अतः उसने उन्हें परेशान करने की तरकीब सोची। वह यह थी कि हजरत जब उसके घर के सामने से गुजरे तो घर का कचरा इकट्ठा कर उन पर डाल देना। यह क्रम उस बुढिया ने हमेशा का बना लिया। प्रतिदिन हजरत मोहम्मद उधर से निकलते और दुष्ट बुढिया उन पर कचरा डाल देती। किन्तु मोहम्मद साहब ने कभी भी उसके लिए बुढिया को उपालम्भ नही दिया। वे शान्त भाव से कचरा झाडकर मस्जिद् की ओर बढ जाते और ईश्वर से बुढिया को सद्बुद्धि देने की प्रार्थना

करते ।

यह क्रम बहुत दिन तक चलता रहा पर एक दिन मोहम्मद साहब ने देखा कि बुढिया ने उनके उधर से निकलने पर कचरा नही डाला । उन्हे आश्चर्य हुआ कि क्या कारण है ? क्षणभर सडक पर ठहरकर वे बुढिया के घर मे चल गये। अन्दर जाने पर मालुम हुआ कि बुढिया बीमार है । माहम्मद साहब ने नमाज पढने जाना स्थगित कर दिया और वृद्धा की सेवा सुश्रुषा मे लग गये ।

बुढिया कुछ दिन मे ही ठीक हो गई। उसने हजरत मोहम्मद की प्रतिदिन कचरा डालने पर भी विरोध न करने की प्रवृत्ति तथा अपनी बीमारी म की गई सेवा को देखा तो वह उनकी सहनशीलता तथा सवा भावना से इतनी प्रभावित हुई कि उस बुढिया ने अपने जीवन को हजरत मोहम्मद के चरणो मे अर्पित कर दिया ।

इस तरह का दुर्व्यवहार करने वाली बुढिया के जीवन को परिवर्तित करने का कार्य हजरत माहम्मद के आचरण ने किया । मनुष्य ज्ञान के द्वारा किसी के जीवन को बदलने म सफल नही होता स्वय के आचरण के द्वारा ही किसी के जीवन को बदल सकता है ।

गीता का कथन है कि- श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है उसके अनुसार अन्य पुरुष भी आचरण करते है ।

आचार ओर विचार एक दूसर स घनिष्ट सबध ही नही रखते अपितु एक दूसरे के पूरक भी ह । जब तक आचार को विचार का सहयोग नहीं मिलता अथवा विचार आचार रूप मे परिणित नही होते तब तक जीवन का यथार्थ विकास नही हो सकता । जिस ज्ञान म आचार और विचार दोनो के अकुर होते हे वही ज्ञान मनुष्य का वास्तविक विकास कर सकता हे ।

आचरण रहित विचार कितने भी अच्छे क्यो न हो उन्हे खोटे मोती की तरह समझना चाहिए ।"

मनुष्य वैसा ही बनता है जैसे उनके विचार होते है। निश्चयात्मक विचारो से निर्माण शक्ति का उत्तरोत्तर विकास होता है ।

महान विचारक के शब्द है कि यदि विचार रूपी चिराग बुझ जाये तो आचार अन्धा होता है तथा आचरण मे नहीं उतारा जाय तो विचार पगु बनकर रह जाता है । इसलिए सर्वज्ञ आत्माओ के कथनानुसार सम्यग् ज्ञान का सार ही सम्यक् आचरण है ।

महामत्री पथड शाह के जीवन का प्रसग आता है कि माण्डवगढ के चतुर्थव्रत-धारी श्रावक ने जितने भी चर्तुथ व्रतधारी श्रावक थे उनका पूजा के वस्त्र से बहुमान किया । उस व्रतधारी श्रावक ने महामत्री पेथड के लिए भी भेटना के रूप पूजा के वस्त्र भेजे । जब महामत्री पेथड शाह ने भेटना लेकर आने वाले महानुभाव से पूछा कि भाई, यह भेटना किस बात की है ? तब आया हुआ महानुभाव कहता है कि इस तरह माण्डवगढ के अन्दर चतुर्थ व्रतधारी श्रावको को प्रभावना के रूप मे भेटना दी गई है । अत आप इस भेटना को स्वीकार करे । पेथड शाह विचारो मे खो गये। अरे मै इस भेटना को नही स्वीकारता हू तो परमात्मा की आज्ञा का उल्लघन करता हू और लेता हू तो ऐसा मेरा आचरण नहीं ।

सच बात है अपना विचार सम्यक् तब ही बनता है जब सम्यक् आचरण हो ।

महामंत्री पेथड शाह एकदम उदास हो गये । 32 वर्ष की आयु है । पत्नी को क्या कहूं ? धर्म परायणा नारी अपने जीवन को धर्माचरण से ही जीती हैं । महामंत्री पेथड शाह के उदास चेहरे को देख कर पेथड शाह की पत्नी कहती है स्वामिनाथ आज आपका चेहरा इतना उदास क्यों है ? ऐसी क्या बात है ? पत्नी के आग्रह को देखकर पेथड शाह कहता है प्रिय, मेरे सामने इस तरह की समस्या है । मै उस साधार्मिक भाई की भावना का कैसे आदर करूं ? क्योंकि चतुर्थव्रत का आचरण मेरे जीवन में नहीं है ? पेथड शाह की पत्नी बोल पडती है स्वामिनाथ ! यदि आपका मन तैयार है तो मेरी ओर से सहर्ष सहमति है । आप जरा भी न सोचें । उसी समय पेथड शाह ने अपनी पत्नि के साथ चतुर्थ व्रत धारण कर पूजा के वस्त्र की अमूल्य भेटना को स्वीकार कर जिनाज्ञा का पालन किया । सम्यक् आचरण ही इस आत्मा को सिद्धत्व दिलाने वाला है ।

हम आत्म कल्याण की शुभभावना को लेकर अपने जीवन में सम्यक् ज्ञान को सम्यक् आचरण के साथ अपनाने का प्रयास करें ।

किसी के मुक्तक की भाषा में शब्द है—

है गर्व तुम्हें जो अपनी प्रथम सफेदी का
वह मिथ्या है, छल है घमंड है चेहरे का ।
रंगों का राजा तो एक भीतर वाला,
बाकी रंग तो द्वारपाल है पहरे का ।

अतः यह अमूल्य मानव जीवन पशुत्व की भांति न जीकर सद्विचार और सद्प्रवृत्ति से देवत्व तुल्य बनाकर इस मानव जीवन में महामानत्व को प्राप्त करने का प्रयत्न करें ।

इसी मंगल भावना के साथ

☆

जब तुम किसी दुर्बल को सताने के लिए उद्यत होते हो
तब सोचो कि अपने से बलवान मनुष्य के आगे जब
भय से कांपोगे, तब तुम्हें कैसा लगेगा ।

बराबर तुली हुई उस तराजू की डंडी को देखो वह सीधी है
और दोनों ओर एक-सी ही है
बुद्धिमानों का गौरव इसी में है
कि वे इसी के समान बनें ।

आध्यात्मिक भजन

☐ साध्वी श्री प्रशातगिराश्रीजी म सा , इन्दौर

तर्ज – मालकोश

मै सिद्ध स्वरूपी आत्मा

जन्म नहीं, नहीं मृत्यु मेरी, अमर अजन्मा आत्मा

देह मेरी नहीं, नहीं मै उसका, अरूपी अदेही आत्मा

देह छता पर देह से भिन्न हू,

अतिन्द्रिय ज्ञानी आत्मा

वर्ण गध रस स्पर्श ना मुझ मे

शुद्ध निरजन आत्मा

पुद्गली की किरिया पुद्गल मे

मै ज्ञायक बस आत्मा

द्रव्य भाव करम नहीं मेरे,

सहज स्वरूपी आत्मा

शुभाशुभ उपयोग क्षणिक है,

शुद्धोपयोगी स्थिर आत्मा

ऐसे अलौकिक आत्म स्वरूप को,

अनुभवते परमात्मा

सद्गुरु कृपा किरण से पावे, 'पद्मरेखा' निज आत्मा

卐 卐

मन की यही मुरादे कि, बस आत्मज्ञान पाऊँ

उर की यही उम्मीदे कि, बस आत्म दर्शन पाऊँ ।

चित की यही है चाह, बस आत्मिक सुख पाऊँ

अन्तर की यही आरजू, बस आत्मवीर्य पाऊँ ॥

मन की शक्ति

❒ सा. श्री प्रफुल्ल प्रभा श्री जी म., जयपुर

विराट विश्व के इस प्रांगण में अनंतानन्त पदार्थ है जो रूप रंग आकृति प्रकृति, गुण एवं दोषों में एक दूसरे से सर्वथा भिन्न रहस्यमय प्रतीत होते हैं किन्तु मानव अपने बुद्धिबल से इन समस्त पदार्थो के गूढ से गूढ रहस्यों का उद्घाटन कर सकता हैं। सिर्फ मन ही उसके लिए एक ऐसी अद्भुत पहेली है जिसको वह अथक प्रयत्न करने पर भी नही सुलझा सकता तथा प्रतिक्षण अप्रंत्याशित रूप से उदित होने वाली असंख्य निगूढ वृत्तियों को नहीं जान सकता।

यह मन एक क्षण पहले लावण्यवती ललनाओं के साथ विहार करना चाहता है तो अगले क्षण में नेत्रहारी नृत्य देखने की आकांक्षा करने लगता हैं। कभी वह सुरभित पुष्पों की मधुर सुगन्ध से घ्राणेन्द्रिय को तृप्त करना चाहता है और कभी श्रुतप्रिय संगीत की स्वर लहरी से अपने आपको खो देना चाहता है। किसी अप्रिय प्रसंग के उपस्थित होने पर शोक सागर में डूब जाता है और प्रिय वस्तु का संयोग होते ही हर्षातिरेक से पागल हो जाता है।

इस प्रकार एक नहीं अनेक भावनाएं उसके मन में नवीन - नवीन रूप धारण करके आती है और मन अपने स्वभावानुसार वैसा ही रूप धारण कर लेता है।
तभी तो किसी कवि ने कहा है—

जो मन नारी की ओर निहारता,
तो मन होत है ताही को रूपा।
जो मन काहू से क्रोध करे तब,
क्रोध मयी होए ताहि को रूपा।
जो मन माया ही माया रटे नित,
बूढत है वह माया के कूंपा।
सुन्दर जो मन होत है ब्रह्म विचारत,
तो मन होत है ब्रह्म सरूपा।

मन की कितनी चंचलता और प्रबलता है। बेचारा ये मानव मन इतना असहाय है कि वह कभी मन की चाह दाह को उपशान्त नहीं कर पाता। भाग्यवान् अगर किसी एक चाह की पूर्ति कर भी लेता है तो अन्य अनेक इच्छाएँ उसके समक्ष उपस्थित होती हैं और उसे विकल किये रहती है। परिणाम यह होता है कि मानव का जीवन आकुलताओं से भर जाता है तथा असंतुष्टि की ज्वालाएं उसके हृदय को दग्ध किये रहती है।

मानव अनादिकाल से दुख का अनुभव करता आ रहा है किन्तु इसकी भ्रान्त दृष्टि इसका प्रतिकार नहीं सोच पाती।

जीवन को अत्यन्त बारीकी से देखने वाले और उसकी गति-वृत्तियों का गहराई से अनुशीलन करने वाले पुरुष पुंगव ऐसे होते है जो मन की इस पहेली को सुलझाये बिना नहीं छोडते तथा उसके रहस्यों को जाने बिना नहीं रहते। उसका दृढ विश्वास होता है कि प्रत्येक समस्या अपने साथ समस्या का समाधान लेकर जन्मती है। प्रत्येक पहेली अपने सुलझने की क्षमता रखती हैं।

यह सम्भव हे कि मन की निगूढ पहेली को

सुलझाने मे समय लगे, उसके लिए अनिश्चित काल तक भी तपना और खपना पडे ।

ऐसे मनीषियो ने ही आत्मा के निराकार निर्विकार निष्कलुश निरजन और शुद्ध चेतनमय स्वरूप को समझा तथा उसके अनतज्ञान, अनतदर्शन और अनतसुखमय स्वरूप को पहचाना । उन्होने भली भाति जान लिया कि आत्मा अपने मूल रूप मे निर्मल एव कलुपरहित है। इसे मलिन बनाने वाले कारण हैं- क्रोध, मान माया, लोभ राग ओर द्वेष । मन के इन विकारो से दूषित होने के कारण ही आत्मा मे वासनारूप दुर्गन्ध उत्पन्न होती है । परिणामस्वरूप निबिड कर्मो का बध हो जाता है और जन्म जन्मातरो मे उसे नाना प्रकार की यातनाए सहनी पडती है। परम परमात्मा महावीर का कथन है—

जह रागेण कडाण कम्माण पावगो फलविवागो ।
जह य परिहीण कम्मा, सिद्धा सिद्धालय भुवेन्ति ॥

यह ससारी जीव राग द्वेष रूप विकारो के कारण उपार्जित कर्मो का दुष्फल भोगता है और जब समस्त कर्मो का क्षय कर डालता है तो सिद्ध होकर सिद्धि क्षेत्र को प्राप्त करता है।

जिस समय आत्मा पर रही हुई मलिनता दूर होती है तो उसे मुक्त अवस्था की प्राप्ति हो जाती है । आत्म शुद्धि के लिए विषय विकारो को नष्ट करना तथा भावनाओ को शुद्ध रखना आवश्यक है । शुभ सकल्प के अभाव मे सच्चा सुख कभी प्राप्त नहीं हो सकता ।
उर्दू के एक कवि ने कहा है-

जब तक इसी सागर से तू मखमूर हे ।
जौक से जामे वका से दूर है ॥

जब तक तू सासारिक पदार्थो के मद मे उन्मत्त है तब तक परम शान्ति के आनद से दूर ही रहेगा ।

मूग के एक छोटे से बीज से पौधा अकुरित होता हे । पोधे मे सेकडा फलिया लगती है ओर एक-एक फली मे अनेकानक दाने पड जाते है । इसी प्रकार हमारी एक छोटी सी अशुभ या शुभ भावना अनेका अशुभ या शुभफल उत्पन्न करती ह । हमारे शास्त्र बताते है कि जीव एक समय मे ही अनन्तानन्त कर्म परमाणुओ का वन्ध कर लेता है ।

भावनाओ मे अद्‌भुत शक्ति होती हे अर्थात् वह कल्पातीत हे । मनुष्य के मन की भावनाए अथवा विचार ही उसके जीवन का निर्माण करती हे । तात्पर्य है कि हमारी समस्त प्रवृत्तियो का आधार हमारे मन के विचार ही हे ।

विश्व मे अनेक प्रकार की शक्तिया विद्यमान हे । एक विद्युत की शक्ति है जो महाकाय पर्वतो का खण्ड-खण्ड कर देती है । दूसरी अणुशक्ति हे जो विद्युत शक्ति से भी प्रबल होती है क्योकि वह विद्युत से अधिक सुक्ष्म परन्तु अधिक शक्तिशाली होती है ।

जो वस्तु जितनी अधिक सुक्ष्म होती है, वह उतनी ही अधिक शक्तिशालिनी होती हे । पृथ्वी की अपेक्षा जल जल की अपेक्षा वायु, वायु की अपेक्षा विद्युत और विद्युत की अपेक्षा अणु अधिक सुक्ष्म और बलवान होता है ।

ये सारी शक्तिया सुक्ष्म या सुक्ष्मतर क्यो न हो, है तो भोतिक ही । भौतिक पदार्थो मे स्वभावत स्थूलता के अश होते हे किन्तु विचार भौतिक पदार्थ नही है, इसलिए इसमे स्वभावत सुक्ष्मता होती हे । अत विचार शक्ति सुक्ष्मता के कारण अधिक शक्तिशालिनी है । स्वामी

विवेकानन्द ने एक स्थान पर लिखा है-

यदि कोई मनुष्य गुफा में रहे और वहीं पर उच्च विचार करता हुआ मर जाय तो कुछ समय पश्चात वे विचार गुफा की दीवारें फाडकर बाहर निकलेंगे और सब जगह छा जायेगे तथा अन्त में सारे मानव समाज को प्रभावित कर देंगे। विचारों में इतनी अद्‌भुत शक्ति है-

प्रसन्न चन्द्र राजर्षि विचारों की शक्ति से कितना नीचे चला गया वही पलभर में इसी विचार शक्ति से कितना ऊंचा पहुँच गया। मगध सम्राट श्रेणिक को जब पता चला कि परमात्मा महावीर मेरी नगरी के उद्यान में पधारे हैं तो वह भाव विभोर होकर अपने राजपरिवार सहित परमात्मा के दर्शन वन्दन को जाता है। जाते समय रास्ते के अन्दर एक मुनि को ज्येष्ठ मास की ग्रीष्म ऋतु के मध्याह्न समय में सूर्य के सामने दृष्टि लगाकर ध्यानावस्था में खडे देखा। श्रेणिक का मन अहोभाव से भर गया। परमात्मा महावीर के पास पहुँचकर दर्शन वन्दन करके परमात्मा को विनय भरे शब्दों से पूछने लगा कि भगवन्! अभी रास्ते में आते समय इस तरह की उत्कृष्ट ध्यानावस्था में खडे मुनि को देखा। प्रभु; मैं जानना चाहता हूं कि मान लो इस समय मुनि का आयुष्य पूर्ण हो जाय तो यह मुनि मरकर कहां जायेगा? परमात्मा महावीर ने कहा सातवीं नरक में! यह सुन श्रेणिक कांप उठा। प्रभु इतनी उत्कृष्ट साधना करने वाला मुनि और नरक में जायेगा? इतनी ही देर में देव दुदुंभी बजने लगी, देवताओं के द्वारा पंच दिव्य प्रकट हुये। श्रेणिक पूछता है प्रभु किसको केवल ज्ञान, केवल दर्शन की प्राप्ति हुई? परमात्मा महावीर कहते हैं - उसी मुनि को। श्रेणिक आश्चर्य में पड गया अभी तो प्रभु आपने कहा था कि सातवीं नरक में जायेगा और अभी अभी उसे केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई। ये कैसे? सर्वज्ञ - सर्वदर्शी परमात्मा महावीर कहते हैं कि अरे श्रणिक! जब मैंने कहा था उस समय मुनि की विचारधारा इतनी अशुभ चल रही थी कि उसने सातवीं नरक तक के पहुँचने की तैयारी कर ली थी, परन्तु दूसरे पल जैसे ही उसके विचारों ने पलटा खाया, अशुभ से शुभ धारा का चिन्तन प्रवाहित हुआ और उस शुद्ध भावना में इतना आगे बढ गया कि इस मुनि ने अपने सारे के सारे घनघाती कर्मो को छिन्न भिन्न कर केवल ज्ञान, केवल दर्शन को प्राप्त कर लिया। अर्थात् अरें श्रेणिक यह सब भावना की शक्ति का प्रभाव है, यह विचार शक्ति का चमत्कार है।

लेकिन आज का मानव विचारों की इस शक्ति का अनुभव नहीं कर रहा है। इसका कारण है सूक्ष्म वस्तु को जानने के लिए सुक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता होती है। किन्तु सांसारिक भोग-पदार्थो मे रत रहने के कारण आधुनिक युग में मनुष्य की बुद्धि स्थूल बन गई है अतः स्थूल वृद्धि विचार शक्ति को तोल ही नहीं पाती।

हमारे ऋषि मुनियों ने भौतिक चिन्तन से ऊपर उठकर आध्यात्मिक विचारणा की। इसी से उन्हें दिव्य ज्ञान की उपलब्धि हुई।

अतः इस तरह की शुभ चिन्तन धारा में बहकर प्रत्येक मानव आत्मिक आनन्द का आस्वादन करें, अपने शुभ विचार से सुन्दर जीवन का निर्माण करें।

मुक्तक– *ध्येय पाने को स्वयं पैर बढाना होगा।*
पथ के पत्थर को स्वयं दूर हटाना होगा।
दूसरा कौन तेरे प्रश्न का उत्तर देगा?
अपने ही मन का दीप तुझे जलाना होगा।

जय गुरु वल्लभ
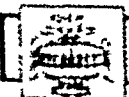
मानव जीवन का सार- धर्माचरण है

□ सा श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म सा जयपुर

अनत उपकारी तीर्थकर परमात्मा ने जीवन को मगलमय बनाने के लिए प्राणीमात्र को धर्म का उपदेश दिया ।

रोगेहि सोगेहि न जाव देह
पीडिज्जए वाहि सहस्सगेह ।
तावुज्जया धम्मपहे रमेह
युहा मुहा मा दियेह गमेह ॥

परमात्मा ने जिनवाणी के द्वारा भव्यात्माओ को समझाते हुये कहा । हजारो व्याधियो का घर यह शरीर जब तक रोग और शोक से पीडित नहीं हुआ हो तभी तक उद्यत होकर धर्ममार्ग मे विचरण कर लो । व्यर्थ ही दिनो को न खोओ । यह परमात्मा का सकेत है कि प्रमत्त होकर हमे सतत धर्माचरण करने का है क्योकि ज्ञानी के वचन है यदि हमारी धन सपत्ति खो जाये तो उस धन सम्पत्ति को पुरुपार्थ के द्वारा पुन प्राप्त किया जा सकता है यदि हमारा स्वास्थ्य अस्वस्थता क कारण नष्ट हो गया है तो उस नष्ट हुये स्वास्थ्य को डाक्टर वैद्य की सलाह से उपचार के द्वारा पुन स्वस्थता दी जा सकती है परन्तु जा हमारे जीवन का अमूल्य समय प्रमाद म होकर खो दिया है, समय को नष्ट कर दिया है तो वह खोया हुआ समय लाख प्रयास करने के वाद भी पुन प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

वहते हुये पानी को पाल बाधकर रोका जा सकता है लेकिन बहते हुये समय को किसी भी हालत मे रोका नहीं जा सकता है ।

उत्तराध्ययन सूत्र मे इसी तथ्य का समर्थन किया गया है—

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडीनियत्तइ ।
धम्म च कुणमाणस्स सफला जन्ति राईओ ॥

जो जो रात्रिया बीत गई हे वे जीवन मे दुबारा लौटकर नहीं आती परन्तु जो व्यक्ति धर्माचरण करता है उसकी वे रात्रिया सफल हो जाती हे । अत मनुष्य जीवन की वास्तविक सफलता शुद्ध धर्माचरण से मानी जाती है। जिस मानव जीवन के अन्दर धर्माचरण नही आया ज्ञानी पुरुष उसके जीवन का प्रारम्भ नहीं मानते।

एक धनवान सेठ का घर था । सेठ की पुत्रवधु रसोईघर मे रसोई बना रही थी । सेठ अपने दीवान खाने मे बैठा आय व्यय का हिसाब किताब कर रहा था । तभी एक यौवनावस्था के मुनि धर्मलाभ देते हुये आहार के लिए आये। सेठ की पुत्रवधु धर्मिष्ठ और बुद्धिमती थी । उसने यौवनवय मे विरक्त मुनि को देखकर पूछा मुनिवर इतने सवेरे कैसे ?

मुनिवर- बहन काल को किसी ने नहीं जाना। तुम्हारे घर का क्या आचार विचार है ?

पुत्रवधू - महाराज । हमारे यहा बासी

भोजन करते हैं ?

मुनि- अच्छा बहन बताओ, तुम्हारा पति कितने साल का है ? पुत्रवधू कहती है - मुनिवर मेरे पति पांच साल के हैं । मुनि- तो अच्छा बहन तुम कितने साल की हो ? पुत्रवधू- मैं बारह साल की हूं । तेरी सासू ? मेरी सासू छ महीने की । और ससुर जी ? मुनि भगवन् मेरे ससुरजी का अभी तक जन्म भी नहीं हुआ ।

यह सब वार्तालाप सेठजी कान लगाकर सुन रहे थे। उसे ये सारी बातें बडी अजीब लगी। मुनि तो गोचरी लेकर चले गये । पीछे से श्वसुरजी एकदम गुस्से में आकर कहने लगा । बहु मैंने तुम्हारी सब बातें सुनी हैं लेकिन एक भी बात मुझे अच्छी नहीं लगी । बताओ तुम इतनी ऊटपटांग बातें क्यों कर रही थी ? मैं नहीं जन्मा, तेरी सासु छ महीने की, तेरा पति पांच साल का, बता तू फिर कहां से आ गई ?

पुत्रवधू बडी समझदार थी । उसने समझा ससुरजी से बहस करने से क्या मतलब ? बहु ने ससुरजी से कहा- आप उपाश्रय में पधारकर उनसे और उनके गुरुदेव से सब समाधान कर लेना ।

सेठ जी सीधे उपाश्रय में गये और वहां आचार्य श्री से शिकायत के शब्दों में कहने लगे- गुरुदेव, मेरे यहां आपके एक युवक शिष्य आये थे, मेरी पुत्रवधू के साथ वे ऊटपटांग बातें कर गये । भला साधु को ऐसी बातें करने का क्या मतलव ? आचार्य श्री ने उसी समय उस युवक साधु को बुलाकर कहा इन सेठ जी का समाधान करो । यह क्या कहते है ? युवक मुनि ने कहा- सेठ जी आपको क्या शंकाए हैं ?

सेठ- मुनि जी आज आप मेरे यहां गोचरी के लिए पधारे थे । उस समय मेरी पुत्रवधू के साथ आपकी जो बाते हुई वे मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगी । आपने बेमतलब की बातें क्यों की, मुझे समझाइये ।

युवक साधु - सेठ जी ! आप जरा ध्यैर्य पूर्वक सुनो। आपकी पुत्रवधू ने मेरे से पूछा इतनी सवेरे क्यों ? इसका मतलब आपने इतनी जल्दी युवानी में दीक्षा क्यों ली ? तो मैंने उत्तर में कहा कि काल को किसने जाना। यह मेरे जीवन के साथ था । इसी कारण मैंने उत्तर दिया कि इस जीवन का क्या पता कब कालराज आकर खडा हो जावे । इसीलिए मैंने यौवनवय में ही दीक्षा ले ली ।

फिर मैंने भी उनसे पूछा तुम्हारे घर में धर्माचरण का क्या हाल हैं ? उस पर तुम्हारी पुत्रवधू ने कहा हमारे यहा बासी खाते हैं । इसका खाने से मतलब नही था लेकिन धर्म से था । इस जन्म में तो कुछ किया नहीं लेकिन यह सब सुख सामग्री पूर्वकृत पुण्य की पूंजी हैं । उसी का उपभोग कर रहे हैं । नये धर्म का आचरण तो करते नही हैं । इसका मतलब बासी खाना है । सेठजी कहते हैं कि अब इसका जवाब दीजिये कि मेरी पुत्रवधू ने आपसे कहा मैं बारह साल की मेरा पति पॉच साल का सासुजी छः महीने की श्वसुरजी जन्में ही नही ।

मुनि भगवन्त कहते हैं- सेठजी ! इसके पीछे भी रहस्य हैं । आपकी पुत्रवधू ने जो उम्र की गिनती बताई है तो उसने विल्कुल सच ही कहा है, वैसे उम्र का कोई मतलव ही नहीं क्योंकि हमारे जीवन के दिन की गिनती उसी
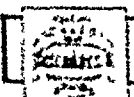
दिन से गिनी जाती है जब धर्माचरण करना शुरू करते है। धर्मविहीन जीवन की कोई कीमत नहीं हाती।

नीति ग्रथ पचतत्र मे धर्म विहीन जीवन के विषय मे कहा है-

यस्य धर्म विहीननानि विनान्यान्ति यान्ति च।
स लोहकारभस्त्रेव, श्वसन्नपि न जीवन्ति ॥

जिस व्यक्ति के दिन धर्म से शून्य होते है वह लोहार की धौकनी की भाति श्वास लेता है पर जीता नहीं।

सच मे धर्म के विना मनुष्य श्वास नहीं ले सकता। मुनि ने कहा सेठजी। वास्तविक आयु का प्रारम्भ तो धर्माचरण करते है तभी से होता है।

आपकी पुत्रवधू आठ साल की थी तब से धर्म ध्यान करने लगी, आपके पुत्र को पाच साल हो गये और आपकी धर्मपत्नी छ महीने से धर्म ध्यान करने लगी। सेठजी को अपने जीवन की निरर्थकता का अनुभव होने लगा। अपनी भूल का ज्ञान हुआ। सेठजी कहने लगे। मुनिजी मैं अब समझ गया हू। जिस तरह निस्तेज हीरे की कोई कीमत नहीं होती है वैसे ही धर्म विहीन जीवन की भी कोई कीमत नहीं। मेने अपन जीवन के इतने साल ऐसे ही गवा दिये। कहावत है - 'चिडिया चुग गई खेत अब पछतावत होत क्या ? पहले तो ध्यान रखा नही उसके बाद पछतावा करने से क्या होता है। 'खण जाणइ पडिये'' जा क्षणो को जानता है, समय की कीमत करनी जिसे आती है वही सच्चा पडित होता है। हम अपने जीवन के अमूल्य क्षणा को कल के आधार पर नही छोडकर अपने जीवन के साथ जोडने का प्रयास करे तभी हमारा यह मनुष्य जीवन सफल बन पायेगा।

इसी शुभेच्छा के साथ

☆

दया से लबालब भरा हुआ हृदय ही
ससार मे सबसे बडी सम्पत्ति है।

प्रत्युपकार मिलने की चाह के बिना जो भलाई की जाती है
वह सागर से भी अधिक बडी होती है।

सदाचार सुख सम्पत्ति का बीज बोता है परन्तु
दुष्ट प्रवृत्ति असीम आपत्तियो की जननी है।

अष्ट प्रातिहार्य

❒ सा. श्री शुभोदया श्री जी म. सा., जयपुर

अरि = शत्रु और हन्त = हणनेवालेः नाश करने वाले। जिसने शत्रुओ का नाश किया है वो। क्या ''सविजीव करु शासन रसिक'' की उत्तम भावना वाली आत्मा हिसा करती है ? नाश करना याने मारदेना, खत्म कर देना। किसका नाश ? किसको मारना ? यहाँ नाश करना या मारना शब्द से कोई व्यक्ति का नाश या मारा है यों नहीं समझना ! अरिहंत परमात्मा ने नाश किया है मारा है, खत्म कर दिया है। किसको ! आतर शत्रुओ को। कौनसे आतंर शत्रु ? राग और द्वेष। जिसने राग और द्वेषरूपी आतंर शत्रुओं का नाश किया है वह हैं अरिहंत।

जिसने घातिकर्मो का नाश करके अरिहंत पद प्राप्त किया है ऐसे अरिहंत के वारह गुण हैं। कौनसे बारह गुण ? आठ प्रातिहार्य और चार अतिशय। इस प्रकार के बारह गुण जिनमें है वह है अरिहंत। प्रातिहार्य यानि क्या ? अंगरक्षक, बोडिगार्ड, जो सदैव निरन्तर परमात्मा के साथ ही रहते हैं वो है प्रातिहार्य। जिनेश्वर देव के सेवक बनकर देवता प्रभु का प्रभाव बढाते है ऐसे आठ प्रातिहार्य हैं।

क्या बताऊँ मैं आपको, प्रभु की ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि अपार एवं अद्‌भुत है। एक करोड देवता कम-से-कम सदैव प्रभु की सेवा में उपस्थित रहे है किन्तु उनमें अष्टप्रातिहार्य की सम्पदा तो और अद्‌भुत है वह मुझे आपको दिखाना है।

प्रथम प्रातिहार्य - अशोक वृक्ष

समवसरण के तीसरे गढ में यह अशोक वृक्ष रहता है जो कि जिनेश्वर देव के देह से बारह गुना ऊँचा एवं सम्पूर्ण समवसरण मे छाया करने जितना चौडा होता है। इसमें चारों ओर पुष्प छत्र, ध्वजा, पताका एव तोरण से युक्त इस अशोक वृक्ष के नीचे भगवान का सिहासन रहता है। यह वृक्ष देवाधिष्ष्ठित है। पूज्य पदम विजय जी महाराज ने इस प्रातिहार्य की विशेषता दिखाते हुए कहा- प्रभु का सानिध्य तो शोक को दूर करता ही है परन्तु प्रभु के सानिध्य में रहने वाला यह अशोक वृक्ष भी प्राणियों के शोक को दूर करता है।

'प्रभुजी ताहरा वृक्ष अशोक थी
शोक दूरे गयो रे लोल'

दूसरा प्रातिहार्य है- सूर पुष्प वृष्टि-

जहाँ भी जिनेश्वर देव देशना देते हैं वहाँ समवसरण में देवता जल-पानी में और स्थल में याने पृथ्वी के ऊपर उत्पन्न हुए पंचवर्णी पुष्पों की वृष्टि करते है। भाग्यशालियो ! आश्चर्य की बात तो यह है कि देवता समवसरण में पुष्प वृष्टि करते हैं तो घुटने तक फूलों का जमाव हो जाता है। उन फूलों की वर्षा इतने सुनियोजित ढंग से होती है कि

उनके दीठ नीचे रहते है एव पुष्प पखुडिया ऊपर रहते है। इन पुष्पो पर से ही चलकर सभी को गुजरना होता है, किन्तु अरिहत प्रभु का यह अतिशय प्रभाव, चमत्कार है कि फूलो के जीवो को लेशमात्र किलामणा याने दु ख नहीं होता है ।

तीसरा प्रातिहार्य- दिव्य ध्वनि

दिव्य ध्वनि एक प्रकार का वाद्य यत्र है। पुण्यात्मा और इसे समवसरण मे भगवान तब देशना देते हे जब देवता बजाते हे । वैसे भगवान मालकोश राग मे देशना देते है और वह देशना की राग स्वय ही सुरम्य एव कर्णप्रिय होती है परन्तु जब मालकोश राग आलाप लेती है तब देवता दिव्य ध्वनि निकाल कर परमात्मा की वाणी को ओर भी सुमधुर बनाते है । भाग्यवान्, भगवान की वाणी एव दिव्य ध्वनि को जो भी सुनता है उसको मिली कर्णेन्द्रिय सफल समझो ।

चौथा प्रातिहार्य- चामर द्वय

जब जिनेश्वर भगवत समवसरण मे बारह पर्षदा मे देशना देते है तब उनके आसपास बारह जोडी चामर देवता ढुलाते है, बिझते है । वे चामर मोगरे के पुष्प की तरह श्वेत मुलायम एव सुवर्ण की मुठ पर रत्न जडित होते है । पुण्यात्मा, वे चामर ससार के प्राणी मात्र को यह उपदेश देते है कि जो हमारी तरह जिनेश्वर देव को नमस्कार करेगा वह उर्ध्वगति को प्राप्त होगा । पदम विजयजी म सा के स्तवन की ये कडियॉ है- 'जे नमे अम परे ते भवि उर्ध्वगति लहे रे लोल'।

पाँचवा प्रातिहार्य- सिहासन

परमात्मा के समवसरण के तीसरे गढ मे अशोक वृक्ष के नीचे देवो द्वारा निर्मित यह सुवर्ण सिहासन हे जिसके ऊपर उत्तम जाति के रत्न जडे हुए रहते है । इसी सिहासन पर जिनेश्वर देव आरुढ होकर देशना देते हे । इस रत्न जड़ित सिहासन की शोभा अद्भुत होती है जिसे देख ससार के प्राणी मत्रमुग्ध हो जाते है ।

छट्ठा प्रातिहार्य- भामण्डल

जिनेश्वर भगवत का रुप, तेज एव सौन्दर्य इतना अधिक होता है कि ससारी आत्मा कोई भी प्रभु के सामने देख नहीं सकता । अत देवता प्रभु को मुखारविन्द के पीछे सूर्य के तेज प्रकाश से बारह गुना अधिक तेजवाला भामण्डल निर्मित करते है, रचते ह। उस भामण्डल मे जिनेश्वर देव के मुखारविन्द का तेज सक्रमित होकर अधिक प्रतिभा सम्पन्न लगता है ।

सातवा प्रातिहार्य- दुन्दुभि

दुन्दुभि एक प्रकार का वाजिन्त्र हे और इसे देवता बजाते है । जब भी जिनेश्वर भगवान देशना देते है समवसरण मे पधारते है या विहार करते है तब यह देव दुन्दुभि बजाकर देवता उद्घोषणा करते हे- हे नगरवासियो । धर्मरूपी सार्थवाह तीर्थंकर भगवान मोक्ष का सार्थ लेकर तुम्हारे नगर मे पधारे है जिन्हे मोक्षनगरी मे जाना हो वह धर्मसार्थवाह की शरण स्वीकार करे । इस दुन्दुभि के नाद से गुजायमान गगन मण्डल के सुमधुर वातावरण

से लोग इसे सुनने आते है एवं उद्घोषणा सुनकर प्रभु के दर्शन एवं वाणी श्रवण का अमूल्य लाभ प्राप्त करके अपने जीवन और जन्म को पावन करते हैं ।

आठवां एवं चरम प्रातिहार्य- छत्र त्रय

देवाधिदेव जिनेश्वर भगवन्त तीन लोक के नाथ है, ये तीर्थकर परमात्मा जिस अशोक वृक्ष के नीचे सिंहासन पर बिराजमान होते है उसके ऊपर अशोक वृक्ष की डाली पर तीन उज्ज्वल छत्रों की रचना देवता करते हैं । ये छत्र परमात्मा के उपर छाया करते हैं। सूर्य की प्रचंड गर्मी को रोकने की भी इनकी क्षमता है। ये तीनों छत्र जिनेश्वर भगवान के त्रिभुवनत्व का बयान करते हैं।

ये अष्ट प्रातिहार्य केवल समवसरण में ही रहते है ऐसा नहीं समझना । जिस दिन जिनेश्वर प्रभु को केवलज्ञान का आविर्भाव होता है उसी दिन ये अष्ट प्रातिहार्य प्रभु के साथ ही रहते है । जब प्रभु समवसरणादि में बिराजमान होते है तब कार्यरूप में रहते है और जब प्रभु विहार करते है तब आकाश में चलते रहते है । उस वक्त संसार के सभी प्राणी आश्चर्यमुग्ध होकर ये दृश्य देखते रहते है ।

पुण्यात्मा.. ..! शास्त्रों में परमात्मा के अतिशयों की ये सारी बातें जब पढकर मन ललचाता है तब अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति होती है । यदि ऐसे दृश्य देखने को मिलता तो हमारी चक्षुरिन्द्रिय सफल हो जाती। बस हम भी ऐसा प्रातिहार्य बनकर परमात्मा की भक्ति करते हुए हमारा जन्म सफल करे ।

यही शुभ कामना ।

☆

पानी का गुण बदलता रहता है,
वह जैसी धरती पर बहता है
वैसा ही गुण उसका हो जाता है
इसी प्रकार मनुष्य की जैसी संगति होती है
उसमें वैसे ही गुण आ जाते हैं ।

पुरुषार्थ ही यथार्थ में मनुष्य की सच्ची सम्पत्ति है
क्योंकि दूसरी सम्पत्ति तो स्थायी नहीं रहती ।

इच्छा को मारो मन को संयमी बनाओ

❑ पू आचार्यदेव श्री हिरण्य प्रभसूरीश्वरजी म सा , पाली

अनादि काल से आत्मा ससार मे प्रवास कर रही है फिर भी उनका अन्त नही आया है। किन्तु पुनरपि मरण पुनरपि जननी जठरे शयन पुन पुन जन्म लेती है। पुन पुन मरती है। पुन पुन गर्भावास म आती है। अत सुख आत्मा पाती नही है।

क्यो पाती नहीं है, इसका कारण क्या हागा ?

कहना पडता है आत्मा खुद सुख के स्वभाव वाली है। परन्तु सुख की इच्छा भौतिक सुखो के साधना म रखती है। इसलिए अपना मूल स्वभाव को छोडकर विभाव दिशा मे स्थित बनती है। तब कस्तूरी मृग की तरह सुख के लिए इधर उधर भटकती रहती है।

विषय कषाय के कारण से या पचेन्द्रिय के विषयो के वश होकर आत्मा दुखी होती है। अत गाढ राग से उनको दुख की अनुभूति महसूस करने पर भी दुखी हू ऐसा यत्किंचित भाप होता नही है। जैसे मद्यपान करने वाला शराबी शराब मे आती हुई बदबू महसूस नही करता एसे ही मोहाघ आत्मा ससार म दुख है ऐसा महसूस नहीं कर पाती।

आधि व्याधि और उपाधि की मौजूदी होने पर भी आत्मा कतई साचती नही है कि मैंने शरीर धारण किया है वह मरे लिए दुख का कारण हो सकता है शरीर है तो आधि व्याधि व उपाधि के चक्रवाल का दु ख है।

शरीर है तो कपडा मकान व आहार की चिन्ता हरदम सदा के लिए रहती ह। चिन्ता करन पर शरीर किसी का होता ही नही है लाखा क अलकारो से सजाओगे नये नय अफामातन कीमती कपडे पहनाओगे सुशोभित कराग माल मिष्टान से पुष्ट-पुष्ट बनाओगे। करोडो रूपय क बगले मे अच्छी तरह से रखोगे फिर भी कभी शरीर अपना नहीं बनेगा पराया बनकर विश्वासघात करेगा इसलिए आत्मा को शरीर के माध्यम स कतई सुख नहीं मिलता है। यदि सुख दिख पडता है, वह मृग नीर की तरह भ्रम ह, भ्रान्ति है। इस भौतिक सुख की इच्छा किसी की पूर्ण हाती नही है अपूर्ण रहती है। जेस-जेसे इच्छा करन म आती है ऐसे-ऐसे यत्नाआ स घटाटाप बादल छा जाता है परेशानिया विविध हरकत बढ जाती ह। तब आत्मा आर्त्तध्यान रोद्रध्यान क चक्कर म चकराती है इसलिए कहने मे आता है

'ससार स्वप्न हे वह नही ह अपना
ममेदम् को मत जपना, पाप कभी मत करना

अत भातिक सुखो की इच्छा करने वाला सुखी बना नही है किन्तु दुख के रगिस्तान की आर प्रस्थान करते रहते ह।

आशा इच्छा लालच आत्मा को तग बनाती है रुलाती है माथा पची करवाती हे। दर-दर प

मास क्षमण की तपस्विनी नव-दीक्षिता

साध्वी श्री मोक्षरत्नाश्रीजी म.सा.

श्री विचक्षण भवन में विराजित खतरगच्छ आमनाय की साध्वी श्री मोक्षरत्नाश्रीजी म सा ने दि 7 8 98 को 31 दिवस के उपवास की कठिन तपस्या पूर्ण की है ।

जयपुर निवासी श्रीमान् छगनलाल जी एव कान्ता देवी, जूनीवाल की सुपुत्री कुमारी ममता जूनीवाल ने श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर में शिक्षा ग्रहण की । कॉलेज की विभिन्न गतिविधियों मे अग्रणी रहने वाली छात्रा जब साध्वी श्री हर्षयशाश्रीजी म सा के सम्पर्क मे आयी तो आपका जीवन भौतिकता से आध्यात्मक की ओर उन्मुक हो गया और उसकी परिणति 27 मई, 98 को जयपुर मे साध्वी श्री शशिप्रभा श्रीजी म सा की निश्रा मे सम्पन्न दीक्षा मे दीक्षित होकर साध्वी श्री मोक्षरत्नाश्रीजी के रूप में अवतरित हुई।

मात्र ढाई महिने के दीक्षा पर्याय मे ही आपने 31 दिन के उपवास की कठिन तपस्या कर अनूठा एव अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

श्री जैन श्वेताम्वर तपागच्छ संघ एवं सम्पादक मण्डल की ओर से शत्-शत् वंदन - अभिनंदन ।

भीख मॅगवाती है इसलिए इच्छा को मारो मन को संयमी वनावो ।

इन्द्रिय के विषय सुख को जिगर मे स्थान नही दो, सुखी होना हो तो संसार में रागद्वेष को छोडकर आध्यात्मिक सुखो की इच्छा पर अपना जीवन निर्भर वनाओ, आध्यात्मिक माध्यम से हम संसार के सुखो की इच्छा को कम कर सकेंगे ओर 'जर, जमीन, जोरूं' कजीया के छोरू हे ।

जर जमीन जोरू पर अपनी आशक्ति घटेगी तब हमारे दिल में वैर-विरोध का स्थान रहने नही पायेगा ।

संसार के प्रवास को अत लाने के लिए सर्व जीवो प्रत्ये वघुत्व भाव को जन-जन के जीगर तक पहुँचाना पडेगा अपने वात्सल्य भाव से विश्व को भिजाना पडेगा तव ही सवत्सरी प्रतिक्रमण ग दिया हुआ मिच्छामी दुवकडम सार्थक होगा ।
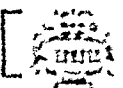
स्नेहपूर्ण ले हृदय, दीप ने धरती का श्रृंगार किया है

(पच दीपयोग)

❒ श्री हीराचन्द ढढ्ढा, जयपुर

है भारतीय सस्कृति द्वारा
मानवता को श्रृगार मिला
सुख-शाति विश्व मे रहे सदा
ऐसा अनुपम उपहार मिला

यह ज्योति पर्व प्रतिवर्ष हमे
जीवन सदेश सुनाता है
यह पचमुखी शुभ दीपक ही
ज्योति पथ पर ले जाता है

इस दीपक की पहेली बाती
घर का तम दूर भगाती है
घर मे जो कचरा जमा हुआ
उस पर प्रकाश फैलाती है

दूजी बाती हमको कहती
सामाजिक तिमिर हटाने को
मित्रो मे जागी हो कटुता
तो उसको दूर भगाने को

तीजी बाती है तिमिर हटाती
जो आर्थिक साधन पर छाया
निज लेन-देन के खातो की
भी नूतन कर लीजे काया

चोथी बाती का यह प्रकाश
हमको सन्मार्ग सिखाता है
किस भॉति धर्म की रक्षा की
उसका इतिहास बताता है

लेकर बनवास, तपस्वी बन
शुचि धार्मिक ज्योति जगाई थी
उत्तर से दक्षिण भारत तक
निज धर्म ध्वजा फहराई थी

कर विजय आसुरी सस्कृति पर
भगवान राम घर आये थे
भारत रमणी का मान बचा
सीता जी को घर लाये थे

पॉचवी शिखा करके इगित
आध्यात्मिक ज्योति जगाती हे
भौतिकता के दुख द्वन्द्व मिटा
शुभ मोक्ष मार्ग वतलाती हे

इन्द्रिय निग्रह, अपरिग्रह से
सुख-दुख दोना मिट जायेगे
जन जीवन के सब रीते घट
अमृत रस से भर जायेगे

श्री महावीर ने जागृत की
यह उज्जवल ज्योति शान्त इसकी
वह वीर जिनेश्वर कहलाया
निर्वाण पुण्य तिथि है उनकी

वर्गभेद के सघर्ष मे
कब जग का उपकार किया हे
स्नेह पूर्ण ले हृदय दीप ने
धरती का श्रृगार किया ह ✗

मानव जीवन मुक्ति का मंगल द्वार

❑ मुनि श्री पूर्णचन्द्रविजयजी म.सा., राजनांदगाव

मानव जीवन महामांगल्य स्वरूप है ।

मानव जीवन की दुर्लभता जैन शास्त्रों में दस दृष्टांत द्वारा बताई गई है ।

यह जन्म बार बार नहीं मिलता है । गत जन्मों के अनेकानेक महान पुण्य उदय से ही कदाचित् मानव जन्म संप्राप्य हो जाता है ।

प्रभु महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है-

'दुल्लहे खलु माणु से भवे,
चिरकाले वि सव्वपाणीणं ।
गाढा य विवाग कम्मुणो,
समय गोयम ! मा पमायए ॥

सभी प्राणियों को बहुत लम्बे काल की मर्यादा में मनुष्य भव प्राप्त होना वास्तव में दुर्लभतम है और दूसरी ओर कर्मो के विपाक-फल भी बहुत ही प्रगाढ यानी भयंकर है । अतः हे गौतम ! तू एक क्षण का भी प्रमाद नहीं करना ।

संत सूरदास ने भी कहा है-

'नहीं एसो जन्म वारबार'

अव हमें मानव जन्म में ऐसी साधना करनी चाहिए कि उस वाक्य में 'एसो' शब्द निकल जाय और हम शीघ्र मुक्ति की मंझिल में पहुँच जाय जिससे हम कह सकें कि 'नहीं जनम बार-बार' यानी इस संसार चक्र में हमें बार बार दुःखपूर्ण जन्मों की श्रेणी धारण करनी न पडे ।

ऐसे मानव जन्म की महत्ता संसार में सभी दर्शन कारों और सभी धर्मो ने वताई है ।

जैनों के उत्तराध्ययन में,
बौद्ध के धम्ममपद में,
हिन्दुओं के वेद-पुराण में, उपनिषदों में, गीता में,
रामायण और महाभारत में,
मुस्लिमों के कुरान में,
ईसाईओं के बाईबल में,
सिक्खों के गुरु ग्रन्थ साहिब में,

आदि विश्व के महान धर्मो में मानव जन्म की प्रशंसा और यशोगान के अनेक वाक्य उल्लेखित किये है ।

प्रभु महावीर ने तो समवसरण में देशना देते हुए बारह पर्षदा में बैठे हुए देव-देवी इन्द्र-इन्द्राणी गण के विशाल समूह के सामने भी कहा कि 'मणुआ तुममेव सच्चं'

हे मानव ! तू ही सत्य है, तू ही महान है । ऐसा क्यों कहा ?

हमें शका हो सकती है कि मानव से तो देव के पास कितनी विराट् समृद्धि है ?

मानव से कई गुना रुंप-सौदर्य देव के पास है,
मानव से कई गुना बल-पराक्रम देव के पास है,
मानव से कई गुना विराट् ऐश्वर्य देव के पास है,

देवलोक के सामान्य-जघन्यतम देव ने अपने पैर में पहनी हुई मोजडी में जडे हुए रत्नों की इतनी कीमत वढ जाती है कि उसके सामने मानवजगत् की विराट् संपत्ति का कोई मूल्य नही है ।

देव का शरीर भी वैक्रिय शरीर होता है। जिस मे अशुभ अशुचि पुद्गल-हाड-चाम मास, रुधिर मल-मूत्र कुछ नहीं होता है। सदा बहार यौवन बना रहता है। वृद्धपन या रोगा की झझट-उपाधि वहॉ नहीं है।

देवलोक के देवात्मा चाहे जितना लाखो प्रकार के विविध रुप भी बना सकते है, क्योकि उनका मिला हुआ वेक्रिय शरीर से अनेक विक्रिया परिवर्तन हो सकता है।

वहॉ कम से कम दस हजार वर्ष तक या ज्यादा स ज्यादा ततीस सागरोपम के विराट् काल तक माज-मजा, आनद-प्रमोद ही रहता है।

वहॉ विशाल रमणीय रगविरगी पुष्पो से सुशाभित नदनवन होता है। वहॉ कमला के पराग से सुगन्धित पानी से भरी वापिकाए रहती है। वहॉ जहॉ चाहे दूर-सुदूर जाने वाला उत्तुग विमान भी रहते है। वहॉ सुदर कमनीय काया से लावण्य और सोदर्यपूर्ण अप्सराए होती है।

अरे ! वहॉ क्या नहीं होता है यह एक सवाल हे। भौतिकता की सचमुच वहॉ पराकाष्ठा है।

फिर भी मानव देव स महान क्या ?

मानव का शरीर तो औदारिक शरीर है। जिस मे अनेक अशुचिमय पुद्गला का भडार भरा हुआ है। हाड-चाम-मास-रुधिर-मलमूत्र की दुर्गध से भरा हुआ यह शरीर क्या सुन्दर पदार्थ है ?

मानव को कई प्रकार के रोग कई विडबनाए कई समस्याए कई चिताए कई दु खदायी घटनाए ये सब कुछ एक बार नहीं बल्कि कई बार घटित होते रहते है।

फिर भी मानव क्या महान (Great) है ?

यही कारण है कि मानव एक विशिष्ट साधना कर सकता है। मानव की चेतना म इतनी ऊर्जा पैदा हो सकती है जिस से वह अपनी आत्मा को इसी भव म परमात्मा बना सकता है।

आत्मा को परमात्मा
जीव को शिव
इन्सान को भगवान्
मानव को महामानव
नर को नारायण
विन्दु का सिन्धु
झीरो को हीरो
वामन को विराट्
पतित को पावन
वनाने वाला यही सिर्फ मानव जन्म है।

मानव एक ऐसी साधना कर सकता है जा देव कभी नहीं कर सकता है वह है विरति की साधना। विरति प्रतिज्ञा, नियम सामायिक प्रतिक्रमण, पच्चखाण चरित्र ये सव आराधनाए देव के भाग्य मे नहीं लिखी गई है। उस क भी कई रहस्यपूर्ण कारण हैं। उनको मिली हुई भौतिक शक्तियो और वहा का वातावरण और प्रतिवधक कर्म ऐसे उन्हे लगे रहते है कि वे चाह तो भी नहीं कर सकते।

इन्द्र अपना पूरा सिहासन एव सर्वस्व सम्पत्ति लूटा दे फिर भी सर्वविरति जीवन को वह प्राप्त नहीं कर सकता है। इसलिए ही इन्द्र प्रभु से हरदम प्रार्थना करता रहता है कि मुझे आगामी जीवन मे मानव जन्म मे श्राविका माता की कुक्षि से जन्म मिले और आठ वर्ष की उम्र मे भागवती दीक्षा स्वीकार करने का अवसर तेरी कृपा स प्राप्त हो।

भौतिकता से देव महान है।
आध्यात्मिकता से मानव महान है।

अफ्रीका के सहारा रण को यदि पार करना है तो वहॉ उत्तम पशु हाथी कामियाब नहीं बनता है बल्कि निकृष्ठ पशु ऊट ही उस रण को पार कराने में काम लगता है। उसी प्रकार भौतिक दृष्टि से उत्तम हाथी समान देव का शरीर है और मानव का शरीर कई प्रकार की विषमताओं से भरा ऊंट का शरीर जैसा है, लेकिन संसार रुपी सहारा रण को पार करने में और मुक्ति की मंजिल प्राप्त करने में हाथी देव नहीं बल्कि ऊंट जैसा मानव ही सफल बनता है।

इस अपेक्षा से ही कहा गया है-
न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं किञ्चित्'
मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नही है।

ऐसे दुर्लभतम और श्रेष्ठतम मनुष्य जन्म की सफलता कैसे की जाय ?

यह दुर्भाग्य की बडी घटना है कि सर्वोत्तम यह जन्म प्राप्त करके भी भौतिक दृष्टिवाला मानव मिले हुए इस भव का महत्त्व नहीं समझ पा रहा है।

आज का मानव कभी नास्तिक बन कर बोलता है-

दुनिया की मजा ले लो, दुनिया तुम्हारी है।

इस प्रकार बोलने वाले को समझना चाहिये कि दुनिया तेरी तो क्या, अपितु तेरे बाप, दादा, परदादा किसी की नही हुई, अरे बडे बडे बादशाह, शहनशाह और चक्रवर्ती जैसे षट्खंड के राजवी की भी नहीं हुई... तो अब तेरी कैसे होगी ?

कोई इस प्रकार भी बोलता है कि आज का ल्हावा ले लीजिए, कल किस ने देखा है ? यह कथन भी उचित नहीं है इस भव में रंगराग-अमन चमन और राग-द्वेष में बांधे हुए पापों की बडी सजा परभव में तो अवश्य भुगतनी पडेगी। पुनर्जन्म और पूर्वजन्म आज अब वैज्ञानिक तौर से एवं अन्यान्य अनेक पूर्वजन्म वगैरह की घटनाओं से सिद्ध हो गया है। कोई भौतिकवादी नास्तिक चार्वाक का शिष्य जैसा ऐसा भी बोलता है-

Eat Drink and Be Merry,

खाओ, पीओ, मजा करो, नाचो, कूदो, खेलो, आनंद-प्रमोद (Enjoyment) करो. इसके लिए तो जिन्दगी मिली है न ?

इस प्रकार विचार करने वाला मानव यह भूल जाता है कि-

''मजा भी आता है दुनिया से दिल लगाने से।
सजा भी मिलती है दुनिया से दिल लगाने से॥''

यदि हम खाने-पीने और इन्जोयमेन्ट में जिन्दगी बर्बाद कर देंगे तो सचमुच क्या मानव जन्म निष्फल ही बना रहे है न ? फिर यहां से दुर्गति में चले जायेंगे तो कितना पछताना पडेगा ?

एक राजा घोडे पर सवारी करता हुआ दूर-सुदूर जंगल में निकल गया। उसे पता नहीं था कि यह घोडा उल्टी शिक्षा वाला है। अतः जैसे रोकने का प्रयास करता है वैसे अति वेग से भाग रहा है। आखिर लगाम छोड देने से थका हुआ घोडा रुक जाता है। विराट् जंगल में भूखा-प्यासा-थका हुआ राजा जहां दूर नजर डालता है वहां उन्हें एक झोपडी दृष्टिगोचर होती है।

उस झोंपडी के बाहर एक आदिवासी भील जैसा आदमी भी दिखाई दिया, राजा वहां पहुंचे तो उस भील ने उनकी आगता-स्वागता वडे ही प्रेमभाव से की। अपनी झोंपडी में उसने राजा को रोटा, मिर्च, खिलाया और छाछ पानी पिलाया। हृदय से किया हुआ स्वागत और परिचर्या से एवं भूले रास्ते में सही दिशा दर्शन कराने से राजा

उस भील पर अतीव प्रसन्न हो गया ।

खुश होकर राजा ने भील को एक बडा ही सुन्दर चदन का बगीचा भेट कर दिया और कहा कि इससे तू तेरी जिन्दगी मे विकास और प्रगति करना ?

इस घटना के एक वर्ष पश्चात् जब एक दिन की बात है, राजा मुख्य मार्ग से हाथी पर बैठे पसार हो रहे थे और वही भील मार्ग के बीच मिल गया ।

राजा ने उस व्यक्ति को सहसा पहचान लिया लेकिन एक अजीब सा आश्चर्य हुआ, जब उसने देखा कि उसकी शक्ल दीदार वही का वही पुराना था । वही फटे हुए कपडे, वही गरीब की शक्ल देखकर राजा ने मार्ग मे रुक कर उससे पूछा-

अरे, तेरी अब यह हालत केसे ?

मैने तो तुझे विशाल चदन का बाग दिया था, फिर भी तेरी यह भाग्यहीन दशा ?

भील का राजा की यह बात कुछ समझ मे नहीं आई और कहा कि मै तो उस बाग का जोर शोर से उपयोग कर रहा हू जरा आप भी कृपा करके चलिए वहाँ और देखिये ।

वहाँ जाकर देखा तो पाया कि बगीचे के एक जगह मे कोयले का बडा ढेर पडा था । राजा ने पूछा यह ढेर कैसे ?'

भील ने प्रयोग करते हुए बताया कि वह चदन के झाड की लकडियो को काट-काट कर उन्हे जलाकर कोयला बना रहा है ।

दु ख का बडा नि विश्वास रखते हुए राजा ने कहा-

' अरे यह कारस्तान तूने क्या किया ? यह तेरी करुण दास्तान मेरी चीख को बढा रहा है अरे ओ भील । तू ने यह पागलपन किया। ये लकडिया कोई सामान्य नहीं है, इनकी ता लाखो-करोडो की कीमत है ।

भील ने चदन का पूरा बगीचा काट-काट कर उस जला दिया था, अब सिर्फ एक झाड शेष बचा था राजा ने उसकी लकडी को किसी व्यापारी से बिकते हुए बताया कि देख कितना बडा मूल्य है इसका ? अब वह आखो मे से आसु गिरा कर रो रहा है ।

लेकिन अब पछताये क्या होत
जब चिडिया चुग गई खेत ।

यह कहानी भील की ही नहीं, अपितु हमारी भी है । परमकृपालु परमात्मा ने प्रसन्न होकर (उनकी भक्ति द्वारा बधता हुआ पुण्य कर्म से) हमे मानव जीवनरूपी चदन का बगीचा भेट दिया, अब यदि हम उसे खाने-पीने मे, मोज-मजा मे, रगराग मे और विषय वासना मे गवा देगे तो क्या हम भी कोयले नही बना रहे है। वह भील से भी हमारी अति करुण दास्तान और नादानियत है कि मुक्ति-मजिल तक पहुँचाने वाली यह मानव गति से भी हम दुर्गति के द्वार खोल रहे है । मानव जीवन के चदन के बगीचे को हम विषय और कषाय की आग से कोयला जैसा बना रहे है।

भील ता अज्ञानी-मूर्ख हो सकता है उससे वह दयापात्र है लेकिन हम सब जानते हुए भी यह मूर्खतापूर्ण कार्य करत रहेग तो कर्मसत्ता या प्रकृति हमे कभी माफ नही करेगी ।

मानव जीवन मुक्ति का मगल द्वार है । इस बात को बराबर हृदय म रखते हुए हम प्रमाद दशा को छोडकर धर्ममार्ग मे सदैव प्रयत्नशील बने यही मगल कामना । ☆

"श्री बरखेड़ा ऋषभदेव प्रभु प्रथम तीर्थंकर"

❒ सा. सौम्यकला श्री जी, म.सा. जयपुर

तर्जः- गौरी है कलैया.....

ओ मेरे प्रभुवर प्रथम जिनेश्वर बरखेड़ा तीरथ है सुहाना
ओ धर्म के आधार प्रथम तीर्थंकर शत्-शत् करुं तुम्हें वंदना
अन्तरा
पिता है नाभिराजा मरूदेवी मैया
प्रथम मुनिवर हुए आदि जिन राया
धन्य है माता धन्य जिनेश्वर, मोक्ष का ताला खुल जाना
ओ मेरे प्रभुवर......
बरखेड़ा तीरथ में है आदिनाथ बिराजे
मनोहर मूरति तेरी दिल में बिराजे
दर्शन करके, ओ तेरी पूजा करके, मुक्ति महल में है जाना
ओ मेरे प्रभुवर......
चारों ओर फैली तेरी महिमा है भारी
दर्शन सुखकारी भवदुःख हारी
चरणों की पूजा ओ तेरी आंगी रचाकर, भक्ति की करूं नित-कामना
ओ मेरे प्रभुवर......
आत्म-वल्लभ प्रभुवर तेरे गुण गाया
समुद्र-इन्द्रदिन्न प्रभुवर तेरी मांगे छाया
तेरे द्वार पे आये, प्रभु दर्शन पाये,
सुमंगला करे नित वन्दना
ओ मेरे प्रभुवर......

प्रेरणा-सच्ची आराधना

☐ श्री वीरचन्द लघाभाई धरमसी, इन्दोर

दूसरो को चाहे जितना शान्ति का उपदश दो, सुख-दुखो मे सम रहकर आनदमग्न रहने की चाहे जितनी भी मीमासा करो जब तक तुम्हारा हृदय शान्त नही है जब तक तुम्हारा हृदय आनद से पूर्ण नहीं है, तब तक सब व्यर्थ हे। धनी कहलाने से तो बखेडा बढता है। सच्चे धनी बनो, फिर चाहे कोई तुम्हे कगाल ही क्यो न समझे।

अपना काम बनाने मे शीघ्रता करो क्योकि जीवन के दिन बहुत ही शीघ्र बीते जा रहे है। परोपदेश मे आयु बिता दोगे तो न तुम्हारा कल्याण होगा ओर न कोरे जबानी जमा खर्च से दूसरो का ही दु ख दूर होगा। पहले धनी बनो फिर बॉटो। बिना धनी हुए क्या बाटोगे। तीर्थ भूमिओ के पवित्र वातावरण को कलुसित निदा पचायती से विचार वाणी से। अपने हृदय को सदा पैनी दृष्टि से देखते रहो याद रखो जहॉ तुम्हारा मन है तुम वही हो। मन्दिर मे रहो या वन मे मन यदि कारखाना या बाजार मे है तो तुम भी वही हो। जिसके मन मे भगवान बसते है वह भगवान के मन्दिर मे है और जिसके मन मे विषय बसते हे, वह ससार मे ह। कलेश वसित ते ससार।

वृत्तियो को विषयो से हटाकर भगवान मे लगाओ या जहॉ वृत्तिया जावे वहीं भगवान को देखो। पल-पल मे सभालते रहो वृत्ति कहा है दृष्टा बने देखो। फिर वृत्तियॉ स्वत ही भगवन्मुखी हो जायेगी। शास्त्रार्थ न करो विवाद मे मत पडो किसी को हराने की नीयत न रखो अपने काम मे लगे रहो। अपना भजन ध्यान स्मरण पूजन न छूटे। शास्त्रार्थ जीत जाओग तो अभिमान भर बढेगा। साथ ही उतनी देर जो बहिर्मुख वृत्ति रहेगी, वह तो बडी हानि होगी ही। जान-पहचान अधिक बढाने की चेष्टा न करो, चुपचाप भजन करते रहो। ख्याति से प्रपच बढेगा परिवार बढेगा भजन मे बाधा आयेगी मान-पूजा हान लगेगी और कहीं मान-पूजा का मन स्वीकार कर लेगा, तब तो समझो कि पतन के लिये गडढा ही खुद गया।

कम बोला, कम सुनो, कम देखो कम मिलो-जुलो यह सब उतना ही करो जितना अत्यन्त आवश्यक हो। एक पल भी बिना आवश्यकता के इन कामा मे मत लगाओ। घर म अतिथि की भाति रहो, कुछ भी अपना मत समझो सेवा कराने मे सकोच करो, डर-डरकर व्यवहार करो। सबका हित चाहो। किसी का दु ख न पहुँच जाय, इस बात का ध्यान रखा। ममता मत बढाओ। अतिथि को घर से चले ही जाना है इस बात को याद रखो। अपने लिय पाप को छोडकर अन्य किसी विपत्ति से मत डरा डरो दूसरो को सकोच मे डालन मे, डरो दूसरा को बाध्य करने मे डरो दूसरा को दु ख पहुँचान मे डरो दूसरो का अहित करने म डरो दूसरा स पूजा करवाने मे डरो दूसरा से सेवा कराने म डरो चरणधूलि देने मे, डरो दूसरो से स्तुति सुनन मे और डरो भगवान को भूलने म।

ऐसा प्रयत्न करते रहो कि क्षण भर भी भगवान न भूले वे मन मे वाणी मे तथा नेत्रा म बसे ही रहे। अन्य किसी बात म भले ही भूल हा जाय पर इसमे भूल न हो। साधना मे सताप न करो सदा आगे बढते ही रहो देखत रहा कि आज कितना आगे बढे। पीछे फिरने की तो कभी कल्पना ही मन मे मत उठने दो।

श्री नमस्कार महामंत्र का अपूर्व महात्म्य :

❑ सा. श्री पूर्णनन्दिता श्री जी म.सा., जयपुर

> जिण सासणस्स सारो, चउदस पुव्वाण वी समुद्धारा
> जस्स मणे नवकारो, संसारो तस्स किं कुणई ॥

श्री जिनशासन का सार तथा चौदह पूर्व का उद्धार रूप नवकार मंत्र जिसके मन में है उसका संसार क्या कर सकता है ? अर्थात् संसार के उपद्रव उसे किसी भी प्रकार की पीडा पहुँचा नहीं सकते हैं ।

जिस मनुष्य के अंतर मे श्री नमस्कार महामंत्र रमण करता हो जिसने भाव से उसकी शरण स्वीकार की हो, उसे इस संसार के दुःख लेशमात्र भी स्पर्श नहीं कर सकते । नमस्कार महामंत्र रूप नौका में बैठकर आत्मा निर्विघ्न रूप से संसार सागर से पार पहुँच सकती है ।

जैन इतिहास के पन्नो पर ऐसे अनेक महापुरुषों के नाम अंकित है, जिन्होंने नवकारमंत्र की साधना से अपने कष्टों को दूर किया । वसन्त पुर नामक नगर था । वह इतना सुन्दर एवं समृद्धशाली था कि उस नगर में सदाकाल बारहों मास वसन्त ऋतु का आनन्द ही छाया रहता था। उस नगर का राजा था जितशत्रु, भद्रा नाम की उसकी रानी थी । राजकार्य निर्विघ्न रूपेण चल रहा था । उसी बीच एक घटना घटित हो गई । उसी नगर में चंडपिंगल नामक एक चोर था । चोरीकर्म उसके परिवार में पीढियों से होता आया था । चंडपिंगल भी नगर में तथा आसपास जहा भी अवसर प्राप्त हो जाय चोरी करके ही अपना जीवन यापन करता था । एक बार उस चोर चंडपिंगल को ऐसा अवसर हाथ लग गया कि उसने रानी भद्रा का बहुमूल्य हार ही चुरा लिया। उस हार को उसने अपनी प्रिय वैश्या को प्रेमपूर्वक भेंट में दे दिया। उस वैश्या का नाम कलावती था । रानी के कंठ को शोभित करने वाला वह हार अब वैश्या कलावती के कंठ की शोभा वन गया । कलावती वैश्या तो अवश्य थी, किन्तु उसमें कुछ अच्छे जैन संस्कार भी थे ।

इस प्रकार बहुत-सा समय व्यतीत हो गया। राजा ने चोरी का पता लगाने का प्रयास किया किन्तु उसे सफलता नहीं मिली । धीरे-धीरे वह बात राजा-रानी ने भुला दी । उनके पास बहुमूल्य आभूषणों की कोई भी कमी तो थी नही। हॉ, राजा को इस बात का खेद अवश्य वना रहा कि उसके राज में चोरी जैसा बुरा कर्म होता हे तथा चोरी करने वाले का पता भी नहीं चलता । दिन बीतते गये । एक बार मदन त्रयोदशी के उत्सव का प्रसंग आया। उस उत्सव मे आनन्द क्रीडा करने के लिये वह वैश्या कलावती भी गई।
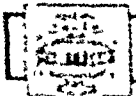
सयोग से उस दिन अपने गले मे वही हार पहिन रखा था, जो चडपिगल ने उसे भेट स्वरूप प्रदान किया था ।

रानी भद्रा का बहुमूल्य हार । अपनी चमक और आशा से बरबस ही लोगो की दृष्टि अपनी ओर खींच लेने वाला वह सुन्दर हार । उत्सव के दोरान रानी की दासियो की दृष्टि कलावती के कठ मे धारण किए हुए हार पर पड गई । वे उसे पहचान गई । उन्होने गुपचुप यह सूचना रानी को दी । रानी ने राजा को कहा । राजा ने तत्काल खोजबीन कराई और कलावती के घर से उसके प्रेमी चोर चडपिगल को आखिर पकड ही लिया । चोर पकड लिए जाने पर राजा ने उसे दण्ड स्वरूप सूली पर चढा दिये जाने का आदेश प्रदान किया ।

राजा जित शत्रु चाहता था कि प्रजा की दृष्टि मे यह बात भली-भाति आ जाय कि चोरी जेसा निकृष्ट कर्म करने का कैसा घातक परिणाम होता है । वह चाहता था कि प्रजा के अन्य सभी लोग इस परिणाम को देखकर शिक्षा ग्रहण करे तथा ऐसे कार्य से बचे । चडपिगल चोर को भारी अपमान सहित सूली पर चढा दिया गया । कलावती को जब इस बात का पता चला तो वह बहुत दु खी हुई और सूली स्थल पर गई । उसका प्रेमी चडपिगल चोर विवश सूली पर टॅगा हुआ था। अभी उसके प्राण पखेरू उडे नहीं थे । कुछ चैतन्य शेष था । कलावती ने उसकी दुर्दशा देखी और उससे कहा- प्रिय पिगल । मेरे ही कारण आज तेरी यह दुर्दशा हुई है । अत आज से मेरे लिये तेरे अतिरिक्त अन्य सब पुरुष भाई के समान है । इसी क्षण से मे वेश्यावृति का त्याग करती हूँ ।'' ऐसा कहने के बाद विचार करते हुए उसने चडपिगल को नमस्कार महामत्र सिखाया । अच्छी तरह याद करा देने के बाद कहा- ''पिगल ! यह महामत्र बडा ही श्रेष्ठ एव प्रभावकारा है । तू इसका निरतर स्मरण करता रह आर इसका स्मरण करते-करते यह भावना कर कि त मृत्यु प्राप्त होने के पश्चात् राजा के पुत्र के रूप म उत्पन्न हो । चडपिगल ने ऐसा ही किया । क्षण मात्र के लिए भी उसने नमस्कार मत्र का जाप नही छोडा उसके पुण्य प्रभाव से सूली की विषम पीडा के कारण मृत्यु को प्राप्त कर राजा की पटरानी की कुक्षि से पुत्र रूप मे उत्पन्न हुआ । पटरानी क पुत्र प्राप्ति के आनन्ददायी शुभ समाचार से केवल राजा जितशत्रु ही नही, सारी प्रजा खूब आनन्दित हुई ।

धूमधाम से जन्म महोत्सव मनाया गया । राजा ने इस अवसर पर प्रसन्नता पूर्वक अपना राजकोष खोल दिया । निर्धनो याचको साधु-सन्यासियो को उसने दान-दक्षिणा प्रदान की सभी सतुष्ट हुए । यहाँ तक कि इस प्रसन्नता के अवसर पर राजा ने बहुत से दीर्घकाल से बन्दी बने हुए व्यक्तियो को भी मुक्त कर दिया और उन्हे भविष्य मे सदाचरण अपनाने का निर्देश प्रदान किया । मुक्त हुए बन्दीजनो ने आनन्दित होकर राजा-रानी तथा नवजात शिशु को हार्दिक मगल कामनाएँ दी । राजा रानी ने इस आनदोत्सव के अवसर पर उपस्थित स्वजना क समक्ष नवजात कुमार का नाम पुरदर रखा । कलावती को अपने मन मे विश्वास था कि यह

राजा का पुत्र चंडपिंगल का ही जीव है। अतः वह प्रतिदिन राजमहल में जाती और बडे ही प्रेमपूर्वक कुमार को खिलाया करती। कुमार धीरे-धीरे बडा हो रहा था। उस कुमार को प्रेमपूर्वक खिलाते समय कलावती सदैव उससे ये शब्द अवश्य कहा करती- 'चंडपिंगल रोना नही' जब जब भी वह शिशु रोता, कलावती वही शब्द अवश्य कहती। कलावती के निरन्तर इस प्रकार के कथन के परिणाम में कुमार को जाति स्मरण ज्ञान हो गया। उसके हृदय में पूर्वभव में कलावती द्वारा सिखाए गए नमस्कार महामंत्र के प्रति अगाध श्रद्धा भाव उत्पन्न हो गया। इस प्रकार बहुत सा समय बीत गया। राजा जितशत्रु मरण को प्राप्त हुआ। उसके स्थान पर पुरन्दर कुमार राजा बना। राजा बनने के बाद उसने अपने पूर्वभव की उपकारिणी कलावती का बहुत आदर किया। नित्य, नियमित रूप से श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक वह नमस्कार महामंत्र का स्मरण करने लगा। इस प्रकार न्यायपूर्वक राज करते हुए अंत समय मे सभी जीवों से क्षमा याचना करते हुए राजा पुरंदर मरण को प्राप्त कर उत्तम गति में उत्पन्न हुआ।

नमस्कार महामंत्र का श्रद्धा पूर्वक स्मरण बडे से बडे पापी को भी उसके पापों से मुक्ति दिला देता है तथा उसे सद्बुद्धि प्रदान कर जीवन को उच्च बनाकर सद्गति भी प्रदान करता हे। ऐसे प्रकट प्रभावी नमस्कार महामत्र की आराधना कर प्रत्येक प्राणी आत्मिक सुखों को प्राप्त करे यही शुभेच्छा - ॐ शान्ति - ॐ शान्ति।

चमत्कारों में ही अपनी साधना की सफलता समझने वाला साधक साधना के योग्य हो ही नहीं सकता।

साधक व्यक्तिवादी रहे, पर समूह के साथ
समायोजित होने की कला भी सीखे,
अन्यथा उसका अहम् विगलित नहीं हो पायेगा।

साधक की प्रतिबद्धता साधना है स्थिति नहीं
स्थिति के साथ बंधने वाला साधना को
विस्मृत या गौण कर सकता है।

प्रभु वीर को यशोदा करे विदा

☐ साध्वी श्री पावनगिरा श्री जी म सा , इन्दोर

तर्ज – बहुत याद करते है

यशोदा करती है वीर को विदा
सदा खुश रहो प्रिय तुम को अलविदा
सब के लिये स्वामी जन्म तुम्हारा
कैसे रोकू तुम्हें वर्धमान प्यारा
स्नेह समर है आखरी विदा

जगल में सदा मगल करना
दिव्य केवल ज्योत को वरना
कर्म हटाके बनना खुदा

जग में अहिंसा ध्वज लहराना
भूले राही को पथ दिखलाना
सारा जहॉ हो तुम पे फिदा

भूल न जाना प्रभु प्रियदर्शना को
सदेश देना कभी धर्मलाभ को
कभी ना होयेंगे दिल से जुदा

दिल में यादों का दीप जलेगा
पल पल प्रियतम नाम जपेगा
मेरे रहोगे तू ही नाखुदा

भावक्षमा का तुमको है प्यारा
ॐकार पद में करना बसेरा
पद 'पद्म' में नमे सुरिन्दा

पर्युषण का कथन : 'आत्म-मन्थन'

□ पंन्यासप्रवर श्री जिनोत्तम विजय जी
गणिवर्य म.सा.

'पर्युषण' शब्द परि उषण के योग से सिद्ध होता है । पर्युषण का अर्थ है . विवेक-जागृति के साथ आत्मा का परिमार्जन, परिष्करण, आत्ममन्थन । बहिर्मुखी चित्तवृत्तियो को अन्तर्मुखी बनाने से ही आत्मशुद्धि सम्भव है । अन्तश्चेतना को बाह्य विकृतियों से बचाने के लिए अहिंसा, सत्य, अन्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह - वे पॉच सिद्धान्त सर्वमान्य हैं ।

पर्युपण महापर्व प्रतिवर्ष की तरह नई उमग, नई तरंग, नये विश्वास के साथ आत्मजागृति का अनुपम संदेश लेकर उपस्थित है । आइये, हम वाह्य विवादों को भूलकर, अपने जीवन को करुणा एव मैत्रीभावों से सजायें, सॅवारें । यह महापर्व प्राणीमात्र को प्रेम का पेगाम बॅाटता है, जीवन के साज पर स्नेह की मधुरिम सरगम वजाता है, हृदय में प्रसन्नता के पुष्प खिलाता है तथा मन से कटुता के कालुष्य को काफूर करता है ।

भौतिक जगत् हमारे अन्तस् को प्रतिपल प्रभावित करता है, असंयत इन्द्रियां विषयों के प्रति आसक्त हो जाती हैं, लिप्त हो जाती है, आत्मा की विवेकशक्ति पर पर्दा पड जाता है, जागृति नष्ट हो जाती है और प्रमाद का प्रभुत्व हो जाता है । प्रमाद हमे पतन के गर्त मे धकेल देता है । पर्युषण हमें आगाह करता है, सावचेत करता है । पर्युषण हमें आत्मनिरीक्षण, आत्मालोचन सिखाता है ।

अध्यात्मवाद का मधुर संगीत लिये पर्वाधिराज पधार रहे हैं । यद्यपि जैन धर्म के सभी पर्व महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु पर्वाधिराज का पद तो पर्युषण पर्व को ही दिया गया है, क्योंकि यह पर्व अन्तर में प्रज्वलित तप-सन्ताप को ठण्डक देने वाली एक शीत रश्मि है, भवसागर से पार उतारने वाली एक अनुपम नौका है, आत्मा रूपी हस को निर्मल करने वाला एक मानसरोवर है ।

पर्युषण पर्व यह सदेश देता है कि अन्तर की कालिमा को धोकर स्वच्छ बन जाओ, जैसे वर्षा अपने हृदय की गलियो को स्वच्छ बनाती है ।

क्षमा वीरस्य भूषण- यह सन्देश सदेव स्मरण रखो ।

फरिश्तों से वेहतर है इन्सान वनना ।
मगर इसमें लगती है मेहनत ज्यादा ॥

Live with yourself in the present moment को ही पर्युपण की उपासना का केन्द्रविन्दु बनाना होगा । पर्युपण दिखलाता ह स्वयं मे जाने का रास्ता, पर्युपण दिखलाता ह, स्वयं में जीने की आस्था ।
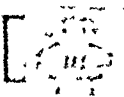
दुनियादारी के जजाल मे रहकर यदि स्वय मे जीना नहीं आया तो जीवन जड हो जायेगा। पर्युषण के पुनीत पल मे करो आत्मा के साथ मुलाकात।

My friend Appoinment with yourself

लगा सको तो बाग लगाना,
आग लगाना मत सीखो
जला सको तो दीप जलाना
दिल जलाना मत सीखो।
बिछा सको तो फूल बिछाना,
शूल बिछाना मत सीखो
पिला सको तो प्यार पिलाना,
जहर पिलाना मत सीखो।

पर्युषण महापर्व आठ दिनो तक मनाया जाने वाला आध्यात्मिक पर्व है। हमारी सस्कृति मे आठ की सख्या का बडा महत्त्व है- अष्ट मगल, अष्ट कर्म अष्ट सिद्धि, अष्ट बुद्धि अष्ट प्रवचनमाता। अत पर्युषण महापर्व भी अष्टदिवसीय होता है।

नदियो मे गगा, शत्रुञ्जया पर्वतो मे सुमेरु, मन्त्रो म नवकार नक्षत्रो मे चन्द्रमा, पक्षिया मे हस कुल मे ऋषभदेव वश तप म मुनिया का तप, पर्वो मे पर्युषण सर्वश्रेष्ठ है। अत वह महापर्व कहलाता है।

ध्यान रखिये, अन्तस् क दो प्रबल शत्रु है- राग एव द्वेष। ये दो शत्रु ही हमारे पतन के प्रमुख कारण है। राग-द्वेष के दल-दल मे फँसकर मानव का जीवन जजाल बन जाता है आत्मशक्ति क्षीण हो जाती है अज्ञानता कटुता हावी हो जाती ह कदम-कदम पर त्रुटियाँ हाने लगती है। क्रोध मान, माया, लोभ के शिकजे म फँसकर अनक गलतियाँ होती है। आत्मा, प्रकृति से विकृति की ओर भटक जाता हे।

किसी ने कहा भी है-

शान्त दान्त निष्कलान्त रहना आत्मा की प्रकृति है।

छल-छद्म ओर हिसा आत्मा की विकृति है॥
दु ख सहकर, दूसरो को सुख देना उपकृति है।
जीओ ओर जीने दो, यह हमारी सस्कृति है॥

अध्यात्म के आलोक म आज पाँच कर्त्तव्यो पर विचार करते हे-

(1) अमारी प्रवर्त्तन (2) साधर्मिक वात्सल्य (3) क्षमापना (4) अट्ठम (5) चत्य परिपाटी।

(1) अमारी प्रवर्त्तन का मतलब हे- अहिसा का प्रवर्त्तन। यहाँ 'मारी' शब्द का अथ हिसा है। मारी का निषेधात्मक रूप है- अमारी। अहिसा मे अचूक शक्ति है, असीम सामर्थ्य हे। अहिसा, वह परम तत्त्व है जिसमे जीवमात्र क प्रति समता सद्भावना तथा सद्बुद्धि का सचार होता है। अहिसा की उत्कृष्ट सिद्धि मे सार व्रत समाहित हो जाते है। अहिसा के सिद्धस्वरूप के सामने हिसा स्वय निस्सार हो जाती है। महर्षि पतञ्जलि ने कहा है-

' अहिसा प्रतिष्ठाया तत्सनिधो वैरत्याग

भगवान महावीर स्वामी का जीवन अहिसा की जीती-जागती मिसाल है। कथनी ओर करनी

का कितना अनूठा संगम था भगवान के जीवन में। किसी ने चाहे उन्हें कितने भी कष्ट दिये किन्तु उनका अहिंसात्मक संयम अडिग रहा। जीवमात्र के प्रति करुणा का निर्झर सदैव उनके हृदय से झरता रहा।

दशवैकालिक सूत्र में अठारह धर्मस्थानों में सबसे पहला धर्मस्थान अहिंसा को बताया गया है। समस्त जीवों के प्रति संयमपूर्वक व्यवहार करना अहिंसा है। मन, वचन, काया से किसी भी प्राणी को लेशमात्र भी दुःख न पहुंचाना। अमारी प्रवर्त्तन- अहिंसा उद्घोष का लक्ष्य है। ध्यान रखें कि दशवैकालिक सूत्र मे कहा गया है-

'सव्वे जीवा विइच्छंति जीविउ न मरिज्जउं'

संसार के सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। सबको अपने प्राण प्यारे हैं।

(2) दूसरा कर्त्तव्य है- साधर्मिक वात्सल्य। अहिंसा धर्म का पालन करने वाले साधर्मी हैं। उनके प्रति आत्मीय भाव, सहयोग का भाव, सौहार्द का भाव साधर्मिक वात्सल्य कहलाता है। आज स्वार्थपरता के कारण इस साधर्मिक वात्सल्य की बहुत कमी हो गई है। मनुष्य ऐशो-आराम के साधनों में, वैवाहिक आडम्वरों में, फैशन में, व्यसनों में फिजूलखर्ची करता है किन्तु साधर्मी भाई के दुःख-दर्द को दूर करने के लिए उसके पास न पैसा है, न समय।

समानता, मानवता का मूल मन्त्र है। समानता की स्थापना तभी होगी जब परस्पर सहयोग की भावनाएँ सुदृढ होंगी।

साधर्मिक वात्सल्य का कर्त्तव्य पालन प्रत्येक मानव के जीवन में साकार हो जाये तो धरा पर स्वर्ग उतर आयेगा। सर्वत्र सुख-चैन की बंशी बजेगी।

हम अपनी आय का एक निश्चित प्रतिशत अपने जरूरतमन्द साधर्मिकों के लिए खर्च करें। हमारी सत्कार्यो की सूची में हम साधर्मिकों के उद्धार एवं उनके विकास को प्रमुखता देवें।

(3) तीसरा कर्त्तव्य है- क्षमापना। क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी कषायों के आवेश में किसी प्रकार भी अपने व्यवहार से त्रुटि हुई हो, भूल हुई हो तो मन, वचन, काया से क्षमायाचना करना तथा अन्य के अपराधों को क्षमा करना- क्षमापना का अर्थ है। क्षमापना पर्युषण महापर्व का प्राण है।

भूल किससे नहीं होती ? ठोकर कौन नही खाता ? लेकिन भूल को महसूस करके पश्चाताप व्यक्त करना, क्षमा मांग लेना बडा ही महत्त्वपूर्ण है, क्षमा बिना का जीवन तो रेगिस्तान जितना भी सुहावना नहीं लगता। रेगिस्तान में भी रात होती है और रेत का शीतल, मुलायम स्पर्श मिलता हे जबकि क्षमारहित जीवन में तो निरे वैर की आग धधकती है। सृष्टि के तमाम जीवों के साथ मेत्री रचाने का सन्देश पर्युपण पर्व देता है।

(4) चौथा कर्त्तव्य है- अट्ठमतप। श्रमण संस्कृति तपप्रधान है। तप की जैसी महिमा उत्कृष्टता श्रमण सस्कृति में है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। लगातार तीन-दिन तक उपवास करना- अट्ठमतप कहलाता है। यह तप, कर्मो के कालुष्य को मिटाता हे, आत्मा को पवित्र करता हे, अन्तश्चेतन जगाता हे। सभी तपश्चर्याओं में अट्ठम तप (तेला) का महत्त्व अनन्य है। यह तप महामंगलकारी व प्रभावशाली हे। तीन दिन तक

सम्भव असम्भव

❏ श्री बाबुलाल शाह, जयपुर

(1) पैसा से मूर्ति प्राप्त कर सकते है पर भगवान नहीं ।
(2) पैसा से बिस्तर प्राप्त कर सकते है पर नींद नहीं ।
(3) पैसा से भोजन प्राप्त कर सकते है पर भूख नहीं ।
(4) पैसा से रौनक प्राप्त कर सकते है पर ऑखे नहीं ।
(5) पैसा से आदमी प्राप्त कर सकते है पर वफादारी नही ।
(6) पैसा से दवाई प्राप्त कर सकते है पर स्वास्थ्य नही ।
(7) पैसा से पुस्तक प्राप्त कर सकते है पर ज्ञान नहीं ।
(8) पैसा से पाऊडर प्राप्त कर सकते है पर सुन्दरता नहीं ।
(9) पैसा से कलम प्राप्त कर सकते है पर विचार नहीं ।
(10) पैसा से नोकर प्राप्त कर सकत है पर सेवा नहीं ।
(11) पैसा से सुख साधन प्राप्त कर सकत हे पर शाति नही । ☆

उपवास करना बाहरी तौर पर खाना-पीना छोडना एव भीतरी रूप से परमात्मा के जाप-ध्यान-भक्ति मे लीन बनना अट्ठम तप की आराधना कही जाती है । अनेक देवी साधनाओ मे अट्ठम तप को आवश्यक माना गया हे । वैसे तीन का अक जिनशासन मे अनूठा माना गया हे ।

मोक्षमार्ग की पूरी साधना तीन बाता म समायी है । सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र इन तीन गुणो को प्रकट करने के लिए एव जीवन म मगल व शुभ हेतु कम-से-कम पर्युषण मे अट्ठम का तप अवश्य करना चाहिए ।

(5) पाँचवाँ कर्त्तव्य है- चेत्य परिपाटी । चैत्य-मन्दिर को कहते है । उमग उल्लास श्रद्धा विश्वास तथा आत्मशुद्धि के साथ अपने ग्राम-नगर के मन्दिरो म जिन-दर्शन पूजन भक्ति का लाभ लेने का अत्यन्त महत्त्व है । परमात्मा क दर्शन से पाप मिटते हे, परमात्मा की वन्दना स मनोकामना फलती हे पूजन से श्री- सोभाग्य प्राप्त होता है ऐसे परमात्मा का दर्शन सदा करना तो नितान्त श्रेयस्कर हे । पर्युपण के मगलपर्व पर विशेप विधान हे ।

ध्यान रहे कि गाजे-वाजे आपकी श्रद्धा भक्ति एव तन्मयता को बढाने वाले होन चाहिए । सुदेव-गुरु धर्म के प्रति समर्पित श्रद्धा-भक्ति भवतारिणी है ।

आँखो मे अगर मुस्कान है तो इन्सान तुम से दूर नही
पाँखो मे अगर उड़ान है तो आसमान तुम से दूर नहीं ।
शिखर पर बैठ कर विहग से यही गीत गाया
श्रद्धा मे अगर जान है तो भगवान तुम से दूर नहीं ॥

☆

पर्वाधिराज एक आदर्श

❐ **पन्यास श्री रत्नचन्द्र विजयजी म.सा.,** पालीताणा

भगवान महावीर देव ने अन्तिम देशना में फरमाया है कि यह जगत में दुर्लभ है मानव जन्म। कितने पुण्यशाली हैं अपन कि श्रमण भगवान महावीर देव के मुख से जिस की प्रशंसा हुई है वह मनुष्य का अवतार इस बार हमको मिला ।

ये मनुष्य जन्म में हमको तीन विशिष्ठ अधिराज भी मिल गये- 1 मन्त्राधिराज 2 पर्वाधिराज 3 तीर्थाधिराज ।

सारे जग मे सब मंत्र से अधिक उत्तम मंत्र है नमस्कार महामत्र क्योंकि उसके जाप से तन-मन की व्याधिएं दूर होती है । मन शांत और प्रशान्त बनता है । यह मंत्र जीवन को निर्मल बनाता है ।

दूसरा नम्बर में मिला है..... पर्युषण महापर्व

पर्व की एक विशिष्ठता है कि तीर्थ के पास हमको जाना पडता है लेकिन पर्व हमारे पास आता है । तीर्थ को क्षेत्र का बन्धन है पर्व को समय का बन्धन हैं चाहे आप किसी जगह पर हो.... किन्तु पर्व समय पर आपके पास आयेगा !

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व जीवन को सुधारने की कला वताता है कैसे रहना कैसे खाना, वोलना ये सब कलाओं का एक स्थान है। पर्युषणा, अपने जीवन में आदर्श लेना है तो इस महापर्व की आराधना में मन को लगा दो ।

क्षमा महापर्व का प्राण है । किसी के साथ में क्लेश कंकास-झगडा खडा रखकर पर्व की आराधना समुचित नहीं होती, अतः पूर्ण निखालस एवं सरल बनें । भूल चाहे किसी की भी हो लेकिन अपनी ही भूल देखनी चाहिये.... देखिये

जो कभी भूल न करे उसे भगवान कहते हैं
जो भूल कबूल करे उसे इन्सान कहते हैं
जो भूल कबूल न करे उसे हैवान कहते है
अपनी भूल दूसरे पर डाले उसे शैतान कहते हैं ।

जो भगवान बनना है तो पहले इन्सान बनो ।

पर्युषणा महापर्व का यही संदेश है क्रोध छोडा, मान छोडो, ममत्व छोडो, जीओ और जीने दो...

सब पर्व में इस पर्व का महत्त्व अधिकतम होने से उसको पर्वाधिराज से पुकारा जाता है ।

तीसरा नम्बर का अधिराज है, तीर्थाधिराज-शत्रुंजय महातीर्थ ....

इस पावन भूमि का तो जितना भी गुणगान करें उतना कम है इसके एक एक कण में वडा इतिहास छिपा है । जिनका एक-एक कण पवित्र ह
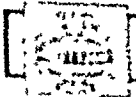
इस पवित्र तीर्थ की गरिमा क्या बताऊ फिर भी एक छोटी बात बता देता हू ।

एक राजा अपने राज्य को हार गया वो घरबार रहित बन गया सोचा अब क्या करु किसी ने बताया सिद्धाचल पहुच जा उसके महात्म्य से सब ठीक होगा । चल पडा वह तो शत्रुजय की ओर वहा जाकर ध्यान मे बैठ गया । यह ता गिरिराज का ध्यान था बहुत सारी सिद्धिया की प्राप्ति हुई युद्ध मे पुन विजयी बने । अपना राज्य वापस मिल गया ।

ऐसे बहुत महिमावत है ये तीर्थाधिराज

जो एक अधिराज मिलता है तो भी बहुत खुशी हाती है तो अपने को ता एक साथ तीन-तीन अधिराज मिल गये हे । कितनी आनन्द की बात हे । बस अब तो मानव जन्म को सफल करने की कोशिश करो ऐसा जन्म बार-बार मनुष्य जन्म, आर्यदेश उत्तम कुल जेन धर्म बड पुण्यादय से मिला हे अत उस जन्म की सफलता म ही जीवन व्यतीत होना आवश्यक है ।

"लगा सको तो बाग लगाना
आग लगाना मत सीखो

जला सको तो दीप जलाना
दिल जलाना मत सीखो

बिछा सको तो फूल बिछाना
शूल बिछाना मत सीखो

पिला सको तो प्यार पिलाना
जहर पिलाना मत सीखो"

काम धोखे का है बात ईमान की ह
पूजा शैतान की हे चर्चा भगवान की ह
दुनिया की दु ख दुविधा भाहे तो करे भाहे
सीरत हवान की है सूरत इन्सान की ह।

यदि विभिन्न सम्प्रदायो के मौलिक तत्त्वो का पर्यवेक्षण किया जाये तो हम पाएगे कि उनमे समानता और समन्वय के तत्त्व अधिक हैं असमानता के कम । आज आवश्यकता इस बात की हैं कि समानता के तत्त्वो को आगे रखा जाय ।

वही लोग मुक्त हैं जिन्होने अपनी इच्छाओ को जीत लिया है
बाकी लोग देखने मे स्वतत्र मालूम पड़ते हैं
पर वास्तव मे वे सब कर्मबन्धन, मे जकडे हुए हैं ।

बिखरे मोती

❑ मुनि श्री रत्नसेन विजय जी म.सा.
धूलिया

अकेले मत खाओ

कौए में अनेक दुर्गुण होने पर भी एक बहुत बडा सद्‌गुण है- वह कभी अकेला नही खाता है। उसे खाने की कुछ भी चीज मिलेगी तो वह कौ कौ करके अपने साथियों को बुलाएगा और फिर बांटकर खाएगा अपने साथियों के साथ मिलकर खाएगा।

चीटी को देखा है न ? खाने की कुछ भी चीज मिलेगी.... वह अपनी सखियों को तुरंत ही समाचार दे देगी।

यह कौआ.... यह चीटी... हमें प्रेरणा देती है कि कभी स्वार्थी मत बनो मात्र अपने ही पेट भरने का विचार मत करो।

महान् पुण्योदय से तुम्हें कुछ संपत्ति मिली है तो उसका उपभोग अकेले मत करो। तुम अपने पूज्यों का, अपने साथियों का, अपने लघु बंधुओं का भी विचार करो।

तुम अपने घर मिष्ठान का भोजन करते हो और इधर तुम्हारा साधर्मिक बन्धु भूखा मर रहा हो वह दाने-दाने के लिए तरस रहा हो तो वह तुम्हें शोभा नही देता।

तुम्हें अपने साधर्मिक बंधुओं का अवश्य विचार करना चाहिये। मात्र अपने ही पेट का विचार कौन करता है ? कुत्ता !

अरे ! मानव के श्रेष्ठ जन्म को पाने के बाद भी क्या तुम अपनी श्वान-वृत्ति का त्याग नही करोगे। पुण्योदय से प्राप्त लक्ष्मी को अक्षय बना सकते हो।

चेतन- मोह नींद अब त्यागो

उठो ! जागो ! अब सोने का समय नही है। सोते-सोते तो अनंत काल बीत गया है। हॉ यहा बाह्य नींद की बात नही है। इस निद्रा में से तो तुम प्रतिदिन जगते ही हो ! हर दिन सूर्योदय होता है और व्यक्ति बाह्य निद्रा का त्याग कर अपनी सांसारिक प्रवृत्तियों में तल्लीन बन जाता है। परन्तु यहॉ मुझे बात करनी है मोह निद्रा की।

इस मोह की निद्रा में हमारी तुम्हारी आत्मा अनादि काल से सोई हुई है। इस मोह निद्रा के कारण हमने बहुत कुछ खोया है। हमारा आत्म धन लूट लिया गया है और हम भीतर से एकदम कंगाल दरिद्र बन गए है।

एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पचेंन्द्रिय तक की अवस्था में तो हमने कभी जगने का विचार मात्र भी नहीं किया है।

अब एक महान् पुण्य अवसर हाथ लगा हे अपनी चेतना को जागृत करने के लिए। मोह की नींद में हम वहुत सोए है। अव तो हमे जगना होगा और अपना घर संभालना होगा। मानव भव, दीर्घ आयुष्य पंचेन्द्रिय पूर्णता जिन वाणी श्रवण आदि ऐसे ऐसे सुन्दर योग प्राप्त हुए हें कि जिसके द्वारा हम अपनी सुपुप्त चेतना को जागृत कर सकते हे।

अव मात्र जगना ही नही हे.. जगकर आत्म कल्याण के मार्ग पर कुछ कदम भी उठाने होंगे।
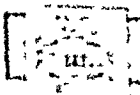
सत्य की ही जीत होती है

सत्य बलवान है, असत्य कमजोर है । सत्यवादी निर्भय होता है क्योकि उसे कभी बदलन की आवश्यकता नही रहती है जबकि असत्यवादी हमेशा भयभीत रहता है क्याकि उसे बार बार बदलना होता है । सत्यवादी को एक ही बात दोहराने की होती है जबकि असत्यवादी अवसर देखकर अपना रूप रग बदलता रहता है ।

सत्य आर असत्य की लडाई म आखिर जीत तो सत्य की ही होती है ।

बादल भले ही कुछ समय के लिए सूर्य पर आवरण खडाकर उसके प्रकाश को ढक दे परन्तु क्या वे बादल उस सूर्य के प्रकाश को नष्ट कर सकते हे ? कदापि नहीं ।

कुछ इसी प्रकार कोई व्यक्ति कुतर्को के जाल द्वारा भले ही सत्य के ऊपर एक आवरण खडा कर दे परन्तु उससे काई सत्य' थोडे ही नष्ट हाने वाला हे । आखिर तो सत्य सत्य ही है।

दुनिया म हम देखते है कि नकली वस्तु का आडबर कुछ अधिक ही होता है। असली सोने से भी नकली सोन की चमक कुछ अधिक ही दिखाई देगी ।

'थोथा चना बाजे घणा' के नियमानुसार हल्की व नकली वस्तु का आडबर कुछ अधिक ही हाता है । इतन मात्र म असली वस्तु की महता समाप्त नहीं हो जाती है । अत मे तो असली वस्तु की असलियत बाहर आती ही है । अत असत्य के प्रभाव मे कभी न आए भले ही वह अधिक चमकदार दिखाई देता हो, याद रखे अत मे जीत तो सत्य की ही होती है ।

व्यवहार कैसा हो

तुम्हारा सवाल है- दूसरा के साथ कसा व्यवहार करना चाहिय ?

इसका जवाब है तुम दूसरो क द्वारा जसा व्यवहार चाहत हा वेसा ही व्यवहार तुम्ह दूसरा क साथ करना चाहिये ।

तुम नहीं चाहते हा कि कोई तुम्ह गाली द। तुम नहीं चाहते हा कि कोई तुम्हारे साथ कठार व्यवहार करे । बस, तब तुम्हारा भी यह परम कर्त्तव्य है कि तुम दूसरो के साथ भी कठार व्यवहार मत करो ।

जेसे किसी क कटु व्यवहार से तुम्हार कोमल दिल को ठेस पहुँचती है उसी प्रकार क्या तुम्हारे कठार व्यवहार से दूसरा के कामल दिल को ठेस नही पहुँचेगी ।

यदि तुम्हारा दिल सवेदनशील है तो क्या दूसरो का दिल सवेदन शून्य है ?

तुम जेसे व्यवहार की अपक्षा रखत हा वैसा ही व्यवहार तुम्ह दूसरा के साथ करना चाहिये ।

आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत् की युक्ति म जीवन मे आत्मसात बनाने वाला ही आत्म उत्थान के पथ पर आगे बढ सकता है ।

सतोषी नर सदा सुखी

तुम्हारा प्रश्न है इस दुनिया मे सुखी कान' जवाब है- जो मनुष्य सतापी हे वह सबस अधिक सुखी है ।'

असतोपी व्यक्ति तो तृष्णा की आग म सदैव जल रहा होता है ।

असतोपी व्यक्ति को तन की भूख कम होती है परन्तु मन की भूख सबस अधिक होती ह

उसे जितना भी धन मिलेगा उसे कम ही लगेगा।

भस्मक का रोगी कितना ही खा लेगा, फिर भी उसे कभी भी तृप्ति नहीं होगी। बस असंतोषी व्यक्ति को जितना धन मिलेगा उसे कम ही लगेगा।

दूसरों को पीडा पहुँचाकर अथवा धर्म को धक्का देकर जो धन प्राप्त किया जाता है, वह धन व्यक्ति को कभी भी सुख नही देता है।

दूर आकाश में ऊंचाई पर उडने वाले गिद्ध पक्षी की नजर जिस प्रकार भूमि पर पडे मुर्दे पर ही होती है, उसी प्रकार लोभी व्यक्ति की नजर सिर्फ धन पर होती है। वह किसी भी उपाय से 'धन' पाना चाहता है। उसके जीवन का उद्देश्य भी एक मात्र धन ही होता है। धन ही उसका ग्यारहवॉ प्राण होता है।

जिसके जीवन में संतोष आ गया उसने जीवन में सब कुछ पा लिया। संतोष ही सर्वश्रेष्ठ धन है। ठीक ही कहा है-

'गो धन गज धन बाजी धन, और रतन धन खान

जब आवे संतोष धन, तब सब धन धूल समान

सच्ची सम्पत्ति

दुनिया कहती है कि 'धन-दौलत हमारी संपत्ति है।' परन्तु परम ज्ञानी पुरुष कहते हैं कि धन यह कोई वास्तविक संपत्ति नहीं है परन्तु प्रभु का स्मरण ही सच्ची संपत्ति है।

आपत्ति के समय में व्यक्ति किसे याद करता है ? प्रभु को ! तो प्रभु ही तो हमारे सच्चे रखवाले हुए। आपत्ति के समय में भी हमारा संपूर्ण संरक्षण करने वाले प्रभु ही तो है तो ऐसे प्रभु को क्षण भर भी कैसे भूला जाय।

सच माने में शारीरिक रोग कोई बडी विपत्ति नहीं है परन्तु प्रभु का विस्मरण ही सबसे बडी विपत्ति है और प्रभु का स्मरण ही सबसे बडी सम्पत्ति है।

प्रभु को स्मरण का अर्थ मात्र इतना ही नहीं कि प्रभु का नाम याद रखना। वास्तव में प्रभु का स्मरण हैं- प्रभु की आज्ञाओं को याद रखना।

जो व्यक्ति प्रभु की आज्ञाओं को सदैव याद रखता है ... उन आज्ञाओं के प्रति हृदय में बहुमान भाव धारण करता है उन आज्ञाओं के पालन के लिए प्रतिपल जागरुक रहता है ऐसे व्यक्ति के जीवन में आपत्ति को कभी अवकाश ही नहीं रहता है। कदाचित दुर्भाग्य से आपत्ति आ भी जाय तो वह आपत्ति भी उसके लिए अभिशाप रूप न बनकर वरदान स्वरूप बन जाती है।

पुरुषार्थ करो

आत्म कल्याण के मार्ग में 'भाग्य भरोसे' बैठने से काम नहीं चलेगा यहां तो भाग्य ही नहीं, पुरुषार्थ की प्रधानता है।

संसार के प्रत्येक क्षेत्र में भाग्य के भरोसे न बैठकर रात-दिन प्रबल पुरुषार्थ करने वाला व्यक्ति जब आत्म कल्याण के मार्ग में 'भाग्य की बात करता है तो बहुत बडा आश्चर्य होता है।

ज्ञानियों का वचन है- 'संसार में सफलता भाग्य के अधीन है जबकि धर्मक्षेत्र में सफलता पुरुषार्थ के अधीन है।

जरा नजर करें आत्म साधक उन महापुरुषों की ओर जिन्होंने आत्मा के शुद्धिकरण के लिए कितना प्रचंड पुरुषार्थ किया था।

आत्मा पर लगे हुए भयंकर कर्मो को यथाशीघ्र खपाने के लिए शालिभद्र और धन्नाजी ने कितना प्रचंड पुरुषार्थ किया था। आग के गोले

की तरह तपी हुई वैभार गिरि पर्वत की शिलाओ पर जिन्होने पादोपगमन अनशन को स्वीकार कर लिया था ।

कर्म खपाने के लिए गजसुकुमाल मुनि श्मशान भूमि मे गए थे और वहा उन्ही के श्वसुर ने उनके मस्तक पर जलते हुए अगारे डाले थे- आग की उस पीडा को भी अत्यन्त ही समतापूर्वक सहन करने का प्रचड पुरुषार्थ किया था ।

हमेशा याद रखे, मोक्ष मार्ग म पुरुषार्थ की ही प्रधानता है । प्रचड पुरुषार्थ ही हमे केवलज्ञान की भेट दे सकेगा ।

सच्चा मार्ग

तुम्हारी यह शिकायत है कि 'उसने मेरा बिगाड दिया उसने मुझे दु खी कर दिया ।'

परन्तु सच तो यह है कि तुम अपने ही कर्मो से दु खी हो रहे हो ।

इस विराट दुनिया म हर आत्मा स्वतत्र है । वह प्रत्येक आत्मा अपने ही सुख-दु ख की कर्त्ता है । कोई मुझे सुखी करता हे या कोई मुझे दु खी करता है, यह सबसे बडी भ्राति हे ।

हॉ । सुख मिलने पर उसका यश दूसरा का देना यह हमारे कृतज्ञता गुण को विकसित करता है ऐसा करने स जीवन मे नम्रता भी आती हे ।

परन्तु दु ख आने पर तो अपने ही अशुभ कर्म का विचार कर अपने दुष्कृतो की निदा करनी चाहिये और भविष्य मे दुष्कृत नहीं करने का सकल्प करना चाहिये ।

दु ख मात्र दुष्कृत का फल है अत दु ख से बचना चाहते हो तो दु ख के मूल दुष्कृत स बचना चाहिये ।

जीवन मे दुष्कृत चालू रखना चाहत हा और दु ख से बचना चाहते हो यह ता विपपान करके जीवन जीन की इच्छा के समान हे । यदि जीवन चाहते हो तो विप की प्याली को ठुकराना ही पडेगा । वस इसी प्रकार जीवन मे सुख चाहत हो दुष्कृत विष की प्याली को ठुकराना ही पडगा ।

दुष्कृत से लगाव रखना हे आर द ख स बचना है यह कभी सभव नही हे ।

जगत् मे दो वस्तुए हैं जो एक दूसरे से बिल्कुल नहीं मिलती हैं धन-सम्पत्ति एक वस्तु है और साधुता एव पवित्रता दूसरी ।

यदि कोई मनुष्य विद्वान् न हो तो भी उसे उपदेश सुनने दो क्योकि जब उसके ऊपर सकट पडेगा तब उनसे ही उसे कुछ सान्त्वना मिलेगी ।

भगवान महावीर का सोलहवाँ भव

विश्वभूति राजकुमार....तीन गलतियाँ

❑ मुनि श्री भुवनसुंदर विजयजी म. सा.

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति से जीव के भवों की गिनती होती है। जगद्गुरु तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी भगवान ने नयसार के भव में सद्गुरु की प्राप्ति से नवकार मंत्र, शुद्ध गुरु-देव और धर्म की प्राप्ति की तब से 27 भव में मोक्ष में गये। यानी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के बाद 27 स्थूल (बडे बडे) भवों के बाद महावीर स्वामी मोक्ष में गये।

प्रथम नयसार के भव में महावीर स्वामी का जीव एक गॉव के मुखिया थे। खिलाकर खाने का उनमें सद्गुण था। इसी सद्गुण ने उनको जंगल में सद्गुरु की प्राप्ति करवायी और मोक्ष प्रदायक सम्यग्दर्शन दिलाया। सद्गुरु से प्राप्त मैत्र्यादि भावपूर्वक नमस्कार महामंत्र की आराधना और शुद्ध देव-गुरु-धर्म की साधना कर भगवान महावीर देव दूसरे जन्म में देवलोक में गये।

तीसरे भव में भगवान श्री महावीर देव का जन्म युगादिदेव श्री ऋषभदेव भगवान के प्रथम पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरतराजा के पुत्र के रूप में हुआ। जन्मते ही बालक के शरीर में से प्रकाश की किरणें निकलती थी, यह पूर्वजन्म मे की हुई विशुद्ध सम्यग्दर्शन की साधना का प्रभाव था। किरण को संस्कृत भाषा में मरिची कहते है, इसलिए उनका नाम रखा गया 'मरिची'। युवावस्था में जब मरिची आये तब उन्होंने भगवान श्री ऋषभदेव के समवसरण (देशना भूमि) को देखा और वैरागी हो गये। उन्होंने सोचा कि यह समवसरण के ठाठ का कारण दादाजी ऋषभदेव भगवान का तप और संयम ही है इसलिए जगत में अगर कोई सार है तो धर्म ही है। ऐसा सोचकर के वैरागी बने हुए मरिची ने चरित्र लिया और विशुद्ध संयम का पालन कर रहे थे, किन्तु काल क्रम से विशुद्ध सयम पालन में शिथिल होकर मरिची ने नया सन्यासी वेष धारण किया। अपने नये वेष में असंयम ही था फिर भी इसमें सयम हे ऐसी सूत्र से विपरीत उत्सूत्र प्ररुपणा कर भगवान महावीर देव के जीव ने तीसरे मरिची के भव में ऐसा गाढ चारित्र मोहनीय कर्म का बंध किया कि जिसके परिणाम से बाद में 24 भव तक भगवान के जीव को शुद्ध चारित्र-संयम प्राप्त नही हुआ। जब कि उनको मानव जन्म मिला तब वैराग्य पूर्वक संसार का त्याग किया किन्तु जैनधर्म की शुद्ध चारित्र दीक्षा और तीर्थंकर कथित संयमधर्म का पालन नही मिला, चारित्र मोहनीय कर्म के कारण उनको सन्यासीपन ही मिला। तात्पर्य यह है कि कोई जीव सम्यग् चारित्र से भ्रष्ट होता हैं अथवा चारित्र की विराधना करता हे तो फिर बाद में उसे कई जन्मों तक सम्यग्-चारित्र की प्राप्ति नहीं होती है। महावीर भगवान के तीसरे जन्म से हमें यह सीखना हैं कि हम चारित्र से शुद्ध धर्म मार्ग से भ्रष्ट न होवे। रात्रि भोजन, अनंतकाय भक्षण, अभक्ष का भक्षण, शुद्ध संयमी के विरुद्ध
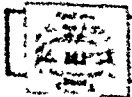
बोलने इत्यादि अकार्य करने पर हम सयम और चारित्र के विराधक बनते है, फिर कई जन्मो के लिए शुद्ध सयम और चारित्र के लिए हम अयोग्य बन सकते है इसलिए इस जीवन मे हम शुद्ध सयमी बने ऐसी सावधानी हमे रखनी है ।

भगवान महावीर प्रभु तीसरे मरिची के भव मे शुद्ध सयम की विराधना कर गिर गये, बाद मे 26 भव मे फिर से सम्यक् चारित्र की प्राप्ति हुई। सोलहवे भव मे भगवान का नाम है विश्वभूति राजकुमार । इस भव म भगवान का जीव विश्वभूति राजकुमार तीन भूल करते है । इस विषय का रोमाचक इतिहास यहाँ प्रस्तुत है ।

सोलहव भव मे भगवान महावीर देव का जन्म विश्वभूति राजकुमार के रूप मे हुआ । उनके चाचाजी राजा थे । विश्वभूति राजकुमार चाचाजी के परम भक्त थे, वे चाचाजी का बहुत आदर सम्मान और विनय करते थे । चाचाजी राजा भी उन्ह पुत्रवत् ही मानत थे । चाचा राजा को भी एक बेटा था जिसका नाम वैशाखनदी राजकुमार था । विश्वभूति राजकुमार और वैशाखनदी राजकुमार दोनो हम उम्र के थे और प्रेम से साथ मे रहते थे ।

उस नगर मे राजा का एक भव्य बगीचा था। उस बगीचे के लिए कानून किया था कि एक राजकुमार अपनी रानियो के साथ जब उसमे गये होवे तब दूसरे राजकुमार उसमे नहीं जा सकते थे। एक बार ऐसा हुआ कि विश्वभूति राजकुमार उस बगीचे मे अपनी रानियो के साथ गये थे उसी समय वैशाखनदी राजकुमार अपनी रानियो के साथ वहाँ क्रीडा करने आये । किन्तु कानून के हिसाब से सन्ट्री पुलिस ने उन्हे रोक दिया और उद्यान मे प्रवेश करने नहीं दिया ।

सन्ट्री पुलिस ने कह दिया- विश्वभूति राजकुमार अभी बगीचे मे है, इसलिए हे वैशाखनदी राजकुमार । आप अभी इस बगीचे मे नहीं जा सकते है । वैशाखनदी बोले- यह बगीचा किसका है ? मेरे पिता राजा हैं यह बगीचा उनका है ।

सतरी बोला- 'मुझे तो कानून के हिसाब से मेरा फर्ज अदा करना है । एक राजकुमार बगीचे म है इसलिए म आपको अन्दर नहीं जाने दूगा ।'

राजकुमार थे । मौज-शोख और वैभव मे पले हुए थे । इस प्रकार का कानून उनके ऊपर चले यह उन्हे पसद नही आया । इसम उन्हे अपना अपमान हुआ ऐसा लगा । वे नाराज हो गये- 'मेरे पिताजी राजा होते हुए भी क्या मर ऊपर कानून की ऐसी पाबदी ? मै ऐसी पाबदी नहीं सह सकूगा ।' आवेश मे आकर वैशाखनदी राजकुमार गये अपनी माताजी के पास और अपनी फरियाद राजमाता को कह दी । पुत्र के मोह मे माँ रानी रूठ गयी । कहते है इसे स्त्री हठ । रानीजी जाकर कोप भवन म बैठ गयी । राजा साहेब रानीजी को मनाने दौडते आये । रानी की जिद्द के आगे राजा को झुकना पडा । रानी के आग्रहवश राजा साहेब ने विश्वभूति राजकुमार का बगीचे मे से बाहर निकालने के लिए युद्ध की झूठी नौबत भेरी बजवायी ।

राजकुमार विश्वभूति अपनी रानियो के साथ उद्यान मे गीत-सगीत और मौज-विलास कर रहे थे, किन्तु वे एक क्षत्रिय थे । युद्ध की नौबत सुनकर कौन क्षत्रिय बच्चा शाति की श्वास ल सकता है ? युद्ध की नौबत सुनते ही विश्वभूति

राजकुमार तलवार लेकर उद्यान से बाहर दौड आये । उद्यान से बाहर आकर देखा विश्वभूति राजकुमार ने कि- उनके चाचाजी युद्ध की तैयारी करवाकर बडी सेना को सज्ज करके किसी राजा के साथ लडाई लडने जा रहे है ।

विश्वभूति राजकुमार चाचाजी के पास आये। दोनों हाथ जोडकर सिर झुकाकर विश्वभूति राजकुमार अपने चाचाजी से विनयपूर्वक बोले- ''चाचाजी ! आप युद्ध खेलने जाना रहने दीजिए ! मैं भी तो बडा हो गया हूँ । मैं जाऊँगा लडाई लडने !''

चाचा राजा बोले- 'अरे ! तुम अभी कुमार हो ! युद्ध के योग्य नहीं हो, जाओ ! खेलो, मौज-मजे करो !'

किन्तु राजकुमार विश्वभूति अनुनय-विनय पूर्वक चाचाजी को युद्ध में जाने से रोक देते हैं और स्वयं बडी सेना को लेकर युद्ध करने चलें । कहते है न ?-

एकेन सुपुत्रेण सिंही श्वपिति निर्भयम् ।
सा एव दशमी पुत्रै, र्भारं वहति गर्दभी ॥

एक ही सुपुत्र से शेरनी निर्भय होकर सोती हैं जबकि दस-दस बेटे होने पर भी गधी को भारी-बोझ ढोना पडता है ।

चाचाजी राजा ने जिस राज्य के राजा के साथ लडाई का निर्देश किया था, उसी राजा के राज्य में विश्वभूति राजकुमार आ गये किन्तु देखते है तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा । वह राजा पुरस्कार भेंट-सौगात लेकर इनके सामने आया। उसने विश्वभूति राजकुमार का बडे ठाठ से स्वागत किया। पैरों में गिरकर वह इन्हें पूछता है- पधारिए ! विश्वभूति राजकुमार ! आप का स्वागत है ! किन्तु यह तो बताइये कि आपने यहॉ पधारने का कष्ट क्यों किया ? यदि कोई कार्य था तो इस नाचीज सेवक को बुलवा लेते और फिर आपने पधारने का कुछ समाचार भी नहीं दिये । खैर ! कहिए, कुमार जी ! चाचाजी आदि सभी कुशलपूर्वक है ना ?

राजा की स्नेहपूर्ण और भक्तियुक्त वाणी सुनकर विश्वभूति राजकुमार चौकन्ने रह गये । वे तो यहाँ युद्ध करने आये थे किन्तु उस बात का तो यहॉ नामोनिशॉ तक नहीं था । वे समझ गये कि इसमें निश्चित चाचाजी का कोई कपट-प्रपंच है । अपने अनुचरों से गुप्त तलाश करवाने पर उन्हें पता लग गया कि यह सब दाव उन्हें बगीचे में से बाहर निकालने के लिए चाचाजी ने खेला था ।

इस प्रसंग से विश्वभूति राजकुमार को मन में भारी आश्चर्य हुआ और दिल में दुःख। वे सोचने लगे कि- ''मैं जिन्हें पिता से ज्यादा मानता हूं.. जिनका मैं बडा मान-सम्मान-आदर करता हूं, जिनके आदेशों का पालन मैं एक सेवक की तरह करता हूं और वे चाचाजी मेरे साथ ऐसा कपट नाटक खेलते हैं ? ऐसा सोचते सोचते विश्वभूति राजकुमार का मन संसार से विरक्त हो गया, वे वैरागी बन गये । वे अपने मन में विचार करने लगे कि- 'इस में चाचाजी का कोई दोप नहीं है, सारा संसार ही ऐसे कुट-कपट और माया प्रपंच से भरा हुआ है । मुझे अब ऐसे कपट भरे संसार में नहीं रहना है ।

ऐसा निर्णय करके विश्वभूति राजकुमार चाचाजी के पास आये और बोले- 'चाचाजी !

मुझे स्वप्न मे भी ऐसा ख्याल नही था कि आप मेरे साथ ऐसा कपट प्रपच करेगे । यदि मुझे बगीचे म से बाहर निकलवाना था तो आप मुझे चिट्ठी समाचार भेज देते कि- विश्वभूति राजकुमार तुम बगीचे से बाहर आ जाओ, तो आपका सेवक मै तुरत बाहर आ जाता । किन्तु जिनको मे पिताजी से भी ज्यादा मानता हू ऐसे आप भी ऐसा कपट-प्रपच रचते है, जिससे मुझे गहरा दु ख हुआ हे । खैर ! जाने दीजिए, दोष आपका नही है यह ससार ही मूल मे असार है । जिन को अपना मानकर उन पर विश्वास करते है वे ही विश्वासघात करने वाले होते हे । अच्छा चाचाजी ! मुझे ससार पर से वेराग्य हो गया है, आप मुझे अनुमति दे दीजिए, अब मुझे इस स्वार्थपूर्ण और विश्वासघाती ससार म रहना नहीं हे मै साधु बनना चाहता हू ।'

चाचा राजा ने विश्वासघात और कपट तो किया ही था ! वे अब क्या बोले ? उन्होने वेरागी कुमार को चारित्र लेने के लिए अनुमति प्रदान कर दी ।

उस काल मे सद्गुरु का योग इतनी आसानी से नही मिलता था । सद्गुरु का योग मिलने पर चारित्र ग्रहण कर लूगा' ऐसी भावना से विश्वभूति राजकुमार अपने महल से बाहर निकले । उसी समय सामने से आते हुए चचेरे भाई वेशाखनदी मिले । अवसर तो यह था कि विश्वभूति कुमार चचेरे भाई वेशाखनदी राजकुमार से गले मिलते, प्रेम से कह देते कि 'भैया ! मै साधु बनने जा रहा हू ।' तो फिर सभव था कि वैशाखनदी कुमार भी सोचते कि- मेरे कारण ही विश्वभूति कुमार ससार त्याग करके जा रहे हैं तो वे माफी मागते । भूल कबूल करते और हो चुकी बात को भूल जाने का कहते । किन्तु यहाँ तो उलटा ही हुआ । विश्वभूति राजकुमार ने एक बडी गलती कर दी ।

चचेरे भाई वेशाखनदी राजकुमार का देखकर विश्वभूति राजकुमार को गुस्सा आ गया और गुस्से के आवेश म आकर बोले- 'कायर वेशाखनदी ! मुझे बगीचे मे से बाहर निकालने के लिए तूने चाचाजी के पास कपट विश्वासघात करवाया ? झूठी युद्ध की नौबत बजवायी ? शर्म नही आती है तुझे ! खैर ! जाने देता हूँ तुझे ! वरना तुम्हारे जेसा मे बनता तो तुम्हे बराबर दिखा देता ।''

ऐसा बोलकर विश्वभूति राजकुमार ने नीचे पडा हुआ कविट्ठ का फल उठाया ओर इसक ऊपर जोर से मुट्ठि का प्रहार कर उसे चूर चूर कर दिया और बोले- देख वैशाखनदी ! मै यदि चाहता तो ऐसे ही तुम्हारे सिर को भी चूर-चूर कर सकता हू किन्तु तुम्हारे जैसा कोन होवे म तो चारित्र लेकर साधु बनने जा रहा हूँ ।'

कहते हे कि क्रोध अन्धा होता है । 'कोहो पीई पणासेइ' क्रोध प्रीति-स्नेह का नाश करने वाला होता है । क्रोध वैरागी-ज्ञानी को भी भूलान वाला होता है । देखिये ! विश्वभूति राजकुमार वेरागी होकर चारित्र लेने जा रहे थे ऐसे अवसर पर क्रोध और अभिमान करना उचित नही था । मुमुक्षु को किसी को भी सूक्ष्म पीडा नहीं होवे ऐसी सावधानी रखनी चाहिए । मैत्री भाव पूर्ण व्यवहार रखना चाहिए । किन्तु इन्होने तो कटु वचन बोलकर पर पीडा उपजायी । अमैत्रीपूर्ण व्यवहार कर असद्भाव पैदा कर दिया ! साथ मे बल का अभिमान कर भाई को बैरी बनाया जिसका परिणाम आगे चलकर बडा दावानल सा दारुण आया ।

अमैत्री पूर्ण कटु बोल बोलकर और कविट्ठ को तोडने की अभिमान युक्त असत् चेष्टा कर बाद में विश्वभूति राजकुमार सद्गुरु का योग पाकर विश्वभूति मुनि बने। चारित्र लेकर ज्ञान-ध्यान के साथ कठिन और दुष्कर तप कर मुनिवर ने अपनी काया को पिघाला जिससे अवर्णनीय आत्मतेज प्रकट हो गया !

निर्मल संयम पालते पालते बहुत वर्ष बीत गये, फिर एक दिन एक दुर्घटना घटी, जिसमें महामुनि विश्वभुति ने दूसरी भयंकर भूल कर दी ! एक दिन विश्वभूति मुनिराज मथुरानगरी में तपश्चर्या के पारणे पर गोचरी जा रहे थे। राजमार्ग पर तपस्वी मुनिराज नीचे देखकर समताभाव से चल रहे थे। उस समय एक बलिष्ठ गाय ने मुनिवर को रास्ते पर पटक दिया। मुनिवर गिर गये। गोचरी के पात्र हाथ में से छूटकर टूट-फूट गये। मुनिवर के तपस्वी शरीर को भी काफी चोट आयी।

उसी समय कोई राजकुमारी के स्वयंवर में आये हुए और राजमार्ग पर से रथ में बैठकर जाते हुए चचेरे भाई वैशाखनंदी ने यह दृश्य देखा। उन्होंने मुनिवर को पहचान लिया कि यह ओर कोई नही अभिमान करने वाले ओर कटुवचन बोलनेवाले विश्वभूति मुनि ही है। उन्हें अपने अपमान की सभी बातें याद आ गयी। वे उपहास करते हुए बोले- ''अरे ! विश्वभूति मुनिराज ! कविट्ठ को चूर चूर करने वाला आपका वह बल ओर अभिमान कहाँ चला गया ?''

देखिये ! केसी विचित्र घटना घटी है। यदि कोई संसार त्यागी मुनि कोई कारणवश रास्ते पर गिर पडते हे तो जन सामान्य के दिल में भी उनके प्रति हमदर्दी और करुणा पैदा हो जाती है। लोग दौड कर मुनि को बचाते हैं, आश्वासन देते है, आपको ज्यादा चोट तो नहीं आयी ? ऐसा पूछकर सेवा भक्ति-विनय करने लग जाते हैं। किन्तु यहाँ तो भाई मुनि है, जिनको टक्कर लगाकर गाय ने गिरा दिया है, ऐसी अवस्था में तो दूसरे भाई को सविशेष हमदर्दी और अनुकम्पा होनी चाहिए, जबकि प्रस्तुत में इससे बिल्कुल विपरीत हुआ। विश्वभूति मुनिराज के गिर जाने पर चचेरे भाई वैशाखनंदी को हमदर्दी या करुणा होनी तो दूर रही, किन्तु भाई मुनि का उपहास करने का मन हुआ। क्यों ? इसलिए कि भाई के कटुवचन और अभिमान पूर्वक की असत् चेष्टा से वैशाखनंदी जले हुए थे। कहते भी है:—

दवदग्धा प्ररोहन्ते, वाग्-दग्धा पुनर्नही।

वन में आग लगती है, वृक्ष जल जाने पर भी फिर से हरे भरे हो जाते है, किन्तु वाणी रूपी आग से जले हुए फिर से नवपल्लवित होते नहीं है।

प्रस्तुत में भी प्रसग तो था हमदर्दी का, किन्तु वैशाखनंदी ने उपहास कर दिया और बोले- 'वह ताकत कहाँ चली गयी ?' ऐसा मर्माहत वचन सुनकर विश्वभूति मुनिराज का अभिमान और आवेश फिर से जाग्रत हो गया ओर आवेश में भान भूलकर वे दूसरी भयंकर भूलकर बैठे। कहते है न कि आवेश अंधा होता हे, विवेक को नाश कर देने वाला होता है।

अपनी ताकत-बल दिखाने के लिए मुनि ने अपनी तपशक्ति तपलब्धि से गाय को सिंग से उठाया ओर वेगपूर्वक चक्कर चक्कर घूमाया आर फिर आकाश में उछाल दिया। फिर आकाश से
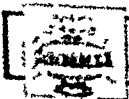
गिरती हुई गाय को अपने दोनो हाथो मे थाम लिया।

विश्वभूति मुनि के बल प्रदर्शन की चेष्टा को देखकर ही वैशाखनदी डरके मारे भाग खडे हुए, क्या भरोसा कहीं मुनि गाय को उठा घुमाकर अपने ऊपर नही फेक दे, जिससे हड्डी-पसली एक न हो जाय।

वैशाखनदी के उपहास को सहन नहीं करते हुए मुनि ने यहॉ तीसरी भयकर भूल कर दी। गाय को उठाकर घुमाकर उछालने की दूसरी भूल कर बैठन के बाद मुनि का आवश और अभिमान बढ गया। वे सोचने लगे- "क्या तप ओर सयम की कोई ताकत नहीं होती है। अवश्य होती हे। बस इस तप और सयम के बदले मे मै अतुल बली बनू ऐसा मै चाहता हूँ।"

सोलहवे विश्वभूति मुनिराज के भवकी सुदीर्घ तप ओर सयम की आराधना-साधना के बदले मे विश्वभूति मुनिराज ने बलवान बनने का नियाणा कर लिया। किये हुए तप और सयम के बदले मे सासारिक भोतिक पदार्थ की आशसा कर ली यह तीसरी बडी गलती कर दी क्याकि इस महान तप ओर सयम से तो यावत् मोक्ष मिल सकता था, किन्तु आवेश के कारण तप आर सयम के बदले म बलवान् बनने का माग लिया। जिसका परिणाम यह आया कि 18वे भव मे भगवान महावीर स्वामी का जीव त्रिपृष्ठ वासुदेव नामके 3 खड के अतुल बली राजा बने। बल के साथ अभिमान और विषयासक्ति साथ मे आयी जिसके कारण 18वे भव मे नहीं करने योग्य कार्य करके भगवान महावीर का जीव 19व भव मे सातवीं नरक के भयकर दु ख मे गिर गये।

भगवान महावीर के सोलहवे भव मे घटी तीन घटनाओ से हमे बहुत बोध-उपदश लेना चाहिए।

इस पूरे लेख मे जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखा गया होवे तो मिच्छामिदुक्कडम्।

कमल पानी से निर्लिप्त रहता है
साधक ससार से निर्लिप्त रहता है
जो भी कमल की भाति खिलता है
उसी का नाम अमर रहता है।

यदि तुम्हे किसी बात की कामना करनी ही है
तो पुनर्जन्म के चक्र से छुटकारा पाने की कामना करो
और वह छुटकारा तभी मिलेगा जब तुम
कामना को जीतने की इच्छा करोगे।

प्रेम के आंसू

मुनि श्री प्रेमप्रभ सागर जी म.सा. (वात्सल्यदीप)

गहन अंधकार के बाद ही प्रकाश का वातावरण होता है, यही प्रकृति का क्रम है।

अंधड आने के पूर्व वायु का वेग रूक जाता है, यही नियति की व्यवस्था है।

जब आत्मा की अनन्त शक्ति का लोप हो गया था, मन्दिरों में मानवीय अंतरंग भौतिक सुखों की आकांक्षा से आसुरी उपासना में लीन हो चुका था, यज्ञों की धुँआधार श्रृखला में असंख्य निरीह पशुओं की बलि का आतंक अपनी चरम सीमा पर था, मनुष्य मानवता को कुचलकर बडे बनने की अंधी दौड में सबसे आगे निकल जाने की स्पर्धा में लगा था, समस्त नर नारी मृत्यु का अभिशाप पाये हुये की तरह जीवन यापन कर रहे थे। तब सूखी वंजर धरती को सींचने के लिए जिस प्रकार वर्षा का आगमन होता है, उसी प्रकार मृतप्रायः मानवता में प्राण फूंकने भगवान महावीर जैसे दीपपुंज का पृथ्वी पर आगमन हुआ।

भगवान महावीर अपने सत्य और अहिंसा के उपदेश से धर्मचक्रवर्ती की तरह विख्यात हो गए।

संसार त्याग करने के पश्चात पहले ही चरण में उनको एक महान विपत्ति का सामना करना पडा। एक अंजान ग्वाला गुस्से में भरपूर होकर कोडे से उनको पीटने लगा किन्तु उस वक्त इन्द्र ने उन्हें वचा लिया। वाद में संगमदेव ने उन्हें अनेक प्रकार से शारीरिक और मानसिक कष्ट देने का प्रयत्न किया। चंड कौशिक का प्रचंड क्रोध सहन करना पडा और कानों में काष्ट शलाका डाली गई।

इसके पश्चात् गोशालक भगवान महावीर को अपना एक मात्र विरोधी मानकर उन्हें रुपेण मिटा देने का निर्णय लेकर वहाँ जा पहुँचा। उसने शास्त्रार्थ के बदले गालियाँ प्रारम्भ कर दी, इससे भगवान महावीर के साधुओं में रोष की तीव्र लहर फैल गई। तब भगवान महावीर ने केवल इतना ही कहा-

''उसका स्वभाव ही ऐसा है, मनुष्य का स्वभाव उसके प्राणों के साथ ही समाप्त होता है। ऐसे व्यक्ति के साथ क्रोध के बदले करूणा ही शोभा देती है।''

किन्तु गोशालक और अधिक क्रोधित हो गया और कटु शब्दों का प्रयोग करने लगा। उसे समझाने के लिए आये हुए भगवान महावीर के मुनि सर्वानुभूति को उसने जलाकर खाक कर दिया। उसके स्थान पर आए सुनक्षत्र मुनि भी उसकी आँखों से निकलती क्रोधाग्नि में जलकर भस्मीभूत हो गए।

सर्वत्र भय का वातावरण फैल गया, कई तो भयभीत होकर भक्ति से उसकी वन्दना भी करने लग गए, ऐसे समय में भगवान महावीर सामने आए और दूसरे मुनियों को पीछे रख स्वयं अपना स्थान संभाल लिया।

गोशालक के लिए यह एक महान घडी थी। महावीर को मिटाकर उनके शिष्यत्व का कलंक दूर करना था। वे उसके मार्ग में सवसे बडे अवरोधक थे। वे अगर हट जाए तो गोशालक संसार में अपराजेय हो जाएगा।

गोशालक का अंग-अंग क्रोध से ललकार

उठा, सात आठ कदम पीछे हटा, आखो से निकल रही भस्मीभूत करने वाली प्रचण्ड ज्वाला भगवान महावीर पर डालकर अपने क्राध का प्रदर्शन करने लगा। आग की लपटो का एक वर्तूल भगवान महावीर के चारो ओर लिपट कर रह गया।

लेकिन यह क्या ? गोशालक और अधिक कुछ सोच विचार करे इसके पूर्व ही वह अग्नि वर्तूल भगवान महावीर के देह मे प्रवेश करने के बदले उनकी परिक्रमा करके गोशालक की ओर लपका और गोशालक के शरीर मे ही प्रवेश कर गया ओर पलक झपकते ही वह कुरुप बन गया।

भगवान मात्र इतना ही कहा-

' एक दिन तेरी मुझ पर अधश्रद्धा थी और तू आज द्वेष मे अन्धा हो गया है। राग ओर द्वेष ये एक ही सिक्के के दो पहलू है, उसे भूल जा स्वस्थ हो, शात हो आत्मा के कल्याण का विचार कर।''

सातवे दिन अत्यन्त तीव्र वेदना का अनुभव करता हुआ आर्य गोशालक मृत्यु को प्राप्त हुआ, परन्तु उसने जाहिर किया कि भगवान भी अब छ मास से ज्यादा जीवित रहने वाले नहीं। हुआ भी कुछ ऐसा ही। भगवान को पित्त दोष हो गया और उनका शरीर सूखकर काटा हो गया।

सर्वत्र चिन्ता का साम्राज्य छा गया। वायु म ठपथा दी वृक्ष पल्लवो की फटफाहट म एक कपन थी। क्या राजा, क्या रक सब एक ही चिन्ता मे झुलस रहे थे, अहो इस प्रेममूर्ति को कहीं कुछ हो गया तो ? विश्व का यह महान दीपक बुझ गया तो ? मनुष्यो का दुखसागर तारनहार चला गया तो ?

भगवान महावीर की इस दशा का सिह अनगार को पता चला। भगवान को दूर स देखकर ही उसकी आँखो से अश्रुधारा बहने लगी। मन को लगा कि प्रभु की ऐसी दशा ? ससार को प्रेम और स्नेह का अनुपम सन्देश देने वालो की यह अवस्था। सिह अनगार हृदय की वेदना से विदीर्ण हा रहे थे। उनकी ऑखो मे अश्रु की धारा वह रही थी।

भगवान महावीर को उसका ख्याल आया उन्हाने अनगार को बुलाया और कहा-

''तेरा शोक मै समझ रहा हू तुझ मेरे शरीर पर मोह है न भला, इस शरीर का मोह कैसा ?''

भगवान की इस मधुर वाणी को सुनकर सिह अनगार को थाडी सान्त्वना मिली, किन्तु प्रेममूति की कृश काया उनसे देखी नहीं जा रही थी। उन्होन कहा-

'आपकी यह जर्जर काया मुझसे देखी नहीं जा रही है, क्या इसका कोई उपचार नहीं ?''

तब महावीर ने कहा-

''मेढिय गॉव मे गाथापति की पत्नी रेवती के पास जाओ। उसने दो प्रकार की ओपधि तैयार की है, एक मेरे लिए तैयार की है और दूसरी सामान्य कारण के लिए। मेरे लिए जो औपधि तैयार की है उसे मत लाना किन्तु जो सामान्य कारण के लिए औपधि तैयार की है उसे ले आना।''

सिह अनगार तुरन्त रेवती के घर पहुँच गया। उसने सामान्य कारण के लिए बनाई गई ओपधि की माग की। रेवती के लिए जीवन की यह सबसे धन्य घडी थी, प्रभु ने वह ओपधि पान किया ओर उसकी जर्जर काया कचनवरण मे परिणित हा गई।

अत्यन्त आनद का अनुभव करती रेवती का जन्म मरण का फेरा टल गया। सिह अनगार के वचनो से आनन्द के आसू बह चले। मानो, हृदय की गहराई से भक्ति का प्रवाह बह रहा हो।

मिथ्यात्व के अन्धकार से आत्मा को बचाना ही प्रथम कर्तव्य है

❑ सा. श्री पूर्ण प्रज्ञा श्री जी म. कुचेरा

आज संसार में चारों ओर प्रगाढ रूप से मिथ्यात्व का अन्धकार फैला हुआ है। मिथ्यात्व कोई एक ही प्रकार का नहीं है, विभिन्न प्रकार के मिथ्यात्वों से परिपूर्ण है।

जिस समुद्र में चारों ओर मगरमच्छ हों, वहां गोताखोर लोगों का टिके रहना कितना कठिन है ? फिर भी जिस प्रकार गोताखोर लोग एक विशेष प्रकार की पोशाक पहनकर और विशिष्ट साधन लेकर समुद्र में उतरते हैं इस कारण उस पर मगरमच्छों का किसी प्रकार का आक्रमण नहीं होता, इसी प्रकार मिथ्यात्व रूपी मगरमच्छों से परिपूर्ण इस संसार समुद्र में सम्यक्त्वी पुरुष श्रुतशील की पोशाक पहनकर शुद्ध मार्ग पर निश्चल रहता है।

ग्रन्थकार महर्षि कहते है-

दुरंत मिच्छत्तमहधयारे,
परिप्फुरंतम्मिसुदुन्निवारे ।
न सुद्धमग्गाउ चलंति जे य,
सलाहणिज्जा तिजयम्मि ते य।

दुख से जिसका अन्त हो सकता है, ऐसा मिथ्यात्व रूपी महान्धकार अनिवार्य रूप से चारों तरफ फैला हुआ है। ऐसा होते हुये भी जो शुद्ध मार्ग से चलायमान नहीं होते वे ही इस जगत में श्लाघनीय होते हें।

अर्हन्नक दृढ धर्मी और दृढ सम्यक्त्वी श्रावक था। वह चंपानगरी का निवासी था।विदेश से माल आयात निर्यात करता था। समुद्र मार्ग से उसकी जहाज यहॉ से विदेश में माल लेकर जाती और वहां से यहां खपने वाला माल लेकर आती थी। अर्हन्नक एक धार्मिक श्रावक होने के कारण स्वार्थी व्यापारी नहीं था। उसमें स्वधर्म भक्ति के साथ स्वदेश भक्ति भी थी। जब वह विदेश जाता तो पहले अपने नगर में घोषणा करवाता और अनेक छोटे छोटे व्यापारियों को अपने साथ जोड़ता, साधर्मियों को अपने व्यवसाय में हिस्सेदार बनाकर उन्हें भी अपने साथ ले जाता था। उसकी दृढ धार्मिकता और सम्यकत्व दृढता की कीर्ति मृत्यु लोक में तो क्या, देवलोक में भी फैल गई थी। स्वयं देवराज इन्द्र ने उसकी दृढ धार्मिकता व दृढ सम्यकत्व की प्रशंसा अपनी देवसभा में की थी। किन्तु एकदेव को मृत्युलोक के मनुष्य की प्रशंसा असह्य हुई। देव ने अर्हन्नक को दृढ धार्मिकता व सम्यक्त्व निश्चलता से चलित करने की प्रतिज्ञा ठान ली।

उक्त देव ने विभंगज्ञान के माध्यम से पहले सब जान लिया और मन में योजना बना ली कि अर्हन्नक जब विदेश यात्रा में जायेगा तभी समुद्र मार्ग में परीक्षा ली जाये क्योंकि सामान्य परीक्षा में तो यह उर्त्तीण हो जायेगा परन्तु कठोरत्तम परीक्षा लेने से ही उसे धर्म से विचलित किया जा सकता है।

फलत जब चम्पानगरी से अर्हन्नक एव उनके साथी व्यापारी जहाज मे माल भरकर जलमार्ग से जहाज मे बैठकर विदेश जाने लगे तभी वह देव आकाश मार्ग से वैक्रिय शक्ति से विकराल रूप धारण कर आया और आते ही अर्हन्नक के जहाज को हाथ म उठाकर समुद्र मे डुबाने का तथा उलटाने का उपक्रम करते हुये कहने लगा- हे अर्हन्नक, तूने क्यो इस मिथ्या धर्म को पकड रखा है ? इससे तुम्ह कुछ भी सुख मिलने वाला नही है। छोड दे इस मिथ्या धर्म को और कह दे कि यह धर्म मिथ्या है। अन्यथा देख ले तेरी जहाज को उल्टा और तेरे साथियो को समुद्र मे डुबा दूगा।

अर्हन्नक पक्का सम्यग्दृष्टि था वह शरीर-आत्मा के भेद विज्ञान मे पारगत था, वीतराग प्ररूपित धर्म उसे प्राणा से प्यारा था, उसके रोम-रोम मे धर्म रमा हुआ था। वह उक्त देव के डराने धमकाने तथा इस प्रकार कठोर कटु वचन कहने पर भी विचलित नहीं हुआ। उसने सोचा आपत्काल मे ही तो धर्म की कसौटी होती है। अरे ये देव मेरे शरीर को भले ही क्षति पहुचा सकता है परन्तु मेरी आत्मा का जरा भी बाल बाका नहीं कर सकता क्याकि आत्मा तो अजर अमर अविनाशी है। अरे धर्म को जो सर्वकल्याणकारी धर्म है उसे मै मिथ्या कैसे कह दू ? अत अर्हन्नक ने निर्भीकतापूर्वक देव को स्पष्ट कह दिया-

जो धर्म मेरे राम-रोम म रमा हुआ है, जिस धर्म की महिमा गरिमा को सर्वज्ञ सर्वदर्शी तीर्थकर परमात्मा ने बताई है जो धर्म मुझे प्राणो से भी अधिक प्यारा है ऐसे धर्म को मै कैसे छोड दू। कैसे मिथ्या कह दू ? मै कदापि वीतराग धर्म को मिथ्या नहीं कह सकता। आप अधिक से अधिक मेरे शरीर को नष्ट कर दे, परन्तु मेरे धर्म और आत्मा को नष्ट नहीं कर सकते, क्योकि ये दोनो शाश्वत है। शाश्वत के लिए अशाश्वत को त्याग देने मे मुझे जरा भी कष्ट नहीं होगा। इससे बढकर मेरे जीवन का कौनसा सुन्दर अवसर होगा।

देवता उसे दूसरी तरह से समझाने लगा। देखो, अर्हन्नक यदि तुम जिन्दा रहोगे तो अपने परिवार घर समाज देश सभी को आबाद कर सकोगे, सभी के पालन का दायित्व भी पूर्ण कर सकोगे किन्तु तुम्हारे मर जाने के बाद तुम्हारा परिवार घर व्यापार सभी चौपट हो जायेगे।

अगर तू जिन्दा रहेगा तो पुन धर्म अपना लेना। परन्तु तू एक बार अपने मुख से कह दे कि धर्म मिथ्या हे इसे छोड दो। अरे, तेरे प्राण बचते है तो ये सौदा भी कोई कम नहीं है।

परन्तु अर्हन्नक जरा भी विचलित नही हुआ। प्राणो का मोह उसे था ही नही, समतापूर्वक जीना उसने सीख लिया था। अर्हन्नक कहता है कि परिवार अपने आयुष्य बल पर जीयेगा, उसका अपना पुण्य बल होगा। यदि परिवार का आयु काल पुण्यबल प्रबल है तो उन्ह कोई नहीं मार सकता। मुझे तो अपने प्राणो का भी मोह नहीं है, मुझे तो एकमात्र अपना धर्म ही प्यारा है।

अर्हन्नक के साथ इतना कष्टतम व्यवहार होने पर भी चलित होते नहीं देखा तो देवमाया से अर्हन्नक की पत्नी बच्चे का रूप बनाकर उनके सामने पटका पत्नी-बच्चे करूण क्रन्दन कर रहे बचाओ बचाओ की पुकार कर रहे। देव कहता है- अरे पापी-दुष्ट अर्हन्नक तुझे अपनी पत्नी

और बच्चे पर भी दया नही आती या तो कह दे कि मेरा धर्म मिथ्या है या फिर इस तलवार से तेरे परिवार के टुकडे-टुकडे करता हूं । अर्हन्नक कहता है- अरे, देव तेरी जो इच्छा है वो ही कर लेकिन मैं कभी अपने धर्म से विचलित नहीं हो सकता । मैंने एक बार नही सैकडों बार कह दिया है कि मै अपने धर्म को कभी नही छोड सकता ।

अर्हन्नक की मन वचन काया से धर्म एवं सम्यक्त्व पर दृढता व निश्चलता देखकर देव गद्गद् हो गया । अरे अर्हन्नक, तेरी दृढता निश्चलता के आगे मेरी देव शक्ति भी तुच्छ हो गई । मैं बार बार तेरे चरणों में नमन करता हूं । वह देव अपना असली रूप बनाकर अर्हन्नक श्रावक को नमस्कार करता है और कहता है कि देवराज इन्द्र ने आपकी दृढ धार्मिकता व सम्यक्त्व निश्चलता की जो प्रशंसा देव सभा में की थी वास्तव में अनुमोदनीय है । मैंने मिथ्या अभिमान में आकर आपको इतना कठोरतम कष्ट पहुंचाया उसके लिए मुझे माफ कर दो । मुझ पापी को क्षमादान दे दो ।

अर्हन्नक कहता है- अरे, देव आपने मेरी आत्मा के साथ बहुत बडा उपकार किया है ।

देव प्रसन्न होकर कहता है आपकी कितनी दया और उदार भावना है । इसके लिए मैं आपकी क्या सेवा करूं कि मेरे में भी ऐसे गुण आयें ।

अर्हन्नक देव-दर्शन कभी वरदान दिये बिना नही जाते, आप जो चाहो सो मागो ।

अर्हन्नक कहता है- मुझे सांसारिक पदार्थों की अपेक्षा नहीं है । परन्तु देव दर्शन निष्फल नही जाते, अतः देव ने दो स्वर्ण कुण्डल प्रदान किये ।

तभी तो दशवैकालिक सूत्र में कहा है-

देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।

जो आत्मा शुद्ध धर्म मार्ग पर अविरल गति से दृढता पूर्वक बढ़ती है उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं ।

मिथ्यात्व अन्धकार है । सामान्य अन्धकार नही है । सामान्य अंधकार तो दीपक जलाकर भी मिटाया जा सकता है परन्तु मिथ्यात्व रूपी महाअन्धकार सामान्य विचार रूपी दीपक से नही मिटाया जा सकता है । यह अन्धकार तो सम्यक्त्व रूपी सूर्य के प्रकाश से ही मिट सकता हैं ।

हममें अनादि काल के गहन मिथ्यात्व अन्धकार से मुक्त होकर शुद्ध सम्यक् धर्म के आचरण से आत्मा के प्रदेश-प्रदेश को आलोकित कर सिद्धत्व स्वरूप मय बनाना है ।

इसी मंगल भावना के साथ

☆

काम, क्रोध और मोह ज्यों-ज्यों मनुष्य को छोड़ते जाते हैं
दुःख भी उनका अनुसरण करते हुए धीरे-धीरे
नष्ट हो जाते हैं ।

धर्म का मर्म

❑ कुमारी ममता वीकानेर

छत के विना मकान नहीं वनता
लेटर के विना लिफाफा नहीं वनता
जब तक मनुष्य धर्म को नहीं अपनाता
तव तक वह महान नहीं वनता

एक बार अकबर वादशाह ने हीरसुरीजी महाराज से प्रश्न पूछा कि भगवन् विश्व का सबसे सुन्दर धर्म कौनसा आप जानते है। प्रश्न कैसी परिस्थिति ले आता है ' हीर सुरी महाराज वह भी नही कह सकते थे कि जैनधर्म ऊँचा है । उन्हाने कहा राजन् अन्तकरण शुद्धित्वे इति धर्मत्वम् जिसका अन्तकरण निर्मल हो पवित्र हो दया करूणा से परिपूर्ण हो वही विश्व का सबसे सुन्दर धर्म है । सच धर्म ही जीवन का प्राण है । धर्म के विना हम अपने को कभी सफलता के शिखर पर नही चला सकते एक सेठजी थे सयोग से हमारी गुरुवर्या का चातुर्मास था गुरुवर्या जी रोज कहा करती भैय्या पर्वो के अन्दर कुछ आराधना साधना त्याग प्रत्याख्यान किया करो। पयुर्पण पर्व आने की तैयारी थी उसने सोचा महाराज राज कहते है सामायिक पोषध करो धर्म करो तुम्हे धन स्वत मिल जायेगा। धर्म करने से ही धन मिलता है । इस बार मुझे देखना है मै तो पौषध लेकर बैठ जाऊगा फिर देखता हू धर्म से धन मिलता है क्या ? दूसरे दिन पयुर्पण मे पौषध ग्रहण कर लिया अब 2-3 दिन हुए उसका मन लग गया। इधर पत्नी को बडा गुस्सा आया वह अपने पीहर चली गई । इधर सेठजी को पडौसी बुलाने आने लगे कि सेठजी तुम्हारा घर गिर चुका है । बिना पैसे का चौकीदार कुता जो तुम्हारे घर की रक्षा करता था वह भी मकान के नीचे दबकर मर गया है किन्तु सेठजी का तो एक ही निश्चय मुझे भी देखना है धर्म का परिणाम । इधर सयोग से चार चोर किसी बड सेठ के घर चोरी करके आये थे चार गधे साथ थे । गधे पर इतना भार था कि सहन नही कर पा रहे थे । अमावस्य की घोर अधियारी रात चोर जल्दी जल्दी चल रह कोइ देख न ले, दो गधे पीछे रह गय थे अब भार सहन करना उनके वस म नहीं था अन्धेरा था सेठजी का घर टूटा था दानो गधे सोने चादी की माहरो से भरे थे दानो जैसे ही टूटे हुए मकान मे बैठने लग सारी मोहरे गिर गयी। गधो को बडी शान्ति का अनुभव हुआ इधर सवत्सरी के दूसरे दिन सठजी पोषध पारकर घर गये देखा धर्म का चमत्कार सच धर्म का चमत्कार कैसा अगर लोगा के कहने म आकर घर वनवा लेता तो दरवाजा हाने के कारण गधे आते ही नहीं और नया कुत्ता ले आता तो वह गधो को घुसन नही देता भौकता तो वह अन्दर आता ही नहीं ।

हमारे लिए भी पयुर्पण पर्व आ रहे है। हम अपने अन्तकरण को शुद्ध करने का पयास करना है जो एक दूसरे के प्रति द्वेप की भावना है उसे तोड डालना है क्योकि धर्म का जन्मस्थान मैत्री है, जहॉं तक मैत्री भावना नही होगी आप धर्म को नही अपना सकते । धर्म करके अपने जीवन की सार्थकता प्राप्त करना एक शायर सच लिखता है। उस दवा से क्या लाभ जिससे न तो रोग मिटता हो न ही पुष्टता मिलती हो। उस सरोवर से क्या लाभ जिसमे न तो कमल खिलते हो न ही प्यास बुझती हो उस वृक्ष से क्या लाभ जिसमे न तो फल लगत हो न ही छाया देता हो, उस मानव से क्या लाभ जो न तो धर्म करता हो न ही मैत्री भाव को अपनाता हो । ☆

सच्चा सुख

❒ सा. श्री पद्मरेखा श्री जी म. सा., इन्दौर

विश्व के प्राणी मात्र की चाहना है कि मेरे सारे दुख मिट जाय और मुझे सुख मिल जाय । अतः वे दुःख मुक्ति व सुख प्राप्ति के लिये निरंतर प्रयत्न किये जा रहे हैं फिर भी इतना भारी भरसक प्रयत्न करने के बावजूद ना दुःखों से छूटकारा मिला है ना सुख का खजाना पाया है । कारण स्पष्ट है कि आज तक हमने यह सोचा भी नहीं है कि हम जिसको सुख मानकर जिसके पीछे भागे जा रहे हैं वह वास्तव में सुख है या मात्र सुखाभास ? ढेर सारे प्रयत्न करने के बाद भी सुखी क्यों नहीं हो रहे हैं ?

अरबों खरबों की संपति प्राप्त करने वाला भी दुःखी क्यों ? बाहर से सुखी भीतर से दुःखी है । इस सवालों के सामने ज्ञानियों का निष्कर्ष हे- मानव सुख को चाहता है किन्तु कौनसा सुख ? सुख की क्वालिटी पहचाने बिना कभी सच्चा सुख प्राप्त नहीं होता । सुख के दो प्रकार हैं :-

एक है इन्द्रिय सुख - दूसरा अतिन्द्रिय सुख

एक है वैषियक सुख - दूसरा आत्मिक सुख

इन्द्रिय सुख तीन दूषणों से दूषित है- (1) पराधीन है, (2) अल्पकालीन है (3) चित्त को मलीन करने वाला है ।

अतिन्द्रिय सुख तीन भूषणों से सुशोभित है (1) स्वाधीन है (2) शाश्वत है (3) चित्त को पवित्र करने वाला है ।

जिसे सही मायने में सुखी होना है, जिसे सच्चा सुख पाना है उसे सुख के प्रकार की प्रथम पसंदगी करनी होगी । तो आईये हम देखें इन्द्रिय सुख की विषमता और अतिन्द्रिय सुख की विशेषता ।

इन्द्रिय सुख की तीन विषमता

(1) यह सुख पराधीन है- जब भी पांचों इन्द्रियों में से जिस किसी विषय के उपभोग की इच्छा जगी तब परपदार्थ की अपेक्षा बिना सुख प्राप्ति नही होती । देखना है तो दृश्य चाहिये सुघना है तो खुशबू चाहिये, सुनना है तो सगीत चाहिये, खाना है तो भोजन चाहिये, स्पर्श के सुख में भी चाय गरम चाहिये, तो शरबत ठण्डा होना चाहिये, गर्मी में पंखा कूलर चाहिये, तो सर्दी मे रजाई हीटर चाहिये, कुछ न कुछ चाहिये, चाह बिना आह नही मिटती, जहां किसी भी परपदार्थ की चाहना है वह सुख पराधीनता के कलंक से कलुषित है,

अतः किसी ने ठीक ही कहा है

''चाह गई चिन्ता गई, मनवा वेपरवाह ।
जिसको कछु ना चाहिये, वह है शहंशाह'' ॥

(2) अल्पकालीन है- जैसे कोई भी इन्द्रिय विषय की चाह जगी और चाह जगने पर पदार्थ का उपभोग कर तृप्ति भी पायी किन्तु यह तृप्ति क्षणिक है, अल्प समय की हे । कुछ समय के लिये भोजन से भूख का दुःख मिटा किन्तु वापस छ घंटे बाद वही चाहना । इन्द्रिय सुख मे निरंतर

घटोतरी है भोग के समय भी जो आनद पहले समय मे है वह आनद अतिम समय मे नहीं है। अत यह सुख अल्पकालीनता के कलक से कलुषित है।

(3) चित को मलिन करता है- भोग व उपभोग के प्रसाधन की प्राप्ति के पहले भी हजारो विकल्पो से चित चचल व अस्थिर बनता है ओर उपलब्धि के बाद भी मिला हुआ सुख व सुख के प्रसाधन कहीं छूट न जाय कोई लूट न ले जाय, ऐसी आकुलता व्याकुलता जीव को घेर लेती है। बस सतत उसकी ही चिन्ता बनी रहती हे ओर सुख की बजाय दु ख ही खडा रहता है।

अतिन्द्रिय सुख की तीन विशेषता

(1) यह सुख स्वाधीन है- अतिन्द्रिय सुख मे किसी भी पर पदार्थ की या पात्र की अपेक्षा नहीं है। आत्मा का सुख अपने आप मे परिपूर्ण है। एक बार अतिन्द्रिय आनद की अनुभूति के बाद इन्द्रिय सुख नीरस मानते है। धर्मात्मा महात्मा व परमात्मा उसी सुख के अनुभव मे लीन रहते हे।

(2) शाश्वत है - अतिन्द्रिय सुख क्षणिक नही बल्कि शाश्वत है। एक बार प्राप्त होने के बाद कभी छूटने वाला नहीं। केवलज्ञानी महात्मा व सिद्ध परमात्मा प्रति समय नये नये सुख का अनुभव कर रहे है एव चतुर्थ गुण स्थान वर्ति सम्यग् दृष्टि धर्मात्मा व सप्तम् गुण स्थान वर्ति निर्ग्रंथ महात्मा भी उसी सुख को आशिक रूप मे आस्वादते है। त्रिकाली शुद्ध आत्म द्रव्य मे से प्रति समय सुख की नई नई पर्याय प्रगटती रहती है जिसका कभी अत नहीं है अतिन्द्रिय सुख का ऐसा कोई अखूट खजाना है।

(3) चित को पवित्र करता है- अतिन्द्रिय सुख मे ना अशाति है ना अस्थिरता हे ना मलिनता है। सुखोपलिब्ध से पहले भी शाति क फव्वारे उठते है और उपलब्धि के बाद परम शात रस का समन्दर उछलता है। परम आनन्द ओर आनन्द की ही अनुभूति है जिसका वणन केवलज्ञानी परमात्मा भी वाणी द्वारा पूर्ण रूप से नहीं कर पाते। श्रीमद् राजचद्रजी ने लिखा

जे पद श्री सर्वज्ञे दीठु ज्ञानमा
कही शक्या नहीं पण ते श्री भगवान जो
तेह स्वरूप ने अन्य वाणी ते शु कहे ?
अनुभव गोचर मात्र रहयु ते ज्ञान जो अपूर्व

जिस अनत सुखमय शाश्वत पद का श्री सर्वज्ञ भगवान अपने ज्ञान मे जानते हे फिर भी पूर्ण रूप से वाणी मे व्यक्त नही कर पाते ता फिर अन्य वाणी ता उसका क्या वर्णन करेगी ? शाश्वत सुख आध्यात्मिक सुख मात्र अनुभव गम्य ही ह। अत सुख के प्रकाश को अच्छी तरह से समझना होगा समझ कर निर्णय करना होगा ओर उसक बाद प्रयत्न करके प्राप्त करना होगा। दशवैकालिक सूत्र क चतुर्थ अध्ययन म कहा ह

सोच्चा जाणई कल्लाण, सोच्चा जाणईपावगम्
उभयमि जाणई सोच्चा, ज सेय समायरे ।

अर्थ - कल्याण का मार्ग भी जानो पाप मार्ग भी जानो दोनो मार्ग सम्यक् प्रकार से सुनकर जानो और जो श्रेयकारी लगे उस मार्ग पर चलना चालू करो हम भी परम पुरुप प्रदर्शित पथ की चाह को जगाकर सच्ची राह पकडकर आठ कर्मो से मुक्त होकर सदा शाश्वत सच्चे सुख के भोक्ता बने यही मगल कामना के साथ-

ज्ञान का दीपक जले, टले दूर अज्ञान
सच्चे मार्ग जीव चले, पावे पद निर्वाण ॥

प्राकृतिक आग से अधिक मानसिक आग की सावधानी जरूरी है।

❐ सा. पूर्णकलाश्रीजी म. सा., मालवीय नगर

इस संसार में दो तरह की आग है। एक प्रकृति प्रदत्त और दूसरी मानसिक आग। दोनों ही भयंकर और प्रलय मचा देने वाली है। प्रकृति की आग जो बाहरी पदार्थ को जलाती है, यह आग जब जलती है या जलाई जाती है तब कहीं असावधानी रह जाती है या कभी काबू से बाहर हो जाती है तो सारे घर को भस्म कर देती है। घर तो क्या कभी-कभी तो गांव के गांव भस्म कर देती है, लाखों-करोडों का माल क्षणभर में जला कर राख बना देती है।

परन्तु एक बात यह भी निश्चित है कि इस आग को भंली भांति नियंत्रण में रखा जाय, इसे सावधानी से जलाया जाय या इससे व्यवस्थित रूप से काम लिया जाय, अर्थात् इस आग पर अपना पूर्ण आधिपत्य जमा लिया जाय तो यह आग अभिशाप के बदले वरदान रूप बन जाती हे। परन्तु इस दृश्यमान प्राकृतिक अग्नि के सिवाय एक ओर अग्नि है, जिसे हम जठराग्नि कहते हैं। जठराग्नि का शरीर में होना अनिवार्य माना गया हैं। जब तक जठराग्नि ठीक काम करती है तब तक शरीर में पाचन क्रिया ठीक से होती रहती है। हम भोजन करते है, किन्तु हमारे पेट में अग्नि तत्व नहीं हो तो हमारा किया भोजन भी हजम नही हो सकता। भोजन तभी पचता है जब पेट में अग्नि तत्व हो। पानी भी अग्नि तत्व हो तो ही हजम होता है अन्यथा पानी भी नहीं पचता। इस शरीर को पांच तत्वों का बना हुआ माना जाता है। वे पांच तत्व पंचभूत भी कहलाते है। वे पांच तत्व है- पृथ्वी, पानी, अग्नि वायु और आकाश। इन पांचों तत्व मे से अग्नि तत्व तो प्रत्येक में मिल जाती है। कही पर सूक्ष्म रूप में तो कही स्थूल रूप में अग्नितत्व विद्यमान है। तेजस शरीर अग्नि का ही एक रूप है। भोजनादि पचाने और शरीर को ठीक अनुपात में गर्म रखने का काम तैजस शरीर की अग्नि ही करती है। शरीर में यदि उष्मा नहीं होगी तो शरीर में कोई गति या हरकत नहीं होगी। शरीर में उष्मा के कारण ही हाथ पैर व इन्द्रियों का संचार होता हे। शरीर की उष्मा से ही चेहरे का तेज चमकता हे। प्रत्येक शरीर में 98-98.5 डिग्री गर्मी स्वाभाविक होती है। अगर यह गर्मी कम हो जाय तो मर्यादा का अतिक्रमण कर देती है। मनुष्य का प्राणान्त होते देर नही लगती। परन्तु ताप का शरीर में बढना भी ठीक नही है। अधिक वढने पर शीघ्र ही बुखार तेज हो जाता हैं।

इस प्रकृति के अग्नितत्व का या शरीर स्थिति अग्नितत्व का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण उपयोग है। यह दोनों प्रकार की आग स्थूल हे जो

जीवन व पदार्थ की सहारक भी है तो रक्षक भी है।

जब तक मर्यादित है सावधानी म है तो रक्षक है और यदि अमर्यादित हो गई असावधानी मे है अपने नियत्रण व घेरे से बाहर हो गई तो सहारक बन गई प्रलय मचाती हे। यह बाह्य स्थूल अग्नितत्व की बात हे।

अब सूक्ष्म अग्नितत्व के सबध मे विचार करते है। इस मानसिक आग को क्रोध-आवेश कहते है और इसी सूक्ष्म अग्नितत्व को दूसरे रूप मे उत्साह और साहस भी कहते है। ये दोना ही सूक्ष्म अग्नितत्व हे। ये भी सहारक और उपकारक दोनो प्रकार के है। जब तक इस पर ज्ञान का नियत्रण रहता है तब तक यह जीवन के लिए उपकारक हाती है। लेकिन जब इस अग्नितत्व पर से नियत्रण हट जाता है इस पर कोई नियत्रण नही रहता है तब क्रोध का आवेश का रूप ले लेता है। क्राध की आग कवल उसका प्रयोग करने वाले को ही नही जलाती वह परिवार समाज देश राष्ट्र को भी जला देती है। स्वय व्यक्ति भी जल उठता है और साथ ही उसके सद्गुणो का भण्डार भी भस्मीभूत हो जाता है। एक साधक चाहे कितनी ही ऊँची साधना करता हो तपस्या करता हा किन्तु जब यह आग लग जाती है तो उसकी समस्त तपस्या और साधना को वह बात की बात मे चौपट कर देती है, अन्य गुणा का भी सफाया कर देती है। कई साधक साधना के मार्ग मे बहुत दूर तक चले जाते हे किन्तु क्राध पर उसका अकुश नहीं रहता। जब क्रोध की आग सीमा का अतिक्रमण कर देती है तब वह नुकसान ही पहुँचाती है।

एक बहुत ऊँचा पहुँचा हुआ तपस्वी साधक था। वह लम्बी-लम्बी तपस्या करके शरीर को सुखाने लगा और जब शरीर सूख कर काटा हो गया तब वह अपने गुरु क पास आया और कहने लगा गुरुदेव। अब मेरा शरीर अधिक नहीं चल सकता है। मुझे सथारा करा दीजिये ताकि म शरीर को छोडकर प्रभु से मिल सकू। मेरा शरीर इतना दुर्बल हो गया है, अब आगे मुझे और क्या करना है।

गुरु ने कहा - वत्स। अभी और पतला करो।"

शिष्य गया और थोडे दिन और तपस्या की। शरीर जब और ज्यादा सूख गया तब गुरु के पास आकर निवेदन किया- गुरुदेव अब ता शरीर बहुत ही पतला हो गया है अब और क्या करना है? गुरु ने पुन वही बात दोहराई- अभी कुछ कसर है अभी और पतला करो इसे। शिष्या गया और कठोर साधना स्वीकार करके अपने शरीर को सर्दी गर्मी मे झाक दिया। फिर लौटकर गुरु से कहा- गुरुदेव अब और कितनी परीक्षा लगे? अब तो मेरा चलना फिरना उठना बैठना भी मुश्किल से होता है। गुरु ने कहा वत्स। अभी थोडी कसर है अभी ओर क्षीण करा इसे। यह सुनकर शिष्य ताव मे आ गया। उसने क्रोध मे आकर हाथ की अँगुली ऐसे तोड दी जेस तिनका तोड देते है और गुरु से कहा आप तो मुझे घायल कर रहे हे। देखते नहीं इसमे एक भी तो रक्त की बूद नही है। अब इसे और क्या क्षीण करू? बताइये? गुरू ने कहा- वत्स मेरा अभिप्राय इस शरीर को सुखाने से नहीं था। जो शरीर 50-60 साल से तुम्हारा सगी साथी रहा है, जिसने तेरी सवा की हे जिसके द्वारा इतनी कठोर साधना की जो तुम्हारे सास के साथ चलता रहा उस शरीर पर तुम्हारा इतना भयकर क्रोध उमडा कि तुमने एक ही झटके मे उगूँली को तिनके की तरह तोडकर

फेंक दी। इस शरीर ने क्या अपराध किया ? अरे अपराध तुम्हारे मन के विकारों का, कषायों का है, उन्हें पतला करके फेंकना था। उसके बदले लगे तुम शरीर को सुखाने। तुम्हें जितना क्रोध उँगूली पर आया यदि उतना ही क्रोध किसी मनुष्य पर आ जाता तो उसकी गर्दन मरोड कर फेंकने में कितनी देर लगेगी। इसलिए वत्स तुम शरीर को सुखाओं या न सुखाओ, इसमें रक्त की बूंद हो या न हो कोई खास बात नहीं है, परन्तु कषायो पर नियंत्रण करना ही तुम्हारी साधना की सफलता है। प्रभु के निवास के लिए मन को क्षीर सागर बनाओ।

हिन्दु पुराणों में वर्णन आता है कि भगवान का निवास क्षीर सागर में है। यह बात चाहे आलंकारिक हो पर है बहुत ही महत्त्वपूर्ण। विष्णु को क्षीर सागर में ही निवास के लिए अच्छी जगह मिलती है ? वह क्षीर सागर कहां है ? तो पुराणों के अनुसार यह क्षीर सागर चाहे जहा हो। हम तो मानते है कि भक्त का मन ही क्षीर सागर है क्योंकि भगवान विष्णु का निवास स्थान तो सही रूप में भक्त के मन में माना गया है। जब तक सही रूप में मानव मन क्षीर सागर नहीं बन जाता उसमें शांति-प्रेम का अथाह मधुर रस नही भर जाता तब तक प्रभु कैसे निवास करेंगे ? प्रेम-शांति के बिना मानव मन क्षीर सागर नहीं बनेगा तो उसमें भगवान का निवास कैसे होगा ?

जैन परम्परा की बात है कि जब तीर्थंकर का जीव माता के गर्भ में आता है तो 14 महास्वप्न आते हैं उसमें प्रभु की माता एक क्षीर सागर का स्वप्न भी देखती है। क्षीर सागर भक्त के हृदय में आये तब समझ लेना कि उसके जीवन में भगवान के आगमन की सूचना है।

क्रोध लवण सागर है तो प्रेम-शांति का क्षीरसागर है। जब यह मानव मन क्षीर सागर की मधुर लहरों से ओतप्रोत हो जायेगा तभी प्रेम और शान्ति का क्षीर सागर लहराने लगेगा और तभी अपने मन मदिर में प्रभु मूरत के दर्शन होंगे।

जब दुर्योधन के मन में क्रोध का तूफान उठा तो उसने उस पर नियंत्रण नही किया और इसी कारण कुरुक्षेत्र के विशाल भूमितल पर लाखों की संख्या में नरसंहार हुआ व कौरव वश का ध्वंस हुआ।

अतः हमें प्राप्त देव दुर्लभ मानव जीवन कल्पवृक्ष और कामधेनु के समान है जिससे हर तरह की बाह्य- आन्तरिक सिद्धियां प्राप्त की जा सकती हैं, इसके लिए अन्तरंग अग्नितत्व क्रोध के रूप में रहा हुआ है उस पर पूर्ण रीति से नियत्रण रखना होगा। इसी से आत्मिक सौंदर्यता का निखार उत्तरोत्तर बढता रहेगा।

साधना वह जो अभिशाप को वरदान दे।
और बर्बर हैवान को दयालु इन्सान बना दे॥
मैं तो उसी को असल में साधना मानता हूँ।
जो आदमी को अपने बल पर भगवान बना दे॥

"पुष्प का संदेश"

❏ श्रीमती शान्तीदेवी लोढा, जयपुर

मुझे सतत है हँसना भाता ।

कटक जालो पर सोता हूँ किन्तु सर्वदा मै मुस्काता । वायु झकोरे दे दे करके है मेरा मकरन्द गिराता किन्तु नहीं मै विचलित होता, न ही तनिक भी रूदन मचाता ।

मुझे सतत है हॅसना भाता ।

रवि आकर अपनी ज्वाला से मेरा कोमल उर झुलसाता, झझा का झौका आ आकर मुझको माँ से विलग कराता, धूलिधूसरित होता हूँ मे किन्तु नहीं मै अश्रु गिराता ।

मुझे सतत है हँसना भाता ।

निर्मोही माली ले मुझको गूँथ गूँथ कर हार बनाता । मेरे उर का छेदन करके मानो वह मन मे सुख पाता । बिधा हुआ लख निज तन को मै तनिक भय से थर्राता ।

मुझे सतत है हॅसना भाता ।

मेरे जो सम्मुख आता है उस पर मै सुगन्धि बरसाता, थकित बटोही जो आते है उनमे मैं नवजीवन लाता । कमी नहीं मै जान सका हूँ क्यो कर मानव रुदन मचाता ।

मुझे सतत है हॅसना भाता ।

मरा मधु सौरम पीने को अलि आकर गुजार मचाता । रिक्त बनाता मेरे उर को किन्तु नहीं मै आह सुनाता । परहित की अभिलाषा ले मन मै अपना सर्वस्व लुटाता ।

मुझे सतत है, हँसना भाता ।

क्रूर देव पाषाण गिराकर मेरी पखुरियॉ बिखराता । मेरी दीन मलीन दशा पर नील गगन भी अश्रु बहाता । किन्तु नहीं मै साहस खोता धूलिकणो पर भी मुस्काता ।

मुझे सतत है हॅसना भाता ।

जीवन का उद्दश्य यही है हँसते हॅसते प्राण गँवाना । कुलिश शिलाओ के प्रहार सह हँस हॅस कर निज पथ बनाना । मृत्यु करे आह्वान तब भी मैं हँस हँस कर निकट बुलाता ।

मुझे सतत है हॅसना भाता । ✰

क्या ?
क्यों ?
और कैसे ?

❑ श्री राजमल सिंघी, जयपुर

आज हम उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर जिज्ञासावश प्रतिक्रमण के विविध सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में ढूंढने का प्रयत्न कर लें ।

(1) नमस्कार महामंत्र

इस सूत्र द्वारा अरिहंत परमात्मा, सिद्ध परमात्मा, आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवंत एवं साधु-साध्वी भगवंतों को नमस्कार किया जाता है क्योंकि इन पंच परमेष्ठियों को नमस्कार करने से सब पाप तथा विघ्न दूर होते हैं और यह महामंत्र सब मंगलों में प्रथम मंगल है । सभी व्यक्ति यही तो चाहते है । अतः नवकार मंत्र का जाप प्रतिपल किया जाना चाहिए एवं विशेषतः कोई भी कार्य प्रारंभ करने के पूर्व तो करना ही चाहिए । नमन विनय का सूचक हे और विनय एक आभ्यंतर तप है जो निर्जरा का कारण है । नमस्कार नम्रता का चिन्ह है, भक्ति का सूचक है, कृतज्ञता, आदर, सम्मान प्रदर्शित करने का साधन है । इस मंत्र का मन, वचन, काया की शुद्धि से जाप करने से नर्क निवारण होता हे एवं तीर्थकर नाम कर्म का वंधन होता है ।

(2) पंचिंदिअ (गुरुस्थापना) सूत्र

इस सूत्र द्वारा हम आचार्य भगवतों के गुणों का वर्णन करते हैं । किसी भी धार्मिक क्रिया के करने के पूर्व स्थापनाचार्य को स्थापित करने के लिए यह सूत्र बोला जाता है । केवल मात्र इन छत्तीस गुणों से युक्त आचार्य भगवंत ही सद्‌गुरु होते हैं, जिनका हमको आलंबन करना चाहिए । अन्यों का नहीं । इनसे उतरते उपाध्याय, साधु-साध्वी जो जैन धर्मावलम्बी है वे भी पूज्य एवं आलंबनीय है । अन्यों को सद्‌गुरु मानना मिथ्यात्व की संज्ञा में आता है जो सबसे भयंकर पाप है ।

(3) खमासमणा सूत्र

इस सूत्र द्वारा जिनेश्वर प्रभु एवं गुरु भगवंतों को वंदन किया जाता है । वंदन सदा इन्द्रियों के विकारों एवं कषायों को शान्त करके किया जाना चाहिए । मस्तकादि पाँचों अंगों को नमन करके ही वंदन किया जाना चाहिए ।

(4) इच्छकार सुहराई सूत्र

इस सूत्र द्वारा गुरु महाराज की सर्व प्रकार से भक्तिपूर्वक सार-संभाल रखने के साथ सुख साता पूछी जाती है । इस सूत्र द्वारा यह भी निवेदन किया जाता है कि भात पानी मेरे यहाँ से प्राप्त करे मुझे लाभ दें । गुरु भगवंत इस आमंत्रण को न स्वीकार करते हे और न ही प्रतिकार करते है ओर केवल कहत है कि जैसी उस समय की अनुकूलता । गुरु भगवंत जहाँ तक हो सके जहाँ से निमत्रण आता हे वहाँ यह सोचकर नहीं जाते कि मुझे निमंत्रित किया है तो अवश्य मेरे निमित्त से भोज्य सामग्री वनाई होगी जो साधु के लिए त्याज्य होती है ।
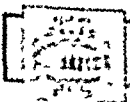
(5) इरियावहिय प्रतिक्रमण सूत्र

जैन धर्म अहिसा प्रधान धर्म है जिसमे सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव को किसी प्रकार से दुख देना या नाश करना पापमय माना गया है। अत जाने अनजाने म भी किसी जीव की अवहेलना हा गई है उसके लिए इस सूत्र द्वारा क्षमा याचना की जाती हे। इस सूत्र मे पडिक्कमामि शब्द का उपयोग किया गया है जो प्रतिक्रमण शब्द का प्राकृत पर्याय है और सक्षेप म इस शब्द का अर्थ यह हे कि मेने जो दुष्कृत किया हो उसकी मे निन्दा करता हू उसके लिए पश्चाताप करता हू और भविष्य के लिए सावधानी रखूगा कि मरे द्वारा कोई दुष्कृत न हो। इसमे प्रयुक्त मिच्छामि दुक्कड शब्द प्रतिक्रमण की भावना का बीज हे।

(6) तस्स उत्तरी करणेण सूत्र

दुष्कृत द्वारा जो पाप बधन हो जाता है उसके निवारण के लिए जो काउसग्ग किया जाता है उस हेतु इस सूत्र मे वताए गए है कि पाप कर्मो की विशेष आलोचना और निदा करने के लिए प्रायश्चित करने के लिए विशेष शुद्धि करने के लिए चित्त को कटक रहित करने के लिए काउसग्ग किया जाता है। काउसग्ग तभी फलीभूत होता है जब एक स्थान मे स्थिर रहते हुए ध्यानारूढ होकर मौन रहते हुए देह के ममत्व का त्याग किया जावे। इस क्रिया मे भौतिक वस्तुओ के विचारो को त्यागना पडेगा। कायोत्सर्ग म नमस्कार मत्र के पदो का एव अरिहत सिद्ध के स्वरूप का चितन करना चाहिए।

(7) अन्नत्थ उससिएण सूत्र

इस सूत्र मे काउसग्ग करते समय अनायास शरीर की जिन छोटी-मोटी प्रवृत्तियो से काउसग्ग भ्रग नहीं होता, वे सोलह छूट लेने का प्रावधान है और इसमे काउसग्ग करने की रीति, दृढता एव मर्यादा बताई है।

(8) लोगस्स (नाम स्तव) सूत्र

इस सून द्वारा आत्म कल्याण क हतु स आगे बढने के लिए वर्तमान चौवीस के नाम लकर उनकी हृदय पूर्वक स्तुति की जाती है जिसस सम्यग् दर्शन, ज्ञान चारित्र द्वारा मोक्ष प्राप्ति होती है। इसके द्वारा यह प्रार्थना भी की जाती ह कि चोवीसो तीर्थकर मुझे आरोग्य बोधि ओर समाधि की उत्तरातर विकास पाती हुई स्थिति द सिद्ध भगवत मुझे सिद्धि दे। नीरोगता वोधि आर समाधि की इच्छा भव राग से मुक्त होने क लिए है।

(9) करेमि भते (सामायिक सूत्र)

इस सूत्र द्वारा सामायिक ग्रहण करने की प्रतिज्ञा की जाती ह एव पाप के त्याग का पच्छक्खाण लिया जाता है अर्थात् मन, वचन काया स कोई पाप नही करना और न करवाना। इसके द्वारा पूर्ण धैर्य से सममाव मे रहन की प्रतिज्ञा की जाती है। सममाव का अर्थ हे कि शाति नम्रता, अहिसा किसी को दु ख नहीं पहुचाना। सामायिक उत्कृष्टतम तप है। समभाव मे रहने से आत्मा पर चिपके हुए सभी अशुभ कर्मो का नाश होता हे। इसके लिए हमको मन और वचन के दस दस दोष एव काया क बारह दोषा से दूर रहना पडेगा।

(10) सामाइअ वय जुत्तो सूत्र

इस सूत्र मे सामायिक व्रत की महिमा समझाई गई है कि सामायिक करने वाला जितनी बार सामायिक करता है उतनी बार श्रावक होते हुए भी श्रमण के तुल्य गिना जाता है। अत चारित्र धर्म की आराधना के लिए बारबार

सामायिक करना चाहिए। यही भावना दृढ करने के लिए सामायिक पारते समय यह सूत्र बोला जाता है।

(11) जगचिंतामणि चैत्यवंदन सूत्र

यह सूत्र गणधर भगवंत श्री गौतम स्वामी द्वारा रचित है (विशेषतः पहली दो गाथा) इसके द्वारा अष्टापद पर्वत पर बिराजे हुए चौबीस तीर्थकर बीस विहरमान तीर्थकर, प्रसिद्ध तीर्थ, सभी चैत्य प्रतिमाओं को वन्दन किया जाता है और उनके गुणों का चिंतन किया जाता है। विषय और कषायों पर विजय प्राप्त करने के लिए श्री जिनेश्वर भगवंत के चैत्यों का वंदन करना, एक अपूर्व साधन है।

(12) जंकिंचि सूत्र एवं जावंति चेइआइं सूत्र

इन सूत्रों द्वारा स्वर्ग, पाताल, मनुष्य लोक में जितने भी जैन तीर्थ हैं, जिन प्रतिमाऐं है उनको नमस्कार किया जाता है। नमस्कार की उपयोगिता ऊपर बताई गई हैं।

(13) जांवति केवि साहू सूत्र

इस सूत्र द्वारा भरत, एरावत एवं महाविदेह क्षेत्र में जितने भी साधु-साध्वी है उनको नमस्कार किया जाता है जिसकी महिमा अपार है।

(14) नमुत्थुणं (शक्रस्तव) सूत्र

शक्र इन्द्र महाराज यह सूत्र बोलकर भगवान की स्तुति करते हैं और इसके द्वारा भगवान के अद्वितीय उच्चतम गुणों का वर्णन करते हैं। चैत्यवंदन के समय यह सूत्र बोला जाता है जिससे विचार निर्मल होते है एवं भवबंधन से छुटकारा मिलता है।

(15) उवसग्गहरं स्तवन (स्तोत्र)

श्री पार्श्वनाथ प्रभु के गुणों की स्तुति रूप यह स्तोत्र श्री भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित है जो सर्व विघ्नों को नाश करने वाला है। इस स्तोत्र के अंतिम छंद में बोला जाता है कि हे प्रकट प्रभावी पुरुषादानीय, जिनका नाम ग्रहण करने योग्य है, मैंने आपकी स्त्वना भक्ति से भरपूर हृदय से की है ताकि मुझे प्रत्येक भव में सम्यक्त्व की प्राप्ति हो।

(16) जय वीयराय सूत्र

यह भगवान को की जाने वाली उत्तमोत्तम प्रार्थना है। यह प्रार्थना मन, वचन काया की एकाग्रता से की जानी चाहिए। इसके द्वारा विशेषतः निवेदन किया जाता है कि मुझे संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न हो, मोक्ष-मार्ग पर चलने की शक्ति प्राप्त हो, मेरा मन कोई भी निंदित कार्य करने के लिए प्रेरित न हो, मैं गुरुजनो के प्रति आदरभाव रखूं मैं सबका हित करूं, मुझे सद्गुरुओं के उपदेशों के अनुसार मेरा जीवन ढालने की शक्ति प्राप्त हो, प्रत्येक भव में आपकी आज्ञा के पालने की शक्ति प्राप्त हो, मेरे दुख का नाश हो, कार्य का क्षय हो, सम्यक्त्व प्राप्त हो। अंत में जैन धर्म की महानता दर्शाते हुए कहा जाता है कि सब धर्मो में श्रेष्ठ जैन धर्म जयवंत हो रहा है। जैन धर्म को सर्व श्रेष्ठ इसलिए कहा गया है कि इसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म पाप कर्म करना त्याज्य बताया गया है एवं मोक्ष प्राप्ति का तरीका बताया गया है।

(17) संसार दावानल सूत्र

यह सूत्र आचार्य हरिभद्र सूरि द्वारा रचित है। इसमें आया हुआ दावानल शब्द विचारणीय है। माता, पिता सभी सगे संवंधी संसार है, व्यापार रोजगार भी संसार हे। संसार का यह वाह्य स्वरूप है। क्रोध, मान, माया, लोभ आर

कषाय विकार आदि भी ससार है । ये ससार आभ्यतर स्वरूप है । इन दोनो बाह्य एव आभ्यतर योग से ही जीव भव भ्रमण करता है । इसको ही ज्ञानियो ने दावानल की उपमा दी है। इस ससार मे जीव कभी शाति अनुभव नहीं करता कभी कुटुब की चिता, कभी रोग की चिता, कभी राष्ट्र की तो कभी विश्व की चिता । आज मनुष्य करोडपति है तो कल भिखारी । इस प्रकार ससार दावानल (अग्नि) का स्वरूप है । यह दावानल तो अरिहतो भगवतो के उपदेशो के पालन से ही शात हो सकता है ।

(18) सात लाख सूत्र

इस सूत्र द्वारा चोरासी लाख योनियो मे उत्पन्न होने वाले सभी जीवो मे से जिन जिन जीवो की अपने द्वारा जानते अजानते विराधना की हे उसके लिए वे सभी क्षमा मागी जाती है क्योकि क्षमा मागने से दुष्कृत रूपी पाप का नाश होता है ।

(19) अठारह पाप स्थान सूत्र

जिन अठारह प्रकार के पापो के करने से कर्मवधन होता है, उनके लिए इस सूत्र द्वारा क्षमायाचना की जाती है ताकि कर्मबधन से मुक्ति मिले। ध्यान रहे सूक्ष्म पापो का तो प्रायश्चित करने से पापा का नाश हो जाता है किन्तु निकाचित कर्मो को तो भोगना ही पडता है । अत उनसे सदा दूर रहना चाहिए ।

(20) वदित्तु सूत्र

इस सूत्र द्वारा पॉच आचार श्रावक के बारह व्रत एव श्रावक के अन्य सामान्य एव विशेष धर्मकृत्यो मे लगने वाले दोपो की पश्चाताप पूर्वक एव दुवारा न हो ऐसी सतर्कता रखते हुए निदा की जाती हे । इस प्रसग म समझना पडेगा के अरिहत भगवता ने बताया है कि जिस प्रकार जेन धर्म मे साधु वही कहलाता है जो साधु जीवन अपनान की प्रतिज्ञा रूप दीक्षा लेता है, उसी प्रकार जैन श्रावक वही हा सकता है जो श्रावक के बारह व्रत अगीकार करता है । केवल मात्र जैन कुल म जन्म लेन से वह श्रावक नहीं बन जाता । इस सूत्र की सेतीसवीं गाथा मे यह स्पष्ट किया गया है कि जिस प्रकार सुशिक्षित वैद्य अपने उपचारा स रोगो का शमन करता है उसी प्रकार प्रतिक्रमण करने वाला सम्यग् दृष्टि जीव प्रतिक्रमण पश्चाताप, प्रायश्चित, निदा करके कर्म बधन का नाश करता है ।

(21) मन्नह जिणाण (श्रावक कृत्य) की सज्झाय

इसम श्रावक द्वारा करने योग्य 36 कृत्या का वर्णन हे जिसके प्रतिदिन बोलने स श्रावक को ये कर्तव्य करने की प्रेरणा मिलती हे ।

उपरोक्त विवेचन मे सक्षेप म पतिक्रमण के कुछ मुख्य सूत्रो का वर्णन किया गया ह । सही रूप से देखा जाय तो प्रत्येक जेन आराधक को इन सूत्रो का अक्षरश अर्थ समझना, सीखना एव याद करना चाहिए तभी ज्ञात हो सकेगा कि हम कौनसा सूत्र किस हतु से बोलते है ताकि उसका सुफल प्राप्त हा वरना तोते वाली रटन से तो सुफल प्राप्त होन से हम वचित रहत है । इस ओर सभी अग्रसर हो- यही मनोकामना । ✫

शान्ति समन्वय के प्रेरणा स्रोत : प्रभु महावीर

❑ सुश्री सरोज कोचर
व्याख्याता वीर बालिका महावि ,जयपुर

शस्य श्यामला भारत वसुन्धरा पर यों तो हजारों लोगों का नाम महावीर रहा है किन्तु महावीर शब्द के साथ हमारे समक्ष उस महावीर का चित्र उभरता है जो आज से अढाई हजार वर्ष पूर्व कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं मॉ रानी त्रिशला के राजमहल को अपनी किलकारियों से पुलकित करता था। बाल्यावस्था में उनका नाम वर्द्धमान था। जिसका अर्थ था बढने वाला, बढाने वाला अर्थात् जो व्यक्ति निरन्तर आगे ही आगे उन्नति करता बढता चले या संसार को उन्नति की ओर बढाता रहे उसे वर्द्धमान कहते है। प्रेम, समता, उदारता, क्षमा, सहिष्णुता, त्याग हृदय की विशालता आदि गुणो का जीता जागता रूप थे। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व काल की परिधि में वांधा नहीं जा सकता है। उनका जीवन दर्शन प्राचीन नहीं हो सकता है अतः विराट् व्यक्तित्व के धनी महावीर के जीवन दर्शन से प्रत्येक पीढी अत्यधिक प्रेरणा प्राप्त करती रही है एवं करेगी।

मानवीय सौहार्द के आलोक, विराट् व्यक्तित्व के धनी, शक्ति, शील, सौन्दर्य के अद्‌भुत प्रकाशक महावीर में पीडित मानवता और दलित शोषित जीवन के प्रति सहानुभूति प्रेम, दया, करुणा थी। उनके जीवन की अनेकों ऐसी घटनाएं है जिनसे हमने प्रेम प्रीति का पाठ सीखा है। एक वार की बात है महावीर स्वामी अपने सन्यासी जीवन में विचरण कर रहे थे। जब लोगों ने सुना महावीर उस मार्ग पर जा रहे है जहॉ चण्डकौशिक नामक भयंकर सर्प रहता है तो लोगो ने उन्हें जाने से रोका पर साहस के धनी महावीर उस बाधा से भयभीत नही हुए अपितु उसी जंगल की राह पर चल पडे जिसमें वह भयंकर विषधर चण्डकौशिक सर्प रहता था।

चण्डकौशिक ने जब यह देखा कि एक आदमी उसके बिल की ओर आ रहा है तो उसके क्रोध की सीमा नहीं रही। महावीर स्वामी के उसके बिल के पास पहुचने पर चण्डकौशिक ने महावीर के पैर को जोर-जोर से काटना शुरू किया। महावीर स्वामी क्रोधी नही हुए, प्रतिकार नहीं किया अपितु उन्होंने शान्त भाव से खडे होकर ध्यान लगा लिया। जब सर्प महावीर स्वामी को काटते काटते विष उगलते उगलते थक गया उनको जरा भी विचलित नही देखा तो वह हार कर दूर हो गया और महावीर के लिए सोचने लगा कि इस पर मेरे विष का कोई प्रभाव नहीं है उसके चेहरे पर कैसी अलौकिक शान्ति है, कैसा दिव्य तेज है, कितनी प्रेम मैत्री की धारा प्रवाहित हो रही है तो चण्डकौशिक को अपनी गलती का अहसास हुआ। आज उसने एक नया पाठ पढा लोगों को काटना छोड दिया, अत्यन्त शान्त भाव से रहने लगा। परिणामस्वरूप भय के कारण जो

उस जगल मे नहीं जाते थे उन्होने जाना शुरू किया ।

इस प्रकार प्रेम मैत्री के पाठ से सम्बन्धित अनेको घटनाएँ घटित हुई महावीर के जीवन मे । ध्यानस्थ भगवान के कानो मे ग्वाला कीले ठोकता है । गोशालक तेजो लेश्या का प्रहार करता है । इस प्रकार कितने ही उपसर्ग झेलते हैं । अपने जीवन मे उन सम्पूर्ण विषम परिस्थितियो से महावीर के मन मे क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता, घृणा का जरा भी भाव उत्पन्न नहीं हुआ अपितु इस दु खद स्थिति मे भी उनके हृदय मे करुणा मैत्री का अजस्र स्रोत लहराता है क्योकि मित्ति मे सव्वभूएसू वैर मज्झ ण केणई की पावन भावना उनके रग रग मे प्रवाहित थी । इस प्रकार महावीर स्वामी ने हमे प्रेम का मत्र दिया, करूणा की वाणी दी । आज के भौतिक चकाचौध के युग मे युवा पीढी कहीं अपने वासना मूलक सम्बन्धो से सम्बद्ध होकर पाश्चात्य सभ्यता और सस्कृति की चकाचौध से युक्त रगीन चश्मो से झाकती है तो कहीं पर महावीर की प्रेम प्रीति का रसास्वादन करती हुई सममाव मे रहती है । ऐसी दोहरी स्थिति मे जो प्रेम प्रीति का रसास्वादन कर रहे है वह सुखी है जो नहीं कर रहे है उनके कारण समाज के मानदण्डो मे परिवर्तन हो रहा है । वहाँ पर मूल्यो के ह्रास के साथ अनास्था की सस्कृति पनप रही है ।

महावीर के युग मे भी हिसा सग्रहशील प्रदर्शनप्रिय, अपहरण बलात्कार स्वेच्छाचार, प्रलोभन, अत्याचार आदि का बोल बाला था । समाज मे सम्पूर्ण बुराइयॉ व्याप्त थी । ऐसे मे महावीर ने समाज मे आमूल चूल परिवर्तन करने हेतु सघर्ष किया। उन्हाने उच्च वर्ग, भोग विलास, विषमताओ और विकारो के विरुद्ध वातावरण बनाया । उन्होने मानव विरोधी व्यवस्था का अवलोकन कर सवर्ण होते हुए भी मानवता क प्रति प्रेम होने के कारण अपने को वर्ग मुक्त किया । गृह त्याग कर सन्यास लिया । यह सन्यास जीवन से पलायन नहीं था अपितु सुखी एव समृद्ध जीवन जीना था । उनका सन्यास था जीवन क उत्कृष्ट मूल्या की प्राप्ति हेतु विश्व मैत्री की भावना उनमे उसी प्रकार समायी हुई थी जिस प्रकार दूध मे घी समाहित होता है । इस पावन मैत्री का साकार बनाने के लिए उन्होने हिसा तथा परिग्रह के त्याग पर बल दिया ।

व्यापक दृष्टिकोण के धनी महावीर से वर्तमान समाज भी प्रेम का पाठ पढकर 'जीयो और जीने दो'' की सस्कृति अपनाकर आगे बढ रहा है । प्रेम, समता, प्रीति समय की माग है उसे टाला नहीं जा सकता है । वर्तमान युग मे धर्म एव समाज मे जो विकृति उत्पन्न हुई उसके निवारणार्थ हम महावीर के पाठ को सीखकर अपनाकर परिवर्तन करने का कार्य कर रहे है । उस प्रेम के मूल मत्र के कारण ही सत्ता कानून, दण्ड नियन्त्रण के स्थान पर शनै शनै सयम हृदय परिवर्तन परिग्रह परिमाण, ट्रस्टीशिप सगठन सेवा समाज आदि के माध्यम स समस्याआ को सुलझाने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

इन विषम परिस्थितिया से ऊपर उठकर दूसरो पर दोषारोपण करने से बचने हेतु महावीर

ने महत्त्वपूर्ण बात कही कि तेरे भाग्य का विधाता तू ही है, तेरे सुख दुःख का कारण भी तू हीं है उस पर निष्ठा रखते हुए जीवन के लाभों से दूसरों को परिचित कराना होगा।

आज राष्ट्र के समक्ष जो समस्याऐं हैं, असन्तोष, विवाद, साम्प्रदायिकता आदि ताकतें उभर रही है उसके निवारण के लिए हमें उदात्त, व्यापक तत्त्वों का प्रचार करना होगा । जब राष्ट्र महावीर के सिखाये हुए तत्वों को अपनायेगा तब ही अशान्त संसार, जो शांति को चाह रहा है, उसकी प्राप्ति होगी । आज विज्ञान ने विनाश के साधनों का प्रचुर मात्रा में निर्माण कर संसार को विनाश के कगार पर खडा कर दिया है । इससे वैज्ञानिक, विचारक, समाज सुधारक, राजनेता सभी चिन्तित भी है । इसके लिए हमने प्रेम प्रीति के जिस मूल मत्र के महावीर से सीखा उसको औरों को सिखाना होगा । हमें ज्ञान, जगत एवं क्रिया जगत् के अलगाव वाद को दूर करना होगा। यद्यपि महावीर के महान् तत्वों को वर्तमान युग में हमारे जीवन में उतारने की क्षमता नही है पर हमें प्रेम का पाठ जिसमें सभी कुछ समाविष्ट है उसमें निष्ठा रखनी होगी । जबकि हमारा हर मूल्य कथनी करनी में अन्तर के कारण ढकोसला बनता जा रहा है । अहिंसा वाणी मात्र तक ही सीमित नहीं है, सर्वत्र हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है, ब्रह्मचर्य के स्थान पर जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है प्राकृतिक साधन संयम आदि के स्थान पर अप्राकृतिक साधनों को बढावा मिल रहा है । जीवन की कठिन परिस्थिति, समाज के मूल्यों में विसंगति एवं नैतिक पतन के कारण किसी न किसी रूप में चोरी की जा रही है । परिग्रह के प्रति आसक्ति बढ़ती जा रही है । इन सम्पूर्ण विकृतियों के बीच सत्य आच्छादित हो रहा है ।

आज क्षमा, मैत्री, प्रेम के पाठ को जो अपने जीवन में अपना रहा है वह समाहत हो रहा है । आज आवश्यकता है सह अस्तित्व की भावना पर जोर देने की । बदलते सन्दर्भो में मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए पुनः महावीर की विचारधारा को जीवन में उतारने की । हमारे समक्ष जो भयानक नैतिक संकट उपस्थित है उसका निवारण महावीर के जीवन दर्शन द्वारा ही सम्भव है । महावीर ने जिन मूल्यों की स्थापना की, मैत्री करूणा, प्रेम का जो पाठ पढाया सिद्धान्त रूप मे आज उसका चिन्तन तो है पर व्यवहारिक रूप मे मंजिल दूर है । मूल्यरूप शिखर दृष्टिगोचर है पर उसकी साधन रूप पगडंडिया ओझल है। कथनी में महावीर के सिद्धान्त है पर करनी में नही, तप के नाम पर प्रदर्शन है । अतः आवश्यकता है जिस गरिमा और गौरव के लिए महावीर ने सिद्धान्तों की स्थापना की उनको हृदयंगम कर आचरित करने की । जीवन का चाहे कोई भी क्षेत्र हो उसे बदलते सन्दर्भो में मनोवैज्ञानिक एवं समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए । मैत्री, करूणा, प्रेम के अजस्र स्रोत स्वयं महावीर ने कहा कि युग के सन्दर्भ में देश एवं काल के परिवेश में तथ्यों पर नये ढंग से सोचना अपेक्षित है । अतः उनसे सीखे गये सम्पूर्ण प्रेम एवं मैत्री के परिवेश को इसी परिप्रेक्ष्य में समझने देखने एवं चलने की आवश्यकता है । महावीर के जीवन में सबके प्रति एक ही भाव था, वह था एक रसता, अंतरंगता, मैत्री एवं प्रेम का । ☆

प्रभु भक्ति का प्रभाव

☐ श्रीमती सतोष देवी छाजेड, जयपुर

प्रेम पाने के लिए प्रेमी को खपना पडता है
प्रभु पाने के लिए प्रभु को जपना पडता है
सरल नही है यहाँ पर कुछ भी पाना
स्वय को पाने के लिए भी तपना पडता है।

श्री तीर्थकर परमात्मा द्वारा बताये गये प्रत्येक अनुष्ठान की आराधना आत्मा को अरिहत सिद्ध आचार्य उपाध्याय या साधु पद देने म समर्थ होती हे । अरिहत परमात्मा की सेवा से ज्ञान बढता हे प्रभु की सेवा करने का ज्ञान आत्मा के लिए हितकर और तारक बनता हे भक्ति रहित कोरा ज्ञान भले ही कितना भी मिल जाय, आत्मा मे अहकार उत्पन्न कर पतन का कारण भूत होता है । पढे हुए ज्ञानी भी यदि भक्ति द्वारा अपनी आत्मा को भगवान मे न जोड़ सके तो भव मे भटकते फिरते है ।

दूरी पर स्थित 'पावर-हाऊस' से घर की लाइट का कनेक्शन नहीं जोडा जाए, तब तक घर के कमरे मे प्रकाश नही उभरता। किन्तु कनेक्शन जोडने के बाद स्विच दबाने के साथ ही घर प्रकाश से जगमगता जाता हे । जहॉ तक अपने पूर्णज्ञान और आनन्दमय परमात्मा के साथ सम्बन्ध नहीं जोडते वहॉ तक अज्ञान और दुख मय हालत मे जबरदस्ती की जाने वाली ससार की मुसाफिरी करने से रुक नहीं सकते। सच्चिदानन्द प्रभु के साथ सम्बन्ध जुड जाने के बाद तो हम स्वय ज्ञान और आनन्द से पूरित होने लगते है ।

नीव खोदे बिना मकान बन नही सकते
थान फाडे बिना कपडे सिल नही सकते
कुपथ को छोडे बिना सत्यथ पर बढ नहीं सकते
वैसे ही राग-द्वेष को छोड़े बिना आत्म शुद्धी पा नही सकते ।

भगवान की असीम करुणा के पात्र जगत के सर्वजीव हे । इन सब जीवो के प्रति मैत्री ओर करुणा की भावना भक्त के हृदय मे भी आनी चाहिए। जा आत्मा भगवान की प्रेमी है प्रभु की भक्ति म सदा मस्त रहती है उनके प्रति पमाद भाव रखना चाहिए । जो अज्ञानी या भारीकर्मी जीव भगवान के भी निदक है, धर्म के विरोधी व विराधक हे गुण तथा गुणी के द्वेपी है, उनके प्रति मध्यस्थ भाव रखना चाहिये ।

"मानव तन पाने से कोई इसान नहीं होता, पूजा पाठ हम चाहे जितना करे, कपाय छोडे बगैर कोई भगवान नहीं होता ।

इस तरह मैत्री प्रमोद और माध्यस्थ भावा द्वारा ससार के समस्त जीवो से यथोचित सम्बन्ध रखा जाए तभी भगवान के साथ हमारा सच्चा सम्बन्ध बध सकता हे और बन्धे हुए सम्बन्ध को निभाया जा सकता हे। भगवान का भक्त भगवान से भक्ति के सिवाय कुछ भी नही मागे । ऐसी निष्काम भक्ति करने वाला भक्त तुरन्त स्वयम् भगवान बन जाता है ।

प्रभु तेरी वाणी ने मुझको अमर बना दिया
स्नेहिल प्रेम के धागो से मन को पिरो लिया
न जाने तेरी जादुमय वाणी का क्या प्रभाव
तुझ मे खोकर मैने तुमको ही पा लिया ।

जय महावीर

☆

नमस्कार महामंत्र नवकार

❐ **श्री रतनचन्द कोचर**, बीकानेर

"ॐ ह्री अ सि आ उ सा नमः" । अरिहंताण का "अ" अष्टापद का सूचक हैं ।

सिद्धाणं का "सि" सिद्धाचल का सूचक हैं।

आयरियाणं का "आ" आबू का सूचक है।

उवज्झायाणं का "उ" उज्जयंत गिरनार का सूचक हैं ।

साहूणं का "स" सम्मेतशिखर का सूचक है।

1. प्रत्येक जैन शास्त्र का पठन करते समय प्रारंभ में इस महामन्त्र का स्मरण किया जाता है।

2 यह मन्त्रों में उच्चतम मंत्र होने के कारण महामन्त्र है ।

3. नमस्कार मंत्र में दर्शन, ज्ञान, चारित्र तप होते है ।

4. परलोकगमन के समय जिसके हृदय में मैत्रीभाव और नमस्कार मंत्र होते है, उसे सद्गति अवश्य प्राप्त होती है ।

5. सारे संसार का मैं मित्र हूँ, किसी के साथ मेरी शत्रुता नही है, सब जीवों को दुःखों से मुक्ति मिलें, सब प्राणी सुखी हों, सब जीव पापों से मुक्त, दोषरहित हों ।

ऐसी भावना प्रत्येक नमस्कार मंत्र की आराधना करने वाले आराधक को रखनी चाहिये।

6 श्री नमस्कार मन्त्र के प्रत्येक से निकलने वाले प्रकाश को आत्म व्यापी बनाना है। इससे अज्ञान रूपी अन्धकार आत्मा से अपने आप भाग जायेगा ।

नमस्कार महामन्त्र का माहात्म्य

"समरो मंत्र भलो नवकार,
यह चौदह पूर्व का सार"

(1) महामंत्र सर्वोत्तम मंगल रूप और प्राणी मात्र को सच्चे सुख की ओर ले जाने वाला कुशल प्रथ प्रदर्शक है ।

(2) जिस प्रकार चुम्बक लोहे को आकर्पित करता है उसी प्रकार नवकार मंत्र के प्रभाव से आत्मा मे उच्च कोटि का वीतराग भाव विकसित होता है ।

(3) नमस्कार मंत्र के जाप के बल से साधक का चित्त जाप से ध्यान में, ध्यान से लय में, लय से समाधि में और समाधि में से उत्कृष्ट क्षयोंपशाम जन्य प्रतिभा ज्ञान में शीघ्रता से पहुँच जाता है ।

(4) नमस्कार मंत्र के जाप से परिणाम की विशुद्धि अल्प प्रयत्न से अधिक प्राप्त होती हे । इसी कारण से श्री नवकार मंत्र मंत्राधिराज की श्रेणी में आता है ।

(5) नमस्कार मंत्र का जाप करने से मनुष्य संसार में कभी भी दास, नीच या विकलेन्द्रिय अपूर्ण इन्द्रियों वाला नहीं वनता हे ।

(6) सूता बेसता उठतो जे समरे अरिहत।

दु खीयानो दु ख भागशे,

लेशे सुख अरिहत ।

तीन लोक के विवेकी, देवता, असुर, विद्याधर तथा मनुष्य सोते, जागते, बैठते, उठते या चलते-फिरते श्री नमस्कार महामन्त्र को याद करते हे ।

(7) अन्त समय मे जिसने नमस्कार महामन्त्र को याद किया है उसने सब सुखो को आमन्त्रित किया है ।

(8) नमस्कार महामन्त्र सत्व की गठडी है रत्न की पेटी है और सब इष्टो का समागम हे ।

(9) नमस्कार महामन्त्र को अग्नि आदि के भय के समय मनुष्य सभी वस्तुओ को छोडकर एक महारत्न को ग्रहण करता है ।

(10) मानसिक तथा शारीरिक दु खो से राग-द्वषादि के सताप से तप्त चारो गति के भव्य जीवो के लिए महामन्त्र सब जगह सहायक और परमार्थ बन्धु के समान है ।

(11) कुछ वर्ष पूर्व मेरे दाहिने पैर की हड्डी टूट गई मैने बिस्तर पर एक लाख नवकार मत्र के एक पद का जाप किया । तीन माह मे पैर की हड्डी जुड गई । बीकानेर के हड्डियो क डॉक्टर माथुर साहब ने कह दिया था कि तुम जिन्दगी भर चल नहीं सकोगे । परन्तु नमस्कार महामन्त्र के जाप के कारण आज मै अच्छी प्रकार से चल-फिर सकता हूँ।

(12) जीवन मे एक बार मेरे पुत्र पर आर्थिक सकट आया । मै उस समय उसके पास सूरत मे जाकर एक लाख नमस्कार महामन्त्र क एक पद का नमो अरिहताण'' का एक माह जाप किया । मेरा पुत्र उस आर्थिक सकट से टल गया।

अन्त मे, बच्चो युवा वर्ग, महिलाआ पुरुषो एव वृद्धो सभी से प्रार्थना करता हूँ कि आपको ससार मे इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है । इस नमस्कार महामन्त्र का श्रद्धापूर्वक भक्तिपूर्वक और एकाग्रता एव शुद्धता का ध्यान रखकर जाप करने से बुद्धि मन वाणी तथा देह सब पवित्र बन जायेगे । ✰

जिस बात को तुम्हारा मन जानता है कि झूठ है
उसे कभी मत बोलो, क्योकि झूठ बोलने से स्वय
तुम्हारी अन्तरात्मा ही तुम्हे जलायेगी ।

जिसका मन सत्यशीलता मे मग्न है
वह तपस्वी से भी महान् और
दानी से भी श्रेष्ठ है ।

खुद समझो और समझाओ

❑ श्री आशीष कुमार जैन, जयपुर

मनुष्य जीवन क्षणभंगुर है और भवसागर बहुत ही विशाल एवं विकराल है। मानव भव की दुलर्भता, क्षणिकता, उपयोगिता एवं संसार की असारता, भयंकरता का बोध कराने हेतु ज्ञानी भगवन्तों ने जड-चेतन का भेद समझाकर हम पर महान् उपकार किया है।

जीव के संसार परिभ्रमण का एकमात्र कारण अज्ञान है। आत्मा जो कि अनंत शांति एवं शक्ति का पुञ्ज है, जिज्ञासा, रूचि एवं श्रद्धा के अभाव में अपने सिद्ध स्वरूप को समझ नहीं पाता। नतीजन वह पौद्गलिक सुखों को ही वास्तविक सुख समझ कर उनके पीछे दीवाना बन जाता है।

प्रत्येक संसारी जीव जिनकी दृष्टि बहिर्मुखी होती है उनमें स्वभावतः दो लालसाएं प्रबलता से विद्यमान रहती है- दुःख से निवृति और सुख प्राप्ति की। अपनी चिन्ता, भय एवं असुरक्षा की भावना के प्रतिकार के लिए, वासनाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य निरन्तर धन के पीछे भागता रहता है। अपनी कल्पना एवं इच्छा के वश होकर व्यक्ति उन सभी भोगोपभोग की वस्तुओं को हस्तगत करना चाहता है, ज्ञानी की दृष्टि में जिनसे मिथ्या सुख का तनिक एवं क्षणिक आभास होता है। जीव का यह मतिभ्रम उसे सहज आत्मिक आनन्द से वंचित कर देता है।

पूर्वकृत पुण्योदय एवं परिश्रम से जब व्यक्ति को कुछ इष्ट प्राप्त हो जाता है तो वह उसका अधिकाधिक संग्रह करना चाहता है। यही आसक्ति परिग्रह वृति जीव को पतन के मार्ग पर लाकर धन की दुर्दमनीय तृष्णा के भंवर में धकेल देती है।

तृष्णा के इस भंवर से मुक्ति के लिए धर्म ही एकमात्र आलम्बन है। सुदेव गुरु और शुद्धधर्म का पुण्य योग मिलने पर व्यक्ति की कल्पनाओ एवं इच्छाओं पर लगाम लगती है और वह किसी बोधगम्य बिन्दु पर ठहर जाता है। मन को शून्य क्षण के लिए भी स्वीकार्य नहीं है। इस प्रकार जब मन तृष्णा और वासना से पूर्णतः या अशंरूप से रहित हो जाता है तब उसमें आत्मा के उत्थान के लिए रचनात्मक शुभ विचारों का समावेश हो जाता है।

यथार्थ धर्म वही है जो जीव को संसार क प्रति अरूचि उत्पन्न कर मुक्ति मार्ग की ओर प्रवृत करे पर कलिकाल का दुष्प्रभाव हम धर्म भी धन के हेतु से कर रहे हैं। नीतिकारों ने 'धनाद् धर्म ततः सुखम्' अर्थात् धन से धर्म से सुख की प्राप्ति बताई है किन्तु हम धर्म से धन की इच्छा कर सुख पाना चाहते है।

वर्तमान में ऐसे पूजन महापूजनो का प्रचलन बढ रहा है जिनमें देवी देवों की मुख्यता हं। विपुल मात्रा में सुखों की गारन्टी देने वाले स्तोत्रों चालीसों की नई रचनाएँ कर उनका व्यापक प्रचार किया जा रहा है। बेचारा भोला भक्त इनके भ्रमजाल में फंसकर तप, त्याग, प्रभु भक्ति को
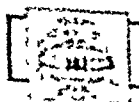
उपेक्षित कर, आखे मूदकर इनका रटन किए जाना है । 'इण भजने सुख नाहि' परन्तु ऐसी आधारहीन, विवेकहीन शास्त्र विपरित भक्ति से भौतिक सुख भी नही मिल पाता है, आत्म कल्याण तो बहुत दूर की बात हे । ऐसी विपम स्थिति से उबरन का एक ही मार्ग है याचना रहित जिनभक्ति आत्मज्ञानी गुरु भगवन्तो की उपदेश धारा का श्रवण एव अनुसरण ताकि हमारी धनलिप्सा एव विषयाभिलाषा नियन्त्रित रहे । कहा भी हे -

प्रेम हो तो वस प्रभु भजन मे होना चाहिए
जो यने विषयो के प्रेमी, उनको रोना चाहिए।

धन साधन है साध्य नहीं है । यद्यपि स्वय धन मे कोई बुराई नही हे, धन की तीव्र लालसा बुरी हे । कोई भी धर्मशास्त्र धन के विरुद्ध नहीं है। दिल मे सतोष वृति रखकर न्याय नीति परिश्रम से उपार्जित धन ससार की व्यवहारिक अनिवार्यताओ एव आवश्यकताआ की पूर्ति का साधन हे । हमारा सिद्धान्त 'आय के अनुसार व्यय' का होना चाहिए ताकि बढते खर्चो की पूर्ति के लिए धन के पीछे अन्धी अतहीन दोड रुक सके । ससार मे निश्चित, निर्भय एव सुखी रहने का यह अमोध मत्र है जिसका प्रभाव किसी दैवीय सिद्धि से भी कई गुणा अधिक है ।

हमारी बदनसीबी है कि भाषा का ज्ञान न होने के कारण हमे सस्कृत के श्लोक समझ नहीं आते, गुरु भगवन्तो क प्रवचन सुनने की इच्छा, रुचि, फुर्सत नही सत्साहित्य स्वाध्याय के पति रूझान नही । इस विपम समय मे हम सबस अधिक प्रभावित कर रहे है टी वी सीरियल एव फिल्मे । अत हम एक फिल्मी गीत का निम्न पक्तियो -

खुद समझो ओर समझाओ, थोडे मे मोज मनाओ,
दाल-रोटी खाओ, प्रभु के गुण गाओ ।

को यदि गुनगुनाए एव अपनाए ता जीवन म सन्तुष्टि प्राप्त कर प्रसन्नता से आत्म कल्याण का सुपथ प्रशस्त कर सकते है ।

वर्तमान के इस व्यस्त जीवन मे घण्ट दा घण्टे धर्म आराधना के लिए कठिनता स मिलत ह अगर उन्हे भी अर्थ के लिए ही व्यर्थ कर दिया ता आत्मा सद्गति कैसे प्राप्त करेगी ? हमारा पावन कर्तव्य है कि स्वय के साथ-साथ अपने परिवार जन एव इष्ट मित्रो को आत्म कल्याण क लिए सावधान एव प्ररित करे । दुखमा दुखमा नामका छट्ठा आरा अब निकट है जिसके भयानक दु खा का वर्णन सुनकर कलेजा मुँह को आता ह । अत सभी आत्माएँ जिनधर्म की सम्यक् आराधना कर सद्गति एव सिद्धिगति के शाश्वत् सुख को उपलब्ध करे, *यही शुभेच्छा ।*

☆

कोई काम अशक्य नहीं है
पुरूषार्थ और उद्यम मे प्रत्येक काम मे
सिद्धि देने की शक्ति है ।

उधार, धर्म में नहीं चलेगा

❑ श्री गुणवन्त मल सांड, जयपुर

आज की व्यस्त एवं तनावग्रस्त दुनिया में लोग जल्दीबाजी या लापरवाही में उलझ जाते है एवं दोष प्रभु या यों कहिये क्षेत्रपाल जी से किसी कार्य सिद्धि अथवा किसी वस्तु की कामना करते है और प्रसाद या कुछ रकम चढाने की बात करते है लेकिन कार्य सिद्धि पश्चात् बोले हुए चढावे की पूर्ति करना भूल जाते हैं, यह बिल्कुल गलत हैं। अपनी श्रद्धा या हैसियत में रहकर रकम बोलना अथवा चढाना चाहिये ।

मंदिर अथवा जनोपयोगी कार्य के लिये बोला हुआ पैसा तुरन्त या जल्दी ही जमा कराना चाहिये । देव द्रव्य, साधारण अथवा किसी भी प्रकार का जो पैसा बोला या लिखाया है वह कभी भी अकारण उधार नही रखना चाहिये । इसमें वहुत दोष लगता है ।

मेरे पास ऐसे सैकडों उदाहरण है जब लोग बोला हुआ पैसा नहीं चुकाने के पश्चात् परेशानी मे पाये जाते है । अक्सर यह देखा गया है कि जिस प्रकार किसी व्यापारी का उधार बढ जाने पर वह और उधार में सामान देना बन्द कर देता है उसी प्रकार जब तक हमने पहले का हिसाब चुकता नहीं किया तो प्रभु भी आगे से महरबान कम ही हुए हैं ।

मैं आपको स्वयं का ही उदाहरण दे रहा हूं। एक वार मेरे छोटे भ्राता, जो डाक्टर हैं, की पत्नी ने नाकोडा में किसी कार्य के सम्पन्न होने पर ठंडे पानी की मशीन देने की बोल दी। वापस विलायत चले गये । उसके पश्चात् 4-5 साल तक हर साल की भांति आते रहे । एक बार मेरे से बोला भाई साहब 4-5 साल से मैं जिस किसी कार्य मे हाथ लगाता हूं असफल हो रहा हूं जबकि हर साल नाकोडा जी के दर्शन भी करता हूं । मैंने उससे पूछा क्या तुमने कभी किसी देव को कुछ चढाने का बोला था ? उसकी पत्नी तुरन्त बोल उठी, मैंने ठंडे पानी की मशीन बोली थी वह चढाना भूल गये। उसी समय हम लोगो ने बाजार से मशीन खरीद कर नाकोडा जी भिजवाई । उसके बाद से तो बोलता है भाई साहब सारे कार्य बहुत अच्छी तरह चल रहे हैं वाकई धर्म में उधार नहीं चलेगी ।

श्री माणिभद्र जी की साधना के मंत्र

(1) ॐ आं क्रों ह्रॉ ह्रॉ (द्रॉ द्रॉं) क्ष्वीँ क्ष्वीँ ब्लूँ ऐं ह्रॉसौं ॐ नमो भगवते श्री माणिभद्राय क्षेत्रपालाय कृष्णवर्णाय चतुर्भुजाय जिनशासन भक्ताय हिलि-हिलि, मिलि-मिलि, किलि-किलि चक्षुर्मयाय ठ : ठ : ठ : स्वाहा ।

विधि : प्रथम दिन आयम्बिल, फिर अट्ठम, फिर आयम्बिल तप करके पांच दिन में 125 माला ।

(2) ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नमो माणिभद्राय मम वांछित पूरय पूरय सर्व वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : ब्रह्म मुर्हुत में 7 दिन तक 1 माला गिनें ।

अहिंसा से ही विश्व शान्ति

(अहिसा के अग्रदूत भगवान महावीर)

❏ श्री विनित साड, जयपुर

आज की दुनिया स्वार्थ से अन्धी बन गई है । इस स्वार्थी दुनिया मे प्रत्यक्ष होने वाले अन्याय से अशान्ति दिख रही है । दूसरो को कैसे ? दूसरो को नामोहरण करना आदि विचार मे जी लगा है और इसीलिए दुनिया मे आपस मे वेर, देश देश मे द्वेष और युद्ध का प्रसग आ रहा है । इस समय शान्ति रखने का प्रयत्न दूसरे साधनो से नहीं होगा । किन्तु सिर्फ अहिसा मे ही साध्य है । जब तक सब मे द्वेष और हिसक वृत्ति कम नही होगी तब तक कितनी ही शाति प्रस्थापक सघ की स्थापना करेगे तो भी उसको यश आने वाला नही है ।

दूसरो के ऊपर अत्याचार से विजय करने से तो प्रेम से विजय प्राप्त करना ज्यादा दिन टिकन वाला है और उसी प्रेम को अहिसा कहते है । इस अहिसा पालन से जो शान्ति प्रस्थापित होगी वही अनत सुख देने वाली उन्नत करने वाली सभी जगल को प्रेम मे बाधने वाली होगी । लेकिन जब तक ''अहिसा परमो धर्म'' इस परम श्रेष्ठ मत्र का सभी जगह जयघोष नहीं होगा तब तक दु ख द्वेष हीनता दीनता और अधोगति यह जगत को चिपकी हुई है । इसमे बिल्कुल सदेह नहीं है । भ महावीर न तो ' अहिसा परमो धर्म''इस पूर्व परम्परागत वचन का सब जगह प्रसार किया । उसको जिस भाग्यवान ने अगीकार किया वे सभी सुख सपन्न और उन्नति करके अपने देश को उन्नत किया है ।

लेकिन जब अहिसा का लोप होकर के जनता मे हिसक प्रवृत्ति हुई तभी से देश का वैभव कला कौशल, सपत्ति, सत्ता, धर्म, नीति ओर सर्व सुखदायी शान्ति बिल्कुल नष्ट हो गयी है । जिसके हाथ मे बकरा वह खलिक, इस न्याय से बलवान निर्बल को, श्रीमत गरीब को और स्वतन्त्र परतन्त्र को सता रहे है ।

शक्ति सम्पत्ति, सत्ता इसमे मदोन्मत बन करके दूसरो का रक्त शोषण कर रहे हे ओर इसलिए अत्याचार ओर अन्याय इसकी परमावधि हो गयी हे । हिसक प्रवृत्ति से ही आज हुई विकट स्थिति कोई भी अस्वीकार न कर सकेगा ? इसके बदले अहिसा मे शाति प्रस्थापित करने मे कितनी प्रबल शक्ति अहिसा तत्व मे है देखना । महात्मा गाँधी व प नेहरू के अहिसा तत्व से ही भारत देश स्वतत्र हुआ । म गाँधी न कहा कि ''भगवान महावीर अहिसा के अवतार थे । उनकी पवित्रता ने ससार को जीत लिया था । महावीर स्वामी का नाम यदि किसी भी सिद्धान्त के लिए पूजा जाता है तो वह अहिसा ।'' दूसरो को दु ख नही देना यह भगवान का उपदेश सब लोगो ने अत करण म किया तो शान्ति ओर चैन हान मे कितनी दर लोगी ? राजा प्रजा पर धनवान गरीब पर दया दृष्टि से देखने लगे तो सभी जगह शान्ति होगी । वही अहिसा परसो धर्म'' महामत्र की विजय हे ।

भगवान महावीर ने कई बार अहिंसा के अग्रदूत रूप में अपना परिचय दिया है। उसी को दर्शाती यह कथा- एक बार भगवान महावीर घने जंगल में कठोर तपस्या कर रहे थे, तभी एक बन्दर ने आकर उनके शरीर पर कई बार पंजे मारे, लेकिन भगवान अपने ध्यान में लीन रहे, जब भगवान ने आँखे खोली तो वह बन्दर भेष बदलकर बोला- ''मैं जंगल का देवता हूं तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हूं अब आपको जगल में कोई हिंसक प्राणी नही सताएगा।'' इस पर भगवान ने मंद मंद मुस्कुराते कहा कि मेरा शरीर तो किराये की कोठरी के समान हैं। मुझे अपने शरीर से क्या लेना देना ? यदि कोई हिसक प्राणी मुझे शिकार बनाएगा तो वह कम से कम अपनी भूख का अंत तो कर पायेगा। ऐसे विचारों के धनी भगवान महावीर के बारे में जितना कहा जाए कम है जितना लिखा जाए कम है क्योंकि महावीर किसी व्यक्ति का नाम नहीं वह तो भारत की गौरवमय उज्जवल संस्कृति है जिसने विश्व मे भारत का नाम किया।

महावीर की प्रस्तुति शब्दो व लेखों का नही अनुभव का विषय है। ☆

कन्या व दहेज

❐ सुश्री अंजू जैन, जयपुर

दहेज समाज के लिए कलंक ही नहीं अभिशाप भी है, दहेज के कारण न जाने कितने ही घर उजडे हैं। कहने को हम आधुनिक हैं लेकिन इस दहेज प्रथा से आज भी जौंक की तरह चिपके हुए हैं। आज कई खतरनाक बीमारियों का इलाज आसान हो गया है, लेकिन इस दहेज रूपी वीमारी का कोई इलाज नहीं हैं। यहाँ तक कि शिक्षा भी इस बीमारी को समाप्त नहीं कर सकी। आज के आधुनिक युग में नारी-पुरुष के समान मानी जाती हैं। नारी भी उतनी ही शिक्षा प्राप्त करती हैं जितनी कि पुरुष, माता-पिता अपनी लडकी पर उतना ही खर्च करते हैं जितना लडकों पर, आज लडकी उस क्षेत्र में कदम रख चुकी हैं, जहाँ पुरुष का साम्राज्य था। लेकिन फिर भी यह कैसी विडम्बना है कि इतना सब होने के बाद भी कन्या पक्ष वालों को वर पक्ष को कन्या के साथ धन भी देना पडता है, इस प्रथा को समाप्त होना ही चाहिए। अगर यह दहेज प्रथा समाप्त न हुई तो न जाने कितनी ही लडकियों का जीवन बर्बाद होता रहेगा।

पंचों करो पंचायती अरू दहेज की मेटो प्रथा होवे सुखी कथाजगत मे, व्यर्थ की नही हो व्यथा।

जब तक दहेज प्रथा समाज में व्याप्त है तव तक लडकियों का जीवन सुखी नहीं है, दहेज प्रथा खत्म करना ही होगा, शिक्षित लोगों को आगे आना होगा, इसमें सामूहिक विवाह पद्धति उत्तम उपाय है। ☆
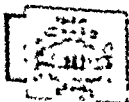
जीवन का सार

❑ श्री दर्शन छजलानी, जयपुर

1. मनुष्य के रूप मे परमात्मा सदा हमारे सम्मुख है, उनकी भक्ति करो ।
2. दूसरा के हित के लिए अपने सुख का भी त्याग करना सच्ची सेवा हे ।
3. भूतकाल से प्रेरणा लेकर वर्तमान म भविष्य का चिन्तन करना चाहिये ।
4. जब तुम किसी की सेवा करो तब उसकी त्रुटियो को देखकर उससे घृणा नहीं करना चाहिए ।
5. आलसी को सब काम कठिन लगते है परिश्रमी को आसान ।
6. अन्धा वह नहीं है जिसके आँखे नहीं, अन्धा वह है जो अपने दोषो को ढकता हे।
7. चिन्ता से रूप बल ओर ज्ञान का ह्रास होता है ।
8. जिस तरह कीडा कपडो को कुतर डालता है, उसी तरह ईर्ष्या मनुष्य को ।
9. क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चाताप् पर समाप्त होता है ।
10. नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश मे हो जाते है ।
11. सम्पन्नता मित्रता बढाती, विपन्नता उसकी परीक्षा करती है ।
12. एक वार निकले वोल वापस नहीं आ सकत, अतएव सोचकर बोलो ।
13. तलवार की चोट उतनी तेज नहीं होती, जितनी जिव्हा की ।
14. धीरज के सामने भयकर सकट भी धुएँ के बादला की तरह उड़ जाते है ।
15. मनुष्य के तीन सद्गुण है- आशा विश्वास और दान ।
16. मनुष्य की महत्ता उसके कपड़ो स नहीं किन्तु उसके आचरण से जानी जाती है ।
17. दूसरो को गिराने के प्रयत्न मे तुम स्वय गिर जाओगे ।
18. बुद्धिमान दूसरो की त्रुटियो से अपनी त्रुटि सुधारते है ।
19. घर मे मेल रहना पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है ।
20. प्रेम मनुष्य को अपनी ओर खीचने वाला चुम्बक है ।

☆

ऐसी बानी बोलिए

❏ सुश्री संजीता कोचर, बीकानेर

मनुष्य का समस्त व्यक्तित्व उसकी बोली में झलकता है । मधुर वाणी सबको प्रिय लगती हैं। शिशु की तुतली बोली में जो मिठास है वह किसको प्रियंकर नहीं लगता । सज्जन और विवेकी मनुष्य अपनी वाणी से जन मानस को प्रभावित कर देते है । संस्कृत मे उक्ति है 'वचन का द्ररिद्रता' बोली में द्ररिद्रता क्यों ? इसमें आपका पदासीन व्यक्तियों से आनन-फानन में अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। परन्तु यह चतुराई क्षणिक होती है ।

बोली में सरलता और विनम्रता दूध शक्कर के समान योग होने से वह जन-जन प्रिय हो जाती है ।

बडी-बडी सभाओं में वचनों की पुष्प वृष्टि करने वाले चतुर भाषणकर्ता सबको रिझाने में सफल हो जाते हैं ।

कटुवाणी का घाव तलवार के घाव से भी अधिक पीडाकारक होता है । कडवी बोली से परिवार और समाज टूटते हैं। राष्ट्र-राष्ट्र के मध्य में दरार पड जाती है। युद्ध और संघर्ष होते रहते है। अतः निष्कपट भाव से बोलना रुचिकर है ।

मधुर बोली के संबंध में संत कबीर ने कहा हे-

ऐसी वोली वोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आप ही शीतल होय ॥

सत्य प्रिय भाषा में प्रकट करना चाहिए । यदि हमें किसी सत्य को प्रकट करना भी है तो प्रिय भाषा में प्रकट करना चाहिए। यदि हमें किसी की बात पसन्द नही है तो हमें प्रिय और मधुर, शालीन और गरिमा युक्त भाषा शैली मे उसका खंडन करना चाहिए । हमारे महर्षि कहते हैः-

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् मा ब्रूयात सत्यम् प्रियम् ।

सत्य कहिए, प्रिय कहिए, सत्य को भी अप्रिय भाषा में न कहिए ।

कटु बोली बोलने वालों पर व्यंग्य करते हुए संत रहीमदास जी कहते हैः-

रहिमन जीहवा बांवरी, कह गई सरग पताल ।
आप कही भीतर गई, जूती खात कपाल ॥

यह जीभ बेचारी सरग-पताल अर्थात् बकवास करके मुंह के भीतर चली गई, परन्तु इसका फल यह हुआ कि सिर पर जूतियां पडी ।

निष्कर्ष यह है कि वाणी में मिठास मनुष्य के व्यक्तित्व को निखार देता है । कहा गया है- मधुर वचन है- माखन मिश्री । अल्प भाषण प्रिय लगता है । प्रसिद्ध साहित्यकार डेल कार्नेणी अपनी विश्वविख्यात पुस्तक- ''लोगों को कैसे प्रभावित करना'' में लिखते हैं- ''आप दूसरों की वात प्रसन्नता से सुनो, और अपनी वात थोडे ओर मधुर शब्दों में कह दो- आपकी लोकप्रियता बढेगी । ☆

जैन नेतृत्व एवं अपेक्षाएं

❑ श्री सुशील कुमार छजलानी, जयपुर

हम बहुत ही विषम काल मे जीवन जी रहे है। यह तो जिन शासन की बलिहारी है कि हम बहुत सी विसगतियो से बचे हुए हे। जिन शासन की राह मे प्रकाशदीप जलाए रखने वाले उपकारी मुनिवृद के उपकारो एव उनके मार्गदर्शन से आज भी जैन समाज मार्गानुसारी जीवन जी रहा है। अपवाद हो सकते हे।

हम यदि जागरुक होकर दृष्टिपात करे अपने आस-पास की घटनाओ का जो अपने घर से प्रारम्भ होकर समाज मे, शहर मे राज्य मे एव देश तक घटित होती है तो हमे कुछ विचार करने को अवश्य विवश कर देती है। हमारा सर्वव्यापी अनूठा जीवन-दर्शन हमे खाली-खाली सा प्रभावहीन लगने लगता हे। जीवन मे इतने मत्र-तत्र, साधना जप-तप अपना प्रभाव क्यो नहीं प्रकट करते। यदि हम अपने घर से ही प्रारभ करे और देश तक घटित होने वाले घटनाक्रमो को देखे तो हम पाएगे कि जैन समाज की उसके उच्च मूल्या की जैसे आवाज दब-सी गई है।

हमारे सर्वव्यापी उत्कृष्ट विचारो तथा आचारो से जो हमारी एक पहचान होनी चाहिए थी न जाने वह कहा खो गई है।

जन-तत्र मे हम जी रहे है। इस तत्र मे आपकी पहचान एकता एव सगठन हे। आज आल इडिया स्तर पर ऐसे तेजस्वी जैन व्यक्तित्व नहीं दिखते जिन्हे हम अपना रहनुमा कह सके और जिनके व्यक्तित्व से हम अपनी पहचान बनाए रह सके तथा समाज मे या राजनीति म आई विकृतियो पर अकुश लगा सक।

यह सवाल हमारे सबके लिए आत्म निरीक्षण का है यदि रोजी-रोटी को छाडकर सस्कृति की बात करने की किसी को आवश्यकता नही है इस पर चर्चा करना निरर्थक हे। आज हमारी अनेकातवाद वाली दृष्टि न जाने कहा ओझल हो चली है।

मे समझता हूँ शीर्ष पर बैठे जैन साध सस्था के सुयोग्य स्तभ, विद्वान विचारक समाज के योग्य समय को पहचानने वाले आगवान लोग समय की गति को राजनीति को हमारी धर्म नीति के सदर्भ म अवश्य देख रहे होगे- यह बात अलग है वे कुछ विवश से कुछ किकर्त्तव्यविमूढ से इन परिदृश्यो को देख रहे है।

मेरे मन मे कुछ जिज्ञासाए है जिनका मे इनसे कुछ उत्तर पा सकू तो सतोष होगा। पिछल कुछ माह से समाचार पत्रो से यह पढने को मिल रहा है कि हमे अल्प-सख्यक घोषित कर दिया गया है। मैने कभी हमारे आगेवानो से इस विषय पर विचार नही सुने कि इस सबका क्या फायदा हे। मेरा आशय ये नही है कि हमे राजनीति म दखल देना चाहिए परन्तु हमारे विचारो को या सस्कृति को प्रभावशाली बनाए रखने के लिए हम राजनीति से उदासीन नहीं रह सकते। भले हम

शेष भाग पृष्ठ 88

स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर

❑ सुश्री सरोज कोचर, शिविर संयोजिका

वित्तस्य पात्रे व्ययः धन को सत्पात्र में व्यय करना या सत्पात्र हेतु दान में देकर उसका उत्थान करना धर्म का निष्कपट आभूषण है। इस तथ्य को मध्य रखते हुए परम श्रद्धेय क्षेत्रियोद्धारक वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य श्री इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म सा. की पावन निश्रा में आपके ही सदुपदेश से स्थापित साधर्मी सेवा कोष के तहत प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 5 जून से 21 जून, 1998 तक निःशुल्क स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन में किया गया।

जांति-पांति, वर्ग, सम्प्रदाय से दूर समाज की ऐसी जरुरतमन्द बहनें जो स्वावलम्बी बनकर स्वाभिमानयुक्त जिदंगी व्यतीत करना चाहती हैं, पर अर्थ, प्रशिक्षण, उचित ज्ञान, तकनीक, साधन, दिशा-निर्देश के अभाव में वे ऐसा कर नही पाती। उन्हें विकास की अग्रधारा में जोडने हेतु श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ द्वारा संचालित इस साधर्मी कोष के माध्यम से अन्य कल्याणकारी कार्यो के साथ-साथ रोजगार उत्पन्न करने हेतु महिला उद्यमिता प्रशिक्षण का कार्य निरन्तर किया जा रहा है। इसके लाभकारी परिणाम भी हमारे समक्ष आ रहे हैं।

इस वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न परिक्षाओ के कारण इस शिविर की अवधि 15 दिन की रखी गई जिसमें 706 शिविरार्थी बहनों ने भाग लिया। हमारा स्वयं का, समाज का एवं अर्थव्यवस्था का हित इसी में है कि हम अधिक से अधिक बहनों को स्वावलम्बी बनाकर रोजगार के नवीन साधन उपलब्ध कराये। इसको ध्यान में रखते हुए इस शिविर में सिलाई, पाक कला, मेहन्दी, मोती के आभूषण, कढाई, साफ्ट टॉयज, फल संरक्षण, पर्स, बैग, सिलाई, पॉट पैन्टिंग, कलमकारी पैन्टिंग, मधुबनी पैन्टिंग, पारम्परिक कढाई, ऊन के खिलौने का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में विभिन्न कलाओ का प्रशिक्षण निम्नलिखित प्रशिक्षकों ने निःशुल्क दिया अतः वे अभिवादन के पात्र हैं।

(1)	कमलकारी, मधुबनी पैन्टिंग एवं पारम्परिक कढाई	कु गरिमा वर्मा
(2)	डाइज, फैब्रिक एवं पॉट पैन्टिंग	कु. रेणु शर्मा
(3)	पर्स, बैग एवं पाक कला	श्रीमती वन्दना जेन
(4)	ऊन के खिलौने एवं पाक कला	कु. सुमिता सोनी
(5)	मोती के आभूषण	श्रीमती कुमुद जैन
(6)	सिलाई	श्रीमती अभिलापा जैन
(7)	कढाई	कु. मीनाक्षी सोनी
(8)	साफ्ट टॉयज	कु पिकी एव कु सोना
(9)	मेहन्दी	कु. प्रिया सोनी

शिविर के सफल सचालन, अनुशासन, व्यवस्था आदि मे कु आशा बसल का विशिष्ट सहयोग रहा तथा शिविरार्थी बहनो कु मुन्नी, कु राखी गर्ग-एव कु रीना अग्रवाल कु नमीता शर्मा का प्रशसनीय योगदान रहा ।

दिनाक 12 7 98 को परम पूज्य साध्वी जी श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म सा की पावन निश्रा मे शिविर का समापन समारोह सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी के मुख्य आतिथ्य मे हुआ ।

समारोह म परम पूज्या साध्वीजी श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म सा ने मगलाचरण किया। परम पूज्या साध्वी जी श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म सा ने महिला उद्यमिता की आवश्यकता पर बल देते हुए सस्कार निर्माण के लिए बल दिया । सघ मत्री श्री मोतीलाल जी भडकतिया ने इस कोष एव शिविर के ऊपर प्रकाश डालते हुए कहा कि रोजगार प्राप्त करन की अपेक्षा रोजगार उत्पन्न करना अवश्यक है । इसीलिए निरन्तर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता हे । सिलाई की नि शुल्क कक्षाए पूरे वर्ष चल रही हे।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री हीराभाई चोधरी ने शिविर मे आयाजित विभिन्न परिक्षाआ मे प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करन वाली शिविराथिया को पुरस्कृत करते हुए कहा कि ' लक्ष्मी उद्यमी पुरुपा का ही वरण करती हे । अत आपने जो भी सीखा हे उसस अर्थ का उपार्जन करने क लिए छोटे-छाट उद्याग लगाइय । जिस क्षेत्र मे आप आग बढना चाहते हे उसके प्रशिक्षण की यदि व्यवस्था नहीं है तो वताइय हमारा उसके प्रशिक्षण की व्यवस्था हतु प्रयास रहेगा ।'' शिक्षण मत्री श्री गुणवन्तमल जी साड न सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि प्रशिक्षक विशष रूप स धन्यवाद के पात्र ह जिन्हाने निष्ठा पूर्वक उत्तम प्रशिक्षण दिया है । यह प्रदर्शनी एव बोलने सुनन म असमर्थ एक शिविरार्थी बहन का कार्य इसका प्रमाण है । जो भी सीखा हे उसको अधिक से अधिक उपयोगी बनाते हुए अन्यो को भी अपना ज्ञान बाटने का प्रयत्न करे । ✰

पृष्ठ 86 का शेष

राजा न बने परन्तु King Maker तो ह ही । हम हिन्दू की एक ईकाई मान लिया जाता है । इस पर आगेवालो के क्या-नजरिए हे शास्त्रीय सदर्भ मे इतिहास के सदर्भ मे क्या ये एक एकातवादी विचार का परिणाम है या हमारे अनेकातवाद की नजर से इसके कुछ मायन है । आज हमारे घर म कइ विसगतिया ह- वो बढती ही जाती हे- तथा हमारी एकता को सफल ही नहीं होने देती । हम अपनी धार्मिक आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक ऊर्जा को न जाने क्यो नही पहचान रहे- एकता का प्रभाव इसे दीमक की तरह चट करता जा रहा है । इसी कारण हमारे अनेक तीर्थ विवाद के घेरे म आए हुए हे- हमारी इच्छा शक्ति को न जाने क्या हो गया है । हमारा इतना प्रभाव नहीं कि हम अपने हित मे लाबी भी कर सक । राजनीति म हमारे लोग नहीं हे जो हमार हितो की पैरवी कर सके- हमार व्यक्तिगत स्वार्थो की नहीं धर्म स्थाना को वचाने की जीव दया के कामा की तरक्की की- पर्यावरण, प्रदूषण बचाने की मानवता के लिए काम करने की प्रेरणा दे सके । जेन समाज से जुडे जा व्यक्ति राजनीति मे है कम-से-कम वे ही नेतृत्व करे समाज म अधिक एकता के लिए समाज को सगठित करने तथा मानवता के लिए जेन धर्म के दिए सदेश का प्रभावशाली ढग स आगे बढावे ।

यह समय की जरुरत हे तथा जनतत्र का सफल करने का तकाजा हे । मेरी मुनिवृद से भी सादर विनती है कि वे इन सब बाता पर तटस्थ रहकर भी उचित दिशा देने की कृपा करे । ✰

स्व. श्री कस्तूरमलजी सा. शाह

हार्दिक श्रद्धांजलि

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर के भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमान कस्तूरमल जी सा. शाह का दिनांक 12 मई, 1998 को देहावसान हो गया। आपका ब्यावर मे दिनांक 15-7-1920 को जन्म हुआ। आपके पिता श्री कल्याणमलजी शाह एवं माता श्रीमती इचरज कंवर थी। 17 वर्ष की आयु से ही आप व्यापारिक गतिविधियो से जुड गए और समय के साथ आप जान-माने प्रसिद्ध उद्योगपतियों में गिने जाने लगे। आप जयपुर चैम्बर आफ कोमर्स के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं फिर अध्यक्ष भी रहे। राजस्थान होटल कोरपोरेशन के आप निर्देशक रहे। खेल-कूद में भी आपकी विशेष रुचि रही और आप जयपुर क्लब, जय क्लब, जयपुर टेनिस क्लब आदि विभिन्न संस्थाओं के मंत्री, निदेशक और सदस्य रहे।

आपकी समाज सेवा के प्रति भी प्रारम्भ से ही रुचि रही। श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर के आप वर्षो तक उपाध्यक्ष एवं तदनन्तर अध्यक्ष रहे। माणिभद्र के प्रथम अंक सम्वत् 2016 में निर्वाचित महासमिति के पदाधिकारियों में आप ही अध्यक्ष थे, इसका उल्लेख मिलता है। आपकी अध्यक्षता काल में ही श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालों का रास्ता का निर्माण हुआ था। आपकी सेवाओं को कभी भुलाया नही जा सकेगा।

ऐसे स्वनाम धन्य, चहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाज सेवी श्रीमान् शाह सा के निधन से जो अपूरणीय क्षति हुई है उसकी पूर्ति सहज सम्भव नही है।

आपके निधन पर सघ की महासमिति द्वारा निम्न प्रस्ताव पारित किया गया :

''श्रीमान कस्तूरमलजी शाह के स्वर्गवास से श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ को अपूर्णीय क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना असम्भव है। वे इस संघ के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद पर करीब 20 वर्षो तक अपनी सेवाये देते रहे एवं पदों को सुशोभित करते रहे।

उनका अटूट हौसला, आत्म विश्वास सदैव हमारा पथ आलोकित करता रहेगा। जिन कार्यो एवं लक्ष्य के लिए उन्होंने तन मन धन से अपना जीवन समाज को समर्पित किया था, वही हमारे लिए सबसे बड़ा मार्गदर्शन रहेगा।

परम पिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं आए हुए इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। हम उन्हीं के पद चिह्नो पर चलते हुए समाज के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।'' ☆

हार्दिक श्रद्धांजलि

स्व श्री निहालचदजी नाहटा

स्व सेठ श्री वीरचन्दजी सा नाहटा के द्वितीय सुपुत्र श्रीमान निहाल चन्दजी सा नाहटा का दि 28 जून, 1998 को मद्रास मे आकस्मिक निधन हो गया। आपके पूर्वजो द्वारा जयपुर मे जिन मदिर का लगभग सौ वर्षों पूर्व निर्माण कराया गया था जो आगरे वालो के नए मदिर के नाम से प्रख्यात है। इस जिनालय को शिखरबद्ध बनाकर जीर्णोद्धार कराने का कार्य आपने सम्पन्न कराया और वर्ष 1990 मे मूलनायक भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी आदि जिन बिम्बो की पुनर्प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई थी। आपने अपने जीवन काल मे अनेको तीर्थों के सघ निकाले और नवयुवको को धर्म ध्यान की ओर प्रेरित किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ जयपुर के प्रति आपकी अपने पूर्वजो के अनुरूप ही निष्ठा अनुराग एव सद्भावना बनी रही और उसी के फलस्वरूप जिनालय परिसर मे स्थित उपाश्रय का पूर्ण रूपेण नवनिर्माण कराने हेतु सघ को आज्ञा प्रदान की और आज यह स्थान साधु-साध्वियो के प्रवास और श्रावक-श्राविकाओ के लिए आराधना का सहज सुलभ स्थान है।

ऐसे बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्रीमान निहालचन्दजी सा नाहटा के निधन से उनके परिवार स्वजन आदि को तो अपार क्षति हुई ही है जयपुर तपागच्छ सघ को विशेष क्षति हुई है। इस सम्बन्ध में तपागच्छ सघ जयपुर की महासमिति द्वारा पारित प्रस्ताव अनवरत रूप से नीचे उद्धत किया जा रहा है -

''श्रद्धेय श्रीमान निहालचन्दजी सा नाहटा के आकस्मिक एव असामयिक निधन का समाचार जानकर हार्दिक दुख हुआ।

सेठ सा का व्यक्तिगत जीवन तो जिन शासन एव समाज के प्रति समर्पित था ही तपागच्छ सघ, जयपुर के प्रति उनकी विशेष अनुकम्पा रही। नाहटा परिवार के पूर्वजो द्वारा जयपुर मे आगरे वालो के मदिर नाम से प्रसिद्ध एव भव्य जिनालय का निर्माण कराकर कीर्ति पताका फहराई थी तथा तपागच्छ के साधु साध्वियो के प्रवास हेतु इस जिनालय के परिसर मे उपाश्रय का स्थान प्रदान किया हुआ था उसको आपने न केवल अक्षुण रखा अपितु अभी हाल ही मे जिनालय के जीर्णोद्धार के साथ-साथ इस उपाश्रय के पुनर्निर्माण की तपागच्छ सघ जयपुर को स्वीकृति प्रदान की थी वह इस सघ एव समाज के लिए चिर-स्मरणीय रहेगी।

आप सदैव ही समाजोत्थान एव जैन धर्म की अभिवृद्धि के प्रति सक्रिय रहे और जब भी अवसर मिला अपने विचार को मूर्ति रूप देने म कोई कसर नहीं छोडी।

ऐसी महान आत्मा के यकायक चले जाने से जो रिक्तता पैदा हुई है उसकी पूर्ति सहज सम्भव नहीं है। जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को शाति प्रदान करे और परिवारजनो को उनका अभाव सहन करने की शक्ति प्रदान करे।''

☆

हार्दिक श्रद्धांजलि

स्व. श्री भगवान दास जी पल्लीवाल

श्री भगवानदास जी पल्लीवाल का हृदय घात से दि. 25 दिसम्बर, 1997 का आकस्मिक एवं असामयिक निधन हो गया। आपका जन्म सन् 1938 में बरगमा ग्राम मे हुआ था। आपके पिता श्री नारायणदासजी सा. पल्लीवाल भी ख्याति प्राप्त व्यक्ति थे जो जीवन पर्यन्त श्री महावीरजी तीर्थ को श्वेताम्बर तीर्थ के रूप मे मान्यता दिलाने हेतु संघर्ष करते रहे।

अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते हुए और उनके द्वारा छोडे हुए अधूरे कार्य को पूर्ण करने हेतु आप भी श्री महावीरजी तीर्थ रक्षा समिति के मंत्री के रूप मे कार्य करते रहे। आपकी जैन धर्म और समाज की सेवा के प्रति पूर्ण आस्था थी। परिणामस्वरूप आप विभिन्न सस्थाओ के सदस्य एव पदाधिकारी रहे जिसमें पल्लीवाल महासभा जयपुर शाखा के अध्यक्ष, सुबोध साथी संघ के ट्रस्टी, राजस्थान जैन सस्कृति रक्षा समिति के सह मत्री रहे। श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ, जयपुर की महासमिति के कई वर्षो तक सदस्य के साथ साथ अर्थ मत्री, हिसाब निरीक्षक, भण्डार मंत्री आदि पदों के दायित्वो का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। संघ की स्मारिका माणिभद्र मे आपके लेख प्रकाशित होते रहे है।

ऐसे व्यक्तित्व के यकायक चले जाने से सार्वजनिक क्षेत्र में जो रिक्तता पैदा हुई है उसकी पूर्ति सहज सम्भव नही है।

जिनेश्वर देव उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे यही कामना है। ☆

इस वर्ष निम्नांकित के और भी निधन हुए हैं :—

(1) श्री घीसू लालजी कुहाड

(2) श्री कान्ति लालजी कुहाड

(3) श्री करणी सिंहजी कोचर

(4) श्रीमती मानकंवर बाई भण्डारी (धर्मपत्नी स्व. श्री प्रेमचन्दजी भण्डारी)

(5) श्रीमती शान्ति देवी लोढा (धर्मपत्नी स्व. श्री सौभागमलजी लोढा)

(6) श्री ललित कुमार जी दोषी

जिनेश्वर देव सभी स्वर्गीय आत्माओं को शान्ति प्रदान करें इसी प्रार्थना के साथ।

तपागच्छ संघ एवं सम्पादक मण्डल
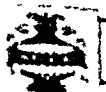
श्री सुमति जिन श्राविका संघ

❏ श्रीमती उषा साड, महामत्री

भौतिक-वादी इस युग मे मानव केवल धन और काम मे फसकर आत्म कल्याण के मार्ग से भटक गया है और धार्मिक चेतना का अभाव हो गया है। विशेषकर युवा महिलाओ मे। इसी हेतु साध्वी देवेन्द्र श्री जी म सा द्वारा आज से 5 वर्ष पूर्व सुमति जिन श्राविका सघ का गठन किया था और उद्देश्य था केवल पूजा पढाना।

पूजा पढाने के लिय पूर्ण सहयोग व तारतम्य का होना आवश्यक है। वह भी कुशल निर्देशन मे और यह गुरुत्तर कार्य सम्भाला हे श्री धनरूप मल जी नागौरी ने।

गत वर्ष विराजित मुनिराज पुण्य रत्नचन्द्र जी महाराज साहब, साध्वी पदमरेखा श्री जी, प्रशान्त गिरीजी एवम् पुण्यरत्न गिराजी की निश्रा मे सास्कृतिक सध्या का आयोजन किया गया। इसमे मचित लघु नाटिका मे "नवकार मत्र का चमत्कार" आज के समय मे नास्तिक वाद पर चोट व नवकार मत्र की महिमा को दर्शाया गया।

व्यगात्मक शैली मे प्रस्तुत इस नाटिका की शैली, प्रस्तुती और अभिनय तीना ही पक्ष इतने सशक्त थे कि दर्शक टकटकी लगाये रहे और हमारे विशेष अतिथि श्री के एल जैन नौकर का पात्र करने वाले मास्टर कटारिया से इतने प्रभावित हुये कि अपना स्मृति चिन्ह" उसे भेट कर दिया। नाटिका के अतिरिक्त अन्य प्रस्तुतिया भी प्रभावशाली रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती प्रभा बहन शाह ने की व मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्रजी ओसवाल थे। श्रीमती बसती बहन शाह ने सभी कलाकारो को चादी का सिक्का प्रदान कर उनका मनोबल बढाया। सुश्री सरोज काचर ने कार्यक्रम का सचालन किया।

सघ की गतिविधियो के सफल सचालन हेतु आर्थिक योगदान स्वरूप श्रीमती अरुणा के एल जैन, श्री सुरेन्द्रकुमार जी ओसवाल, श्रीमती प्रभा बहिन शाह, श्रीमती बसती बहिन एव सर्वोपरि श्री जैन श्वे तपागच्छ सघ द्वारा आर्थिक राशी प्रदान की गई जिसके लिए सघ उनका आभारी है।

पूजा पढाना हमारी नियमित दिनचर्या का हिस्सा सा हो गया है। वैसे ता हमारे मण्डल का नियम केवल मन्दिर उपाश्रय या सार्वजनिक समारोह मे पूजा पढाना ही हे परन्तु हम निजी समारोह यथा वास्तु पूजा, स्नात्र पूजा व अन्य पूजाए पढाने के लिये समय-समय पर आमत्रण मिलते रहते है जिन्हे हम मण्डल की बहनो के सहयोग से पूरा करने की कोशिश करते है।

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी विभिन्न मन्दिरो मे वार्षिक उत्सवो पर पूजाए पढाई गई।

श्राविका सघ द्वारा प्रत्येक माह की पहली

तारीख को सामायिक की जाती है व 15 तारीख को स्नात्र पूजा पढाई जाती है इससे पूजा की निरन्तरता बनी रहती है। बहनों के आपसी मेल मिलाप का अवसर प्राप्त भी होता रहता है जिससे प्रेमभाव एवं सौहादर्य बढता है।

इस वर्ष मण्डल की ओर से मण्डल की सदस्याओं को ''गणवेश'' प्रदान किया गया।

पू. आचार्य पद्मसागर जी म.सा. व मुनि मण्डल के आगमन पर मंगल कलश लेकर अगवानी की एवम् स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य श्री के जयपुर प्रवास के दौरान 20 दिन तक की भोजन व्यवस्था आदि में भी सुमति जिन श्राविका संघ द्वारा पूर्ण सहयोग प्रदान कर साधर्मी भक्ति में पूरा योगदान किया गया।

महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी की शिष्या सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी आदि ठाणा-5 के आगमन पर श्री संघ के साथ सुमति जिन श्राविका संघ ने भी भाग लिया व स्वागत गीत प्रस्तुत कर अपनी भावनाएं प्रकट की।

इस वर्ष हमने अपनी उपलब्धियों में से 25,000/- की एफ. डी. करवा दी।

संघ की कार्यकारिणी पूर्व की भांति हैः-

श्रीमती लाड बाई सा शाह	संरक्षक
श्रीमती सुशीला छजलानी	अध्यक्ष
श्रीमती रंजना मेहता	उपाध्यक्ष
श्रीमती उषा सांड	महामंत्री
श्रीमती विमला चौरडिया	संयुक्त मंत्री
श्रीमती चेतना शाह	सांस्कृतिक मंत्री
श्रीमती मधु कर्णावट	अर्थमंत्री
श्रीमती संतोष छाजेड	प्रसार मंत्री
श्रीमती प्रतिभा शाह व श्रीमती सुशीला कर्णावट	पूजा प्रभारी

समस्त श्री संघ का हमें पूर्ण आर्शीवाद मिलता रहा है जिसके बल पर हम निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होते रहे है। साथ ही बरखेडा तीर्थ का प्रथम विशाल त्रि-दिवसीय चतुर्विध संघ के मार्ग की व्यवस्था, समापन समारोह एवं वार्षिकात्सव में भी भरसक सहयोग प्रदान किया गया।

आगे भी हमें सभी का आशीर्वाद प्राप्त होता रहेगा, इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

जय जिनेन्द्र

☆

कलयुग में संगठन में ही शक्ति है।

सदाचार ही जीवन का मूल मंत्र है।

जो कार्य धर्मसंगत है वही करने योग्य है।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

❒ श्री अशोक पी जेन, मत्री

श्री आत्मानन्द जेन सेवक मण्डल को श्री जैन श्वेताम्बर समाज मे अपनी सेवाय देते 43 वर्ष हो चुके है । श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डलश्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ का अभिन्न अग है । वेसे मण्डल परिवार को अब परिचय की आवश्यकता नहीं है । इस मण्डल परिवार को श्वेताम्बर समाज द्वारा विभिन्न गतिविधियो हेतु याद किया जाता है।

गत वर्ष विराजित परम पूज्य पुण्यरत्न चन्द जी म सा व साध्वी श्री पदमरेखा श्री जी आदि ठाणा के आगमन पर सकल श्री सघ के साथ मण्डल परिवार ने नगर प्रवेश मे भाग लिया एव तपागच्छ सघ द्वारा पर्युपण पर्व के दौरान एव चातुर्मास के दौरान जो भी धार्मिक गतिविधिया हुई उसमे मण्डल परिवार ने सम्पूर्ण सहयोग दिया। पर्युषण पर्व पर मण्डल परिवार की सदस्या श्रीमती प्रविणा मुणोत के मासक्षमण की तपस्या पर मण्डल परिवार की ओर से बहुमान किया गया।

पर्युषण पर्व के पश्चात् मण्डल परिवार की एक यात्री बस दिल्ली मे विराजित साध्वी श्री महत्तरा सुमगलाश्री जी के दर्शनो का लाभ लेते हुए हस्तिनापुर हरिद्वार ऋपिकेश होकर यात्रा सम्पन्न की । इस बस के सघपति का लाभ राजेश मोटर्स प्रा लि ने लिया ।

श्री जैन श्वेताम्बर युवा महासघ के निर्विरोध चुनाव मे 27 सदस्यो की कार्यकारिणी कमेटी मे मण्डल के पाँच सदस्य मनोनीत किये गये थे । लेकिन इस वार युवा महासघ न मण्डल परिवार के पॉच और सदस्य मनोनित किये इस प्रकार मण्डल परिवार के दस सदस्य चुने गये ।

1 विजय सेठिया
2 अशोक पी जैन
3 प्रकाश मुणोत
4 ललित दुगड
5 भरत शाह
6 नरेश मेहता
7 प्रितेश शाह
8 सजय मेहता
9 राकेश मुणोत
10 नरेन्द्र कोचर

गत वर्ष चार्तुमास के पश्चात् आचार्य श्री पदमसागर सूरीश्वर जी म सा एव साध्वी महत्तरा सुमगला श्री जी आदि ठाणा के जयपुर आगमन पर भव्य नगर प्रवेश एव विभिन्न प्रतिदिन होने वाले कार्यक्रम मे मण्डल परिवार ने पूर्ण रूप से सहयोग दिया । आचार्य श्री के प्रवास दोरान बाहर से आने वाले यात्रियो के लिए आवास व्यवस्था एव भोजन व्यवस्था की जिम्मेदारी मण्डल परिवार ने ली । आचार्य श्री की निश्रा म तपागच्छ सघ के अन्तर्गत सघवी हीराभाई चौधरी द्वारा तीन दिवसीय पद यात्रा (जयपुर से बरखेड") का आयोजन किया गया । जिसमे करीब 750 यात्रियो ने पदयात्रा मे भाग लिया । इस पद

यात्रा में यात्रा कमेटी द्वारा मण्डल परिवार को भोजन व्यवस्था, आवास व्यवस्था एवं बस व्यवस्था की जिम्मेदारी सौंपी गई। इस पद यात्रा में सभी पदयात्रियों के लिए अगले पडाव में पहुंचने से पहले मण्डल परिवार के कुछ सदस्य आगे पहुंचकर व्यवस्था में सहयोग करते। इन सभी व्यवस्थाओं में मण्डल परिवार ने पूर्ण रूप से सहयोग देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया। संघवी हीराभाई चौधरी द्वारा मण्डल परिवार के सभी सदस्यों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया एवं मण्डल परिवार को राशि भेंट की।

मण्डल परिवार द्वारा श्री सुमतिनाथ जिनालय का गुम्बज से लेकर फर्श तक का शुद्धीकरण का कार्यक्रम भी किया गया जिसमें मण्डल के सभी सदस्य एवं तपागच्छ संघ के सदस्यों ने सहयोग किया।

मण्डल परिवार को यहाँ विराजित साधुसन्तों का आर्शीवाद एवं मार्गदर्शन मिलता रहता है। शासन देव की कृपा गुरुभगवन्तों का आशीर्वाद संघ के अनुभवीजनों के मार्ग दर्शन एवं मण्डल के सभी सदस्यों के श्रम एवं सेवा भावना से मण्डल हमेशा प्रगति करें यही मेरी मंगल कामना है।

मैं तपागच्छ संघ के सभी युवावर्ग जो सामाजिक कार्य हेतु अपनी सेवायें देना चाहते हैं उन युवा वर्ग से आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल के सदस्य बनने हेतु आमंत्रित करता हूँ।

मैं मण्डल परिवार की तरफ से आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मण्डल के सभी सदस्य श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ एवं अन्य सभी संघों द्वारा आयोजित धार्मिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में निष्ठापूर्वक सम्पूर्ण रूप से समर्पित सेवा भाव से कार्य करते रहेंगे।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हमेशा की तरह श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ एवं अन्य संघों का मार्ग दर्शन एवं मण्डल के समस्त कार्यकर्ताओं का सहयोग मिलता रहेगा। समय समय पर संघ के सभी महानुभावों का हमें तन मन धन से सहयोग मिला है इसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं।

अतः मैं अज्ञानतावश हुई किसी भूल के लिए हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ। मण्डल परिवार की कार्यकारिणी विगत वर्ष की भाँति हैः-

विजय कुमार सेठिया	अध्यक्ष
नरेश मेहता	उपाध्यक्ष
अशोक पी जैन	मंत्री
भरत शाह	संयुक्त मंत्री
प्रकाश मुणोत	कोषाध्यक्ष
सुरेश जैन	संगठन मंत्री
प्रितेश शाह	सांस्कृतिक मंत्री
संजय मेहता	सूचना एवं प्रसारण मंत्री
विपिन मेहता	शिक्षा मंत्री

कार्यकारिणी सदस्य

अशोक जैन (शाह)

धनपत छजलानी

ललित दुगड

राजेन्द्र दोपी

जय जिनेन्द्र

श्री जैन ऋषभदेव बरखेडा तीर्थ का पैदल यात्री सघ

तारीख 20 से 22 मार्च, 1998 तक एव

वार्षिकोत्सव की अनोखी झलक

☐ श्रीमती मजु पी चोरडिया

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी, जयपुर से गत 20 मार्च, 1998 को परम् पू प्रवचन प्रभावक राष्ट्र सत आचार्य देव श्री पद्मसागर सूरीश्वर जी म सा, उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागर जी म सा पन्यासप्रवर श्री वर्धमान सागरजी, श्री अमृतसागर जी गणिवर्य श्रीविनय सागर जी, श्री देवेन्द्र सागर जी आदि मुनि मडल ठाणा 15 परम् पूज्य पल्लीवाल प्रदेशाद्धारिका साध्वीजी श्री शुभोदया श्री जी म सा आदि ठाणा 6 शासन दीपिका महत्तरा सा सुमगला श्री जी म सा आदि ठाणा 9, श्री खरतरगच्छिय शासन प्रभाविका सज्जनमणि श्री शशि प्रभा श्री जी म सा आदि ठाणा 8 एव निर्मला श्री जी म सा कुल ठाणा 39 की पावन निश्रा व परम् पूज्या शासन दीपिका महत्तरा श्री सुमगला श्री जी म सा की प्रेरणा से तपागच्छ सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई सुपुत्र श्री मगलचद जी चोधरी धर्मपत्नी जीवन कुमारी परिवार ने चतुर्विध सघ के साथ तीन दिवस का श्री जैन श्वेताम्बर बरखेडा तीर्थ पैदल यात्रा सघ निकाला। पूज्य पिताजी मगलचद जी व माताजी रतन बहन के साथ किये गये अनेक धार्मिक कार्यो के स्वरूप व उन्हीं के सस्कारो व आशीर्वादो को प्रत्यक्ष स्वरूप दिया।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ के इतिहास म 800 यात्रियो का पैदल चतुर्विध सघ पहली बार निकला जिसम आचार्य, उपाध्याय, पन्यास, गणि पद से विभूपित मुनिमगवान, शासन दीपिका महत्तरा पल्लीवाल पदेशोद्धारिका एव सज्जनमणि पद से विभूपित साध्वीवृद श्रावक-श्राविका एव श्री जैन धार्मिक पाठशाला क छाट छोटे बच्च सभी सम्मिलित थे।

यह विशाल सघ प पू राष्ट्र सत आचार्य देव साध्वी वृद की निश्रा व चतुर्विध सघ के साथ मे प्रात 6 वजे श्री सुमति नाथ भगवान क दर्शन एव मागलिक श्रवण कर श्री आत्मानन्द जेन सभा भवन, घी वालो का रास्ता, जोहरी वाजार से पारम्भ हुआ। जुलूस मे सबसे आग हाथी, घोडे व बेड चल रहा था। घोडे पर सघपति क पोत्र अकित और अभिनव बेठे हुए थे। पीछे आचार्य भ मुनिवृन्द एव उनक पीछे श्रावकगण थे, उनके पीछे भगवान का रथ था जिसमे पात्री श्रुति, रूचि प्रियका स्वाती सलोनी सुहानी सगीत मण्डली व क्रियाकारक धनरूपमल जी नागौरी बेठे हुए थे। रथ के पीछे साध्वी मण्डल व

श्राविकाएं मंगलगीत व प्रभु की जय जय कार करती हुई चल रही थी। इस तरह जिन शासन की प्रभावना करते हुए श्री संघ शंखेश्वरम् मंदिर मालवीय नगर पहुंचा। वहां पर परमात्मा के दर्शन, पूजा, स्नात्र पूजा करने के बाद में आचार्य श्री का मंगल प्रवचन हुआ उसमें मालवीय नगर श्री संघ के शंखेश्वरम् महिला मंडल ने मंगलाचरण व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मालवीय संघ के अध्यक्ष हीराचन्द जी वैद ने चतुर्विध संघ के साथ तीर्थ यात्रा के रूप में परमात्मा भक्ति की अनुमोदना करते हुए संघपति श्री हीराभाई चौधरी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जीवन कुमारी का माल्यार्पण कर बहुमान किया। श्री हीराभाई चौधरी ने अपने धन्यवाद में मालवीय नगर श्री संघ का आभार व्यक्त किया। व्याख्यान के बाद में सभी का भोजन का आयोजन रहा। दोपहर में विश्राम कर अल्पाहार लेकर संघ सांगानेर पहुंचा वहां भोजन के पश्चात् रात्रि को प्रतिक्रमण व भजन संध्या का आयोजन रखा गया, जिसमें श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल, श्री सुमति जिन श्राविका मण्डल, श्री जिन विचक्षण महिला मण्डल एवं संगीतकार श्री गोपाल भाई केकडी वालों ने अपनी मण्डली के साथ भाग लिया।

दूसरे दिन 21.3.98 को सुबह पांच बजे संघ सांगानेर से रवाना होकर बीलवा गांव में पहुंचा। पहुँचते ही नाश्ते के बाद वहां पर भी प्रभु भक्ति, स्नात्र पूजा, प्रवचन एवं संगीत भक्ति का आयोजन किया गया उसमें जयपुर से प्रवचन सुनने व संघ के दर्शन करने कई भाग्यवान पधारे थे, सभी ने दोपहर को भोजन किया। दोपहर को अल्पाहार लेकर शाम को शिवदासपुरा पहुंचा। वहां भोजन के समय श्रीमान् विमलचन्द जी सुराना, श्री लक्ष्मीचन्द जी तालेरा, श्री शांतिलाल जी चौधरी, श्री सूरजमल जी चौधरी श्री भास्कर भाई चौधरी के परिवार, श्रीमान् हीराचन्द मकाजी जलगांव के परिवार, श्रीमान् रमणलाल जी पूना वालों के परिवार एवं श्री प्रवीण कुमार जी अहमदाबाद वालों के परिवार वालों ने सभी यात्रियों को प्रभावना देकर साधर्मिक भक्ति का लाभ दिया। भोजन के पश्चात् रात्री प्रतिक्रमण के बाद में भजन संध्या आदि के कार्यक्रम हुए उसमें सभी मण्डलों द्वारा भाग लिया गया।

तृतीय दिन 22 मार्च को प्रातः श्री संघ ने अत्यन्त उमंग और उत्साह से श्री ऋषभदेव स्वामी की जय जयकार करते हुए शिवदासपुरा से प्रयाण किया। बरखेडा के प्रवेश द्वार पर संघपति श्री हीराभाई के परिवार ने प्रत्येक यात्रियों को माला पहनाकर चावल, मखाना व बादाम से भरी पूजा पेटी भेंट देकर बहुमान किया। संघ में सभी यात्रीगण ज्यादा से ज्यादा अपना समय देव गुरु, धर्म की आराधना करते रहते थे। संघ तीर्थ बरखेडा की पावन धरा पर पहुंचा और वहां पर ऋषभदेव प्रभु के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य बनाया। कई यात्रियों का इस तीर्थ भूमि पर चतुर्विध संघ के साथ जानें का यह प्रथम अवसर था। संघपति के सुपुत्र श्रीपाल चौधरी ने वेले का

तप करके यह पैदल तीर्थ यात्रा की, एव धर्मपत्नी श्रीमती जीवन कुमारी जी ने दोनो दिन एकाशना तप किया । हीराभाई की भाभीजी श्रीमती भारती बहन ने बैले से यात्रा की थी साथ मे उसी दिन से वर्षीतप शुरू किया है । प्रभु उनके तप को सुख शातिपूर्वक पूरा करेगा । जयपुर श्री सघ द्वारा श्री बरखेडा तीर्थ का वार्षिकोत्सव का आयोजन भी इसी दिन रखा गया । इस अवसर पर पच कल्याणक पूजा एव स्वामी वात्सल्य का लाभ सघपति परिवार ने लिया, इस अवसर पर तीर्थमाला का आयोजन भी किया गया । सर्वप्रथम आचार्य श्री को कावली ओढाई व स्फटिक की माला भेट कर बहुमान किया । बाद मे हीराभाई एव जीवन कुमारी ने अपने माता तुल्य बडी भाभीजी का बहुमान कर आशीर्वाद प्राप्त किया । सभी साधु व साध्वी वृन्द को स्फटिक की माला भेट कर बहुमान किया गया । परमात्मा की साक्षी से आचार्य श्री की निश्रा मे सघपति श्री हीराभाई जीवन कुमारी पुत्र-पुत्रवधु पाते-पोतियो को विधिवत तीर्थमाला पहनाई गई, इस तीर्थ माला की बोली का लाभ सघपति के भाईयो के परिवार मे श्री शातिलाल जी श्री सूरजमलजी, श्री भास्कर जी के परिवार वालो ने लिया । इस प्रसग पर प पूज्या शासन दीपिका महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्री जी म सा की प्रेरणा से चल रहे इस तीर्थ के जिनालय के जीर्णोद्धार के साथ नूतन धर्मशाला म प पू पजाब प्रदशाद्धारक पजाब केसरी आचार्य देव श्रीमद् विजयानन्दसूरी म सा व कलिकाल कल्पतरू पजाब केसरी आचार्य देव श्रीमद् विजय वल्लभ सूरी जी म सा क फाटा क अनावरण की बोलिया भी बाली गई, जिसका लाभ श्री उमरावमल सचेती व ओसवाल साबुन वाल श्री देवेन्द्र कुमार जी, सुरेन्द्र कुमार जी जैन ओसवाल ने लिया ।

श्री जैन तपागच्छ सघ की ओर से सघपति सुश्रावक धर्मनिठ, तन-मन-धन से देवगुरु धम व समाजो को समर्पित सघ परिवार के श्री हीराभाई चौधरी धर्मपत्नी जीवनकुमारी का श्री तरसम कुमार जैन, उपाध्यक्ष ने अभिनन्दन पत्र श्री नरेन्द्र कुमार लूणावत ने माला पहनाकर श्री राकेश कुमार मोहनोत ने श्रीफल भेट कर बहुमान किया। कार्यकारिणी के अन्य सदस्या द्वारा सघपति क परिवार का माला व श्रीफल द्वारा बहुमान किया । इस माल के पावन दिन को परम् चिरस्मरणीय बनाने के लिये सघपति श्री हीराभाई एव श्रीमती जीवण कुमारी चौधरी ने आचार्यश्री से चतुर्थ व्रत ग्रहण किया हुआ था एव अपने गाव मे अजनशाला प्रतिष्ठा मे प्रभु के मा-बाप बनने का सौभाग्य प्राप्त किया था उसकी नाण मोडकर विधिवत् सम्पूर्ण की गयी । इस विशाल धर्म सभा मे श्री विमल चन्द जी सुराणा, श्री के एल जैन, श्री दूलीचन्द जी टाक, श्री हीराचन्द जी वैद, श्री उत्तमचन्द जी बडेर, श्री देवीचन्द जी जैन, श्री लक्ष्मीचन्द जी तालेरा, श्री जयन्तीलाल जी, श्री दिलीप कुमार जी, श्री भरत चोधरी, श्री रणजीत चौधरी श्री कुशलचद जी सुराणा श्री नेमीचन्द जी, श्री जे के जैन, श्रीमती जतन कवर गोलेछा श्री त्रिलाकचद जी जैन श्री महेरचद जी धाधिया व

गुजराती समाज व सभी समाजों के कार्यकारिणी के सदस्य आदि जयपुर व पूरे भारत भर के गणमान्य जैन अजैन सभी उपस्थित थे । उपस्थित सभी भाई बहनों, एवं संघ के प्रमुखों द्वारा संघपति एवं उनके परिवार वालों का बहुमान किया गया । विशाल धर्म सभा में आचार्य श्री ने बरखेडा गांव के भूगर्भ से निकाली हुई 35 इंची चमत्कारी श्री आदेश्वर प्रभुजी की आठ सौ साल पुरानी प्रतिमा को देखकर उसकी बहुत ही प्रशंसा की एवं महान् तीर्थ व श्री संघ की उन्नति के लिये आशीर्वाद दिया । साथ ही यात्रालुगणों को अमृतवाणी का पान कराया एवं हीराभाई चौधरी परिवार की ओर से निकाले गये चतुर्विध संघ की अनुमोदना की । इस तीर्थ यात्रा को भव भव की यात्रा का अंत करने वाली बताते हुए चौधरी परिवार को हृदय से आशीर्वाद दिया । उनके परिवारजनों को हीराभाई के आदेशों पर चलने की प्रेरणा दी । सभी यात्रियों को भी आशीर्वाद देते हुए आचार्य श्री ने कहा कि भविष्य में भी जब किसी ऐसी यात्रा के प्रसंग आये तो अवश्य भाग लेकर अपने जीवन को सफल बनाने के साथ श्री संघ की शोभा बढायें ।

सभा के अंत में संघपति श्री हीराभाई ने कहा कि हमारे परिवार का पुण्योदय है कि आचार्य भगवंत की अनूठी कृपा से शासन दीपिका महत्तरा सा. सुमंगला श्री म. सा. की प्रेरणा से सभी साधु वृंद की कृपा से माताजी-पिताजी के संस्कार व आशीर्वाद से व सभी यात्रियों के सहयोग से चतुर्विध संघ की यात्रा का कार्य पूजा, प्रभावना, भावोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ । प्रत्येक धार्मिक कार्य में मेरे पुत्र महेन्द्र, श्रीपाल, महीपाल पुत्रवधु उर्मिला, अनुराधा, राजश्री एव पुत्री मीना, कंवर साहब पुष्पेन्द्र जी का सदैव सहयोग रहा है । उन्ही के सहयोग से ही प्रत्येक कार्य कुशल व संतोष कारक हुए है । संघपति के भाई शांतिलाल जी, सूरजमल जी, भास्कर जी, बहन मंजू, पुष्पा व खुद का पूरा परिवार हर साल तपस्या, प्रभु भक्ति, साधर्मिक भक्ति की सेवा में भाग लेता रहता है । संघपति ने अपने परिवार द्वारा पैदल संघ के उपलंक्ष में बरखेडा तीर्थ में विराजित प्रभुजी की आंगी बनवाकर देने की व सभी कार्यकर्त्ताओं को यादगार के रूप मे मोमेन्टों देने की घोषणा की थी । रास्ते में सभी संघों व स्कूलों को, यादगार भेंट दी गई । सभी मंदिरों मे पूजा की सामग्री रखी गई । इस तीर्थ यात्रा को सुन्दर व व्यवस्थित पूर्ण कराने में पूज्य आचार्य भगवंत, सभी साधु साध्वीवृंद, महासमिति के सदस्य, श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल, श्री सुमति जिन श्राविका संघ एवं प्रत्येक सामाजिक सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त किया एवं श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा स्मृति चिन्ह मोमेन्टों के साथ भेंट किया । आपने चतुर्विध संघ में आये समस्त यात्रियों का व संघ माला के महोत्सव पर पधारे प्रत्येक सदस्य का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें श्री संघ की शोभा बढाने के लिए हृदय से धन्यवाद दिया और भूलचूक के लिए क्षमा मांगी ।

☆

श्री वर्द्धमान आयम्बिल शाला की स्थायी मितियाँ

वर्ष 1997-98

501 00 श्री हेमचन्दजी बोहरा परिवार नागपुर
501 00 स्व श्री सज्जन लालजी हीगड की धर्मपत्नी जडाव बाई की पुण्य स्मृति मे
501 00 श्री केशरी मल जी मेहता
501 00 श्री अमोलक चद जी सुराना
501 00 श्री लक्ष्मण सिह जी सिघी
501 00 श्री मोतीलाल जी वैद
501 00 श्री कुशलराज जी सिघवी
501 00 श्री शिखर चद जी ढड्ढा
501 00 स्व श्री मालचद जी चौरडिया हस्ते श्रीमती निर्मला बाफना
501 00 श्री ज्ञान चद जी सुभाषचदजी छजलानी
151 00 श्री ज्ञानचद जी छजलानी
151 00 श्री पारसराज जी हेमराजजी भण्डारी सियाना
151 00 श्री बाबूलाल जी मणीलालजी शाह
151 00 श्री सौभाग्य चन्द्र जी बाफना
151 00 श्री सुशीलचद जी सिघी
151 00 श्री बद्री प्रकाश जी आशीष कुमार जी जैन
151 00 श्री केशरी चद जी सुराना
151 00 श्री राजेन्द्र कुमार जी चत्तर
151 00 श्री यश आशीष कुमार जी कान्तीलाल जी शाह
151 00 श्री बाबूलालजी राजमल जी मेहता
151 00 श्री विनोद कुमार जी प्रवीण कुमार जी गॉधी
151 00 श्री विजय राज जी लल्लूजी मूथा
151 00 श्री ज्ञानचदजी सुशील कुमार जी छजलानी
151 00 श्री सूरज चद जी भूरठ
151 00 श्री सावतमल जी लोढा
151 00 श्री लखपत चद जी सदीप कुमार जी भण्डारी

151.00 श्री पारस चंद जी मेहता
151.00 श्रीमती अचल कँवर सुराना
151.00 श्री मोतीलाल जी कटारिया
151.00 श्री सोनराज जी पोरवाल
151.00 श्री मोतीचंद जी कोचर
151.00 श्री जयंति लाल गगल भाई शाह
151.00 श्री ज्ञानचंद जी सुभाषचंदजी छजलानी
151.00 श्री हीराचंद जी चौरडिया
151.00 श्री महेन्द्र कुमार जी जैठालाल जी मेहता
151.00 श्रीमती समता बहन जैठालाल जी मेहता
151.00 श्रीमती भागवंती बहन रमेश भाई शाह बम्बई

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर

आयम्बिल शाला परिसर जीर्णोद्धार में सहयोगकर्त्ता

अप्रेल 97 से मार्च 98 तक

चित्र	भेंटकर्त्ता
श्री हजारी चंदजी मेहता	श्रीमती अनोप कँवर मेहता
स्व. श्री प्राणलालजी कोठारी	श्रीमती कमला ध.प. श्री दलपत सिंहजी मेहता
श्रीमती राधा बाई सुराना	श्रीमती माणक बाई सुराना

श्री सुमतिनाथ जिनालय में अष्ट प्रकारी, पूजा, सामग्री

भेंटकर्त्ताओं की शुभ नामावली

भादवा सुदी 5 सं. 2054 से भादवा सुदी 4 2055 तक

1. अखण्ड ज्योत — श्री सी. डी. मेहता
2. पक्षाल पूजा (दूध) — कुमारी सीमा शाह
3. वरास, खसकूची, अंगलूना — श्रीमती अरुणा मेहता
4. चन्दन पूजा — शाह कल्याणमल जी कस्तूरमल जी
5. केशर पूजा — श्री खेत मल जी जेन
6. पुष्प पूजा — श्रीमती पारस देवी संचेती
7. अंगरचना (वरक) — श्री खीम राज जी पालरेचा
8. धूप पूजा — श्री बुद्ध सिंह जी मोतीचन्दजी वद
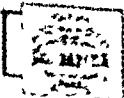
बरखेड़ा तीर्थ जीर्णोद्धार में विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त योगदान

5 00,000/- श्री आणद जी कल्याण जी पेढी, अहमदाबाद

4 31,435/- श्री शखेश्वर पार्श्वनाथ ट्रस्ट (मूलगभारे के सम्पूर्ण पाटिए)

5,50,000/- श्री चन्द्र प्रभु स्वामी का नया मदिर, मद्रास एव इनके ट्रस्टियो के मार्फत आश्वस्त

4 00,000/- श्री जैन श्वे नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ पेढी, मेवानगर

51 000/- श्री माटूगा जैन श्वे मूर्तिपूजक तपागच्छ सघ एव चैरीटीज मुम्बई

31 111/- श्री महावीर जिनालय, देव दर्शन अपार्टमेन्ट मद्रास

11 111/- श्री पार्श्वनाथ जैन मदिर, रम्मन पेठ मद्रास

25 000/- श्री सान्ताक्रुज जेन श्वे तपागच्छ सघ, श्री कुन्थुनाथ जैन देरासर, मुबई

11 000/- श्री जैन श्वे मूर्तिपूजक सघ (शीव), सायन वेस्ट मुबई

5 000/- श्री जैन सघ, मामलम् मद्रास

5,000/- श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जैन देरासर ट्रस्ट, मुम्बई

10,000/- श्री प्रेम वर्धक जैन श्वे मूर्तिपूजक सघ, धरणीधर, देरासर, अहमदाबाद

25,000/- श्री आदिपदमशान्ति, जैन देवस्थान पेढी, लूणावा

5100/- श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन श्वे मन्दिर हरिद्वार

25,000/- श्री शाहीबाग गिरधर नगर जेन श्वे मूर्तिपूजक सघ, अहमदाबाद

5 000/- श्री कोटनगीन जेन श्वे मूर्ति सघ मार्फत श्री आत्मानद जैन सभा मुबई

31,000/- श्री तीर्थकर शीतलनाथ जैन श्वे ट्रस्ट, पीलीबगा

11,000/- श्री चोमुखा जैन तपागच्छ मदिर गढसिवाना

21 000/- श्री महावीर जेन श्वे मदिर मुलतान वालो का, जयपुर

5 000/- श्री वासुपूज्य जैन श्वे मूर्तिपूजक सघ, बैगलौर

50,000/- श्री शान्तिनाथ जेन श्वे मदिर, रूपनगर (श्री आत्मानद जैन सभा रूपनगर) दिल्ली

31,000/- श्री आदिश्वरजी महाराज जैन मंदिर एण्ड चेरेटी ट्रस्ट, मुंबई

21,000/- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक तपागच्छ संघ, क्रिया भवन, जोधपुर

9,333/- श्री वासुपूज्य भगवान मंदिर उम्मेदपुरा, गढसिवाना

3,111/- श्री वीर मण्डल, गंगानगर

3,111/- श्री जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, रियाबडी

3,111/- श्री वासुपूज्य स्वामी जैन श्वे. मूर्तिपूजक देरासर एवं उपाश्रय ट्रस्ट, मुंबई

25,500/- श्री पावापुरी जैन मंदिरजी, सादडी

25,500/- श्री न्यू आबादी जैन मंदिरजी, सादडी

51,000/- श्री वैपरी श्वे. मूर्तिपूजक जैन संघ, चैन्नई

21,000/- श्री पार्श्वनाथ जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ पुराना बाजार, सूरतगढ

25,000/- सेठ मोतीशा लालबाग जैन चेरेटीज मुंबई

11,000/- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर दिल्ली शाहदरा

1,00,000/- के. पी. सिंघवी रिलीजियश ट्रस्ट, मुंबई

5,000/- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन, तारदेव, मुंबई

12501/- श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन श्वे. घर देरासर मार्फत धनरूपमलजी कनकमलजी, नागौरी

51,000/- श्री मातृ आशीष जैन श्वे. मंदिर देरासर ट्रस्ट मुंबई

24,000/- श्री गोडीजी महाराज जैन देरासर फण्ड चेरेटीज, मुंबई

5100/- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, गाजियाबाद

11,000/- श्री आत्मवल्लभ जैन युवासंघ, रूपनगर, दिल्ली

3111/- श्री शान्तिनाथ आराधना भवन, जीरा बाजार, मुंबई

51,000/- श्री पद्मसागरसूरी जी चातुर्मास समिति, दिल्ली

वरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार के अन्तर्गत जुलाई, 1998 तक समग्र आय–व्यय का विवरण :—

	आय	व्यय
देवद्रव्य	65,11,950.75	85,21,408.95
साधारण	13,23,551.00	10,04,806.82
योग	**78,35,501.75**	**95,26,215.77**

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पं.), जयपुर

महासमिति वर्ष – 1997–98

क्र स	पद नाम	पदाधिकारी	पता	दूरभाष निवास	दूरभाष कार्यालय
1	अध्यक्ष	श्री हीराभाई चौधरी	6, चाणक्यपुरी, बनीपार्क	204611 205311	213495 213616
2	उपाध्यक्ष	श्री तरसेम कुमार पारख	198, अक्षयराज, आदर्श नगर	601342	606899
3	सघ मत्री	श्री मोतीलाल भडकतिया	32, मनवाजी का बाग, एम डी रोड	602277	669369
4	सयुक्त सघमत्री	श्री राकेश मोहनोत	12, मनवाजी का बाग, एम डी रोड	605002	561038
5	कोषाध्यक्ष	श्री दान सिह करणावट	ए-3, विजय पथ, तिलक नगर	621532	565695
6	भण्डाराध्यक्ष	श्री जीतमल शाह	शाह बिल्डिग, चौडा रास्ता	564476	-
7	मन्दिर मत्री	श्री खिमराज पालरेचा	451, ठा पचेवर का रास्ता ह रास्ता	562063	564386
8	उपाश्रय मत्री	श्री अभय कुमार चौरडिया	जी सी इले , 257 जौहरी बाजार	569601	562860
9	आ भो मत्री	श्री सुभाष चन्द छजलानी	570, ठा पचेवर का रास्ता, ह रास्ता	562997	569311
10	शिक्षा मत्री	श्री गुणवतमल साड	1842, चौबियो का चौक, घीवालो रा	560792	565514
11	सयोजक, बरखेड़ा मदिर	श्री उमरावमल पालेचा	3854, एम एस बी का रास्ता	564503	560783
12	स ज कॉ मदिर	श्री मोतीचन्द वैद	1189, जोरावर भवन, रा परतानियो	565896	572006
13	स चदलाई मदिर	श्री राजेन्द्र कुमार लूणावत	456, ठा पचेवर रा हल्दियो का रा	571830	565074
14	स उपकरण भ	श्री महेन्द्र कुमार दोसी	10 प्रताप नगर (II), बरकत नगर	590662	563574
15	सदस्य	श्री कुशलराज सिघवी	2-घ-7, जवाहर नगर	654409	654782
16	सदस्य	श्री चिमन लाल मेहता	1880, जयलालमुशी रा चादपोल बा	321932	-
17	सदस्य	श्री नरेन्द्र कुमार कोचर	4350, नथमलजी का चौक, जौ बा	564750	-
18	सदस्य	श्री नरेन्द्र कुमार लूणावत	2135-36 लूणावत मा , रा हल्दियो	561882	571320
19	सदस्य	श्री नवीन चन्द शाह	ए-5, विजयपथ, तिलक नगर	620682	562167
20	सदस्य	श्री भवर लाल मूथा	18, कल्याण कॉलोनी, सीकर हाउस	305527	206094
21	सदस्य	श्री आर सी शाह	आर सी शाह एण्ड कम्पनी, जौहरी बा	554605 554607	565424 566594
22	सदस्य	श्री विक्रम शाह	इण्डियन वलून कारपेट, पानो का दरीबा	669910	665033
23	सदस्य	श्री सजीव जैन	पी-19, मधुबन कॉलोनी, टोक रोड	513134	567904
24	सदस्य	श्री सुरेन्द्र कुमार ओसवाल	212, फ्रटीयर कॉलोनी, आदर्श नगर	602689	314857
25	सदस्य	श्री सुशील कुमार छजलानी	51 देवीपथ, जवाहरलाल नेहरू मार्ग	570995	562789
1	*विशेष आमत्रित*	*श्री चिन्तामणि ढड्ढा*	*ऊँचा कुआ, हल्दियो का रास्ता*	*565119*	*560409*
2	*विशेष आमत्रित*	*श्री विजय कुमार सेठिया*	*सचेती हाऊस, एम एस बी का रास्ता*	*569614*	-
3	*विशेष आमत्रित*	*श्रीमती सुशीला छजलानी*	*570, ठा पचेवर का रास्ता ह रास्ता*	*562997*	*569311*

श्री सम्मेत शिखर जी तीर्थ के सम्बन्ध में नवीनतम स्थिति

❒ श्री नरेन्द्रकुमार लूनावत

श्री सम्मेत शिखर तीर्थ जैन समाज का अति पवित्र एव महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल है । यह मधुबन रेलवे स्टेशन पारसनाथ बिहार राज्य में स्थित है। यहां पर 20 जैन तीर्थकर मोक्ष गये हैं। अतः यहां उनके 20 कल्याणक स्थान हैं और प्रतिवर्ष हजारों ही नहीं लाखों की सख्या में जैन बन्धु इस तीर्थ की यात्रा करते है ।

इस तीर्थ का स्वामित्व व प्रबन्ध अनेकों वर्षो से जैन श्वेताम्बर समाज के पास रहा है और आज भी है परन्तु गत कुछ वर्षो से दिगम्बर समुदाय ने इस तीर्थ के प्रबन्ध में अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए अनेकों कानूनी केस न्यायालयों में दायर कर रखे है और वर्तमान में यह मामले विभिन्न न्यायालयों में लम्बित है ।

उपरोक्त कानूनी वाद सम्बन्धी मामलों की नवीनत्तम जानकारी ''णमो तित्थस्स'' के जून 98 के अंक द्वारा प्राप्त हुई जिसे मैं सभी श्वेताम्बर जैन बन्धुओं के ध्यानार्थ एवं जानकारी हेतु प्रस्तुत कर रहा हूं—

''श्री सम्मेत शिखर जी तीर्थ के संबंध में नवीनतम स्थिति के संबंध में सदस्यों द्वारा उद्विग्नता से जानकारी मांगी जाती रही है । निम्नांकित सूचनाओं के द्वारा परिस्थिति की नवीनतम सही स्थिति आपको ज्ञात हो सकेगीः-

1. जनसाधारण के मन में यह भावना कि श्री सम्मेत शिखर जी विषयक सभी कानूनी केस हम हार गये हैं, पूर्णतः गलत व भ्रामक है ।

2. एकल सदस्यीय न्यायाधीश के फैसले के विरुद्ध हमने पटना उच्च न्यायालय की रांची पीठ के सम्मुख अपीलें (लैटर ऑफ पेटेन्ट) दायर की हैं, जो सभी विचारार्थ स्वीकार कर ली गयी हैं। अपीलों को विचारार्थ एव निर्णय के लिये न्यायालय के सम्मुख आयेंगे । शिखरजी के प्रबंधन हेतु एक समिति गठन के न्यायालय आदेश के विरुद्ध हमने सर्वोच्च न्यायालय में विशेष अनुमति याचिका (SLP) दायर की थी, परन्तु सर्वोच्च न्यायालय ने याचिका की सुनवाई की मध्यवर्ती स्थिति में हस्तक्षेप से मना करते हुए उच्च न्यायालय को निर्देश दिया अपीलों पर उच्च प्राथमिकता स्तर (Top Priority) पर निर्णय किया जाये । लेकिन इससे हमारी मुख्य अपीलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । श्री जैन श्वेताम्बर सोसाइटी, कलकत्ता ने भी इस विषय में सर्वोच्च न्यायालय में एक विशेष अनुमति याचिका (SLP) दायर की है, परन्तु सर्वोच्च न्यायालय ने इस संबंध में हस्तक्षेप करने से मना कर दिया है । आपको विदित ही है कि रांची बैंच ने विहार सरकार को आदेश दिया था कि इस तीर्थ के प्रबंधन हेतु एक समिति गठित की जाये जो अपीलों के अंतिम निर्णय होने तक कार्य करेगी । परन्तु आज तक इस समिति का गठन नहीं हो सका है ।

3. आपको विदित ही हे कि दिगम्बरों ने

चोपडा कुण्ड पर अनधिकृत निर्माण किया है एव 1993 मे तीन मूर्तिया वहा ले जाकर रखी थी। इस मामले मे अनेको कानूनी केस विभिन्न न्यायालयो मे लम्बित है। दिगम्बरो मे भव्य स्तर पर धूमधाम से 22/4/98 से 2/5/98 तक चोपडा कुण्ड पर पच कल्याणक महापूजा आयोजन करने का निर्णय किया था तथा जोर-शोर से सार्वजनिक घोषणाये भी की थीं।

4 हमारे प्रवल विरोध के बावजूद दिगम्बरो ने गलतबयानी तथा तथ्यो को तोड-मरोड़ कर 12/4/98 को कलेक्टर/उपायुक्त से महापूजा आयोजन की स्वीकृति प्राप्त कर ली थी एव सुरक्षा आदि की माग भी की थी। हमने इस विषय मे त्वरित कार्यवाही करके पूर्ण तथ्यो का विवेचन करते हुए विस्तृत ज्ञापन कलेक्टर/उपायुक्त गिरिडीह सहित अनेको सम्बद्ध अधिकारियो को दिया। आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि कलेक्टर/उपायुक्त गिरीडीह ने पूर्ण तथ्यो एव परिस्थितियो की जानकारी पाकर न केवल अपना 12/4/98 का आदेश निरस्त कर दिया अपितु अपने नवीनतम आदेश दिनाक 17/4/98 द्वारा निर्देश दिया कि पहाडी पर दिगम्बरो द्वारा प्रस्तावित महोत्सव नही आयोजित किया जा सकेगा। इसके अलावा उन्होने दिगम्बरो से 2 दिनो मे कारण बताओ नोटिस जारी किया है कि क्यो नहीं उन पर धोखाधडी, गलतबयानी करने धार्मिक विद्वेष फैलाने तथा कानून व्यवस्था की स्थिति बिगाड़ने का प्रयास करने के लिये आपराधिक मुकदमा दर्ज किया जाये ?

5 इस घटनाक्रम के बावजूद दिगम्बरो द्वारा अनवरत जोर देते रहने के कारण अत मे जिला अधिकारियो के पास धारा 144 लागू करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। अपने आदेश दिनाक 20/4/1998 द्वारा अधिकारियो द्वारा पहाडी पर 22/4/98 से 2/5/98 तक जो दिगम्बरो द्वारा प्रस्तावित आयोजित प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की अवधि थी निषेधाज्ञा लागू की गयी।

6 हमे प्राप्त विश्वस्त जानकारी के अनुसार दिगम्बरो ने लिखित रूप से सरकार को वचन दिया है कि वे चोपडा कुण्ड पर न कोई नव निर्माण करेगे और न ही वहा प्रतिमा स्थापित करेगे।

7 आशा है कि हमारी अपीले (Letter of Patent) उच्च न्यायालय के समक्ष ग्रीष्मावकाश के पश्चात् विचारार्थ प्रस्तुत होगी। हमने जा अधिवक्ताओ का पैनल बनाया है, उसमे प्रख्यात न्यायविद श्री सिद्धार्थ शकर राय तथा पटना स हमारे पुराने वकील, श्री वासुदेव प्रसाद भी सम्मिलित है।

8 कृप्या सभी सम्बन्धित व्यक्तियो को श्री सम्मेत शिखरजी के सबध मे नवीनतम स्थिति से अवगत करा दे, ताकि कोई भ्रम, सशय न रह। आवश्यकता होने पर अतिरिक्त वाछित जानकारी प्राप्त करने हेतु आप सहर्ष सम्पर्क कर सकते है।

सधन्यवाद

शानाभाई टी शाह

(कार्यकारी निदेशक)

श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन तीर्थ रक्षा ट्रस्ट

फ्लेट न 6 गोल्फ अपार्टमेन्ट,

महर्षि रमण मार्ग, नई दिल्ली-110 003

☆

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजीकृत) जयपुर

वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 1997-98

(महासमिति द्वारा अनुमोदित)

❑ **श्री मोतीलाल भडकतिया**, संघ मंत्री

पंजाब केसरी आचार्य देव श्री मद विजय वल्लभसूरीजी म.सा. की समुदायवर्तिनी महत्तरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म. सा. की शिष्या-प्रशिष्या साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म., सा. श्री पीयूषपूर्णाश्री जी म., साध्वी श्री पूर्णनन्दिता श्रीजी आदि ठाणा एवं समस्त सकल श्रीसंघ की सेवा में

वर्ष 1997-99 के लिए कार्यरत महासमिति की ओर से यह दूसरा आय-व्ययक विवरण वर्ष 1997-98 तथा विगत पर्यूषण से अब हुई विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त लेखा जोखा आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं।

विगत चातुर्मास

जैसा कि आपको विदित है कि वर्ष 1997 सम्वत् 2054 में यहां पर श्री पार्श्वचन्द्रसूरीश्वरजी म सा. के समुदायवर्ती उत्कृष्ट संयमी पूज्य मुनिराज श्री पुण्यरत्नचन्द्रजी म. सा. एवं इन्हीं की समुदायवर्ती साध्वी श्री पदमरेखाश्री जी म. आदि ठाणा-3 का चातुर्मास था। पर्यूषण पूर्व हुई विभिन्न गतिविधियों एवं आराधनाओं आदि का विवरण पिछले अंक में प्रकाशित किया जा चुका था। तत्पश्चात् पर्यूषण पर्व की भव्यातिभव्य आराधनायें आपकी पावन निश्रा में सानन्द सम्पन्न हुई। दि. 30-8-97 को पर्यूषण पर्व के प्रथम दिन अष्टान्हिका प्रवचन के साथ साथ दिन मे श्री पार्श्व पंच कल्याणक पूजा श्री ज्ञानचन्दजी तिलकचन्दजी अरुणकुमारजी पालावत की ओर से, दूसरे दिन की अन्तरायकर्म निवारण पूजा श्री भॅवरलालजी मूथा भीनमाल वाले तथा तीसरे दिन की वेदनीय कर्म निवारण पूजा की हजारीचन्दजी मेहता परिवार द्वारा पढाई गई।

पोथा जी ले जाने का लाभ श्री राजीवकुमारजी संजयकुमारजी साण्ड द्वारा लिया गया। भगवान महावीर जन्म वांचना दिवस पर पूर्ववत मास क्षमण तथा समकक्ष अन्य विशिष्ठ तपस्या करने वालों का बहुमान किया गया। माणिभद्र के 39वें अंक का विमोचन श्री भागचन्दजी छाजेड (ओसवाल अगरबत्ती) वालों के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। स्वप्नोत्सव की प्रभावना का लाभ दो सद् गृहस्थों द्वारा पृथक पृथक रूप से लिया गया। आठों ही दिन भव्य अंग रचनायें हुई तथा भादवा सुदी 3 को श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल एवं श्री सुमति जिन महिला मण्डल के तत्वावधान में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। बारसा सूत्र वांचन के साथ सम्वत्सरी की आराधनायें पूर्ण हुई। आठों दिन निरन्तर एकासणा आयम्बिल आदि करने वालों की भोजन व्यवस्था का लाभ गुप्त हस्ते एक

सदस्य द्वारा लिया गया । पर्यूषण मे बेला तथा सपूर्ण चातुर्मास काल मे बेले से ऊपर की तपस्या करने वालो के पारणे कराने का लाभ श्रीमती मीखीबाई वैद परिवार द्वारा लिया गया ।

पर्यूषण पर्व पूर्ण होने के पश्चात् भी प्रतिदिन आपके ओजस्वी प्रवचन होते रहे ।

आचार्य श्री गमचन्द्र जी महाराज की पुण्य तिथि निमित्त गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया । इस अवसर पर बीकानेर, मेडता, नागोर सरवाड, अहमदाबाद बम्बई आदि विभिन्न स्थाना से भाई बहिने पधारे तथा दिन मे पूजा पढाने का लाभ श्रीमती निर्मला बहिन द्वारा लिया गया । साधर्मियो की भक्ति का लाभ श्री मोतीचदजी वैद द्वारा लिया गया । दिनाक 27-9-97 को आचार्य श्री वल्लभसूरीजी म सा की भी जयन्ती मनाई गई। चातुर्मास काल मे क्रमिक अट्ठम की आराधना एव बरखेडा तीर्थ के निमित्त आयबिल करने वालो का बहुमान किया गया ।

पूरे पर्यूषण मे चौसठप्रहरी पौषध, मोक्ष-दण्डक- अक्षय-निधी-सिद्धचक्र आदि विशिष्ठ तप करने वालो का बहुमान किया ही गया साथ ही आसोजी ओली के समय अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन भी किया गया । आसोजी ओली कराने का लाभ श्री इन्दरचन्द जी हीराचन्द जी कोठारी परिवार द्वारा लिया गया । अष्टान्हिका महोत्सव मे प्रथम दिन दि 9-10-97 को पार्श्वनाथ पच कल्याणक पूजा श्री सुनीलकुमार मोतीलालजी जवरीलाल जी चौरडिया (2) नव्वाणु प्रकारी पूजा श्री पूनमचन्द भाई नगीनदास शाह (3) श्री ऋषिमण्डल महापूजन श्री कपिलभाई केशवलाल शाह (4) श्री सर्वतोभद्र महापूजन श्री बाबूलालजी तरसेम कुमार जी पारख (5) श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन श्री मगलचन्द ग्रुप (6) श्री भक्तामर महापूजन श्री कुशलराजजी सिघवी (7) श्री बृहद् शाति महापूजन श्री नरेशकुमारजी दिनेशकुमार जी राकेशकुमारजी मोहनोत एव (8) श्री सिद्धचक्र महापूजन श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ, जयपुर की ओर से पढाई गई । विविध विधान श्री धनरूपमलजी नागोरी ने सम्पन्न कराय तथा सगीतज्ञ श्री गोपालजी एण्ड पार्टी केकडी वाला ने श्री सुमति जिन महिला मण्डल जयपुर के साथ मिलकर भक्ति का रस जमाया ।

आसाजी ओलाजी, नव वर्षाभिनन्दन एव चौमासी चौदस की आराधनाये सम्पन्न कराने के पश्चात् कार्तिक सुदी 15 दि 15-11-97 का चातुर्मास परिवर्तन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । चातुर्मास परिवर्तन कराने का लाभ श्री बाबूलाल मणिलाल शाह परिवार द्वारा लिया गया । आपके निवास स्थान पर पूज्य मुनिराज, साध्वीजी म सा आदि के प्रवचन हुए तथा सघ भक्ति का लाभ लिया गया ।

साध्वीजी श्री पद्मरेखाश्रीजी मा सा की अस्वस्थता के कारण अमर जैन हास्पिटल म आपको भर्ती कराकर आपरेशन कराया गया तथा स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से आपको जयपुर रुकना पडा । इस बीच आप विभिन्न कालोनियो मे भी विचरण करते रहे । दि 13 11 97 को पूज्य मुनि पुण्यरत्नचन्द्र विजयजी म सा के जन्म दिवस दि 30 11 97 रविवार को श्री राजीव कुमार जी सजीव कुमार जी साड के नव व्यवसाय स्थल, चौड़ा रास्ता पर चतुर्विध सघ के साथ पधारे जहा आपका कामली वोहराकर अभिनदन किया गया । यहा पर आपका प्रवचन एव तत्पश्चात साधर्मिक वात्सल्य हुआ । इसी प्रकार दि 14-12-97 को

श्री महेन्द्रकुमार जी चौरडिया के यहां पर चतुर्विध संघ के साथ पदार्पण हुआ, जहां पर प्रवचनोपरान्त संघ भक्ति का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। होली चौमासी की आराधनायें भी आपकी निश्रा में सम्पन्न हुई।

दिनांक 12-2-98 को जयपुर से इन्दौर चातुर्मास करने के लिए विहार करने से पूर्व आप द्वारा जयपुर संघ पर किए गए उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु धर्म सभा का आयोजन हुआ। सौभाग्य से महत्तरा साध्वी श्री सुमंगला श्रीजी म. सा.आदि ठाणा तथा आचार्य पदम सागर जी के शिष्य मुनिराज श्री निर्मलसागरजी म. आदि ठाणा भी उपस्थित थे। श्री संघ की ओर से पू. मुनिराज एवं साध्वीजी म. सा. को कामली बोहरा कर भावभीनी विदाई दी गई। दि. 13-2-98 को आपने जयपुर से प्रस्थान किया।

वर्तमान चातुर्मास की स्वीकृति

विगत चातुर्मास पूर्ण होते ही विभिन्न गुरु भगवन्तों एवं साध्वीजी म. सा. से जयपुर में चातुर्मास करने हेतु सम्पर्क किया गया। इस हेतु देहली, अबोहर, साण्डेराव, मेडता, हस्तिनापुर, सोजत, अजमेर आदि स्थानों पर संघ के पदाधिकारी गए। उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागर जी के चातुर्मास की पूर्ण चेष्टा की किन्तु उनका अहमदाबाद की ओर देहली से प्रस्थान होने से जयपुर प्रवास संभव नहीं हो सका। महत्तरा साध्वीजी म. सा. के दिल्ली प्रवास काल में दि. 16-10-97 को एक बस लेकर संक्रांति के अवसर पर उपस्थित हुए, तदनन्तर साण्डेराव में आपकी निश्रा में सम्पन्न हुई दि. 30-4-98 की दीक्षा के अवसर पर भी उपस्थित होकर आपसे विनती की और उनसे बरखेड़ा तीर्थ एवं वासुपूज्य स्वामी जिनालय, मालवीय नगर के कार्य को दृष्टि में रखते हुए जयपुर में ही चातुर्मास करने की साग्रह विनती की लेकिन आचार्य श्री नित्यानन्दसूरीजी म सा का चातुर्मास कुचेरा में होने के कारण एवं कुचेरा श्रीसंघ की प्रबलतम भावना को मान देते हुए आपने स्वय ने तो कुचेरा में ही चातुर्मास करने की भावना जाहिर की लेकिन जयपुर श्रीसंघ की आग्रह भरी विनती एव उपरोक्त दोनों कार्यो की महत्ता को दृष्टि में रखते हुए आपने पू. साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म, सा. श्री पीयूषपूर्णाश्रीजी म आदि ठाणा-5 को जयपुर में चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की जिसकी आज्ञा गच्छाधिपति आचार्य श्री मद विजय इन्द्रदिन्नसूरीजी म सा ने दी। दि. 12-6-98 को अजमेर में जय बुलाई गई।

वर्तमान चातुर्मास

इस प्रकार परम पूज्य महत्तरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म. सा की असीम कृपा से बिराजित साध्वीजी म सा. की पावन निश्रा मे जयुपर एवं मालवीय नगर में चातुर्मास सम्पन्न हो रहे हैं।

आषाढ सुदी 10 शनिवार, दि 4 जुलाई, 1998 को सभी पांचों साध्वीजी म सा श्री प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म., सा. श्री पीयूषपूर्णा श्रीजी म, सा. श्री पूर्णकलाश्रीजी म. सा., सा. श्री सौम्यकला श्रीजी म.एवं सा. श्री पूर्णनन्दिताश्रीजी म. आदि ठाणा-5 का नगर प्रवेश हुआ। चैम्वर भवन से शोभा यात्रा प्रारम्भ होकर वापू वाजार, जौहरी बाजार होते हुए श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन पहुंचे। देव दर्शन के पश्चात् धर्म सभा हुई। संघ के उपाध्यक्ष श्री तरसेमकुमार जी पारख ने आपकी अगवानी कर जयपुर में चातुर्मास करने

हेतु पधारने के लिए श्रीसघ की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित की। श्री सुमति जिन श्राविका सघ द्वारा स्वागत गीत के पश्चात् साध्वीजी म सा ने भी अपने उद्गारो से श्रीसघ को लाभान्वित किया। श्री अभयकुमार जी चौरडिया उपाश्रय मत्री ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सघ मत्री श्री मोतीलाल भडकतिया ने सभा का सचालन किया। इस अवसर पर बाहर से पधारे हुए आगुतक पदाधिकारियो का बहुमान किया गया तथा सघ पूजा का लाभ श्री भवरलालजी मूथा भीनमाल वालो ने लिया। इस उपलक्ष मे आयोजित सामूहिक आयम्बिल एव दिन मे पार्श्वनाथ पच कल्याणक पूजा पढाने का लाभ भी श्री भवरलालजी मूथा परिवार द्वारा ही लिया गया।

आराधनाये

आपके शुभागमन के साथ ही त्याग तपस्या एव शिक्षण प्रशिक्षण के विभिन्न आयोजन प्रारम्भ हो गए। दि 8-7-98 को चातुर्मास स्थापना के चौमासी चौदस की आराधनाये हुई एव सूत्र एव चारित्र बोहराने का चढावा भी इसी दिन बुलाया गया। श्री धर्म सग्रह (श्रावक के 36 कर्त्तव्य) सूत्र बोहराने का लाभ श्री मगलचन्द ग्रुप द्वारा एव श्री पुण्यपाल चरित्र बोहराने लाभ श्री भवरलाल जी मूथा परिवार द्वारा लिया गया। श्रावण बदी 2 दि 11-7-98 को सामूहिक आयम्बिल श्रीमती पदमावतीदेवी कातिलालजी कावडिया द्वारा श्रावण बदी 5 दि 14-7-98 को सामूहिक आयम्बिल श्री महावीरचन्दजी मेहता जोधपुर वालो की ओर से कराए गए। इसी दिन सूत्र एव चारित्र बोहराने का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ और तभी से आपके इन पर प्रवचन हो रहे है। प्रतिदिन सघ पूजाए हो रही है तथा क्रमिक अट्ठम चार माह के लिए हो रहे है। दि 16-7-98 सक्राति महोत्सव भी आपकी पावन निश्रा मे मनाया गया।

दि 17-7-98 को सिद्ध पद के एकासणा श्री सोहनलाल जी पोरवाल एव दि 19-7-98 को दीपक एकासणा श्री मगलचन्द ग्रुप की ओर से कराए गए। दि 22-7-98 को तेरह काठिया के उपवास हुए जिनकी प्रभावना का लाभ श्री कुशलराजजी सिघवी परिवार द्वारा लिया गया। श्रावण सुदी 2 दि 25-7-98 को नीवी तप की आराधना कराने का लाभ श्री मूलचन्दजी रतनचन्दजी कोचर बीकानेर वालो ने लिया। दि 28 7 98 से पचरगी तप की आराधना प्रारम्भ हुई तथा इसी मध्य श्री शखेश्वरजी के अट्ठम भी सम्पन्न हुए। पारणा कराने का लाभ श्री कुशलराज जी सिघवी परिवार द्वारा लिया गया। रविवार दि 9 8 98 को मूठीया तप के एकासणा हुए जिसका लाभ श्री शैलेश भाई हिम्मतलालजी शाह परिवार द्वारा लिया गया।

दिनाक 16 8 98 को खीर एकासणा हुए जिसका लाभ श्री सुभाष भाई शाह द्वारा लिया गया।

श्राविकाओ, श्रावको एव बालको मे धर्म ज्ञान अभिवृद्धि हेतु विभिन्न प्रश्न पत्र परीक्षाए आयोजित कर प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परिक्षार्थियो को पुरस्कृत किया गया।

महिलाओ एव बालक बालिकाओ मे धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु पहेलियो की पूर्ति करने की तीन परीक्षाये हुई तथा दि 19-7-98 से दस दिवसीय महिलाओ के धार्मिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी सम्पन्न हुआ। जिसमे प्रतिदिन सघ भक्ति विभिन्न परिवारो द्वारा की गई।

इस प्रकार आपके आगमन के साथ ही श्रीसंघ में भारी उत्साह व्याप्त है तथा विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों की झडी लगी हुई है।

साध्वी श्री पूर्णकलाश्रीजी म. सा. एवं साध्वी श्री सौम्यकलाश्रीजी म. सा. की पावन निश्रा मे श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय परिसर में चातुर्मास हेतु बिराजने से वहां पर भी विभिन्न आयोजन सम्पन्न हो रहे हैं।

आषाढ सुदी 12 दि 6-7-98 को मालवीयानगर श्रीसंघ के तत्वावधान में नवनिर्मित जिनालय के गम्भारे में मूलनायक भगवान श्री वासुपूज्य स्वामी आदि जिन बिम्बों का गर्भ गृह में प्रवेश का कार्यक्रम भी आप सभी साध्वीवृन्द की निश्रा में सम्पन्न हुआ है।

अब भादवा बदी 12 दि. 19 अगस्त, 1998 से पर्वाधिराज पर्यूषण की भव्यातिभव्य आराधनायें सम्पन्न होने जा रही हैं।

साधु साध्वी वृन्द का शुभागमन

विगत चातुर्मास पश्चात् निम्नांकित साधु साध्वी वृन्द का जयपुर में शुभागमन हुआ तथा उनकी वैयावच्च एवं गुरु भक्ति का लाभ जयपुर श्रीसंघ को प्राप्त हुआ :-

(1) महत्तरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा.-9
(2) सा श्री प्रगुणाश्रीजी म. - 4
(3) मुनि श्री निर्मलसागरजी म. सा. - 2
(4) साध्वी श्री दिव्य प्रभाश्रीजी म. -5
(5) मुनि श्री बज्रतिलकविजयजी
(6) पन्यास श्री पदमविजयजी म.
(7) सा. श्री मृदुरसाश्रीजी म. - 4
(8) सा. श्री सौम्य प्रभा श्री जी म. - 3

इसी मध्य विभिन्न स्थानों से संघों का आगमन भी हुआ जिनकी भक्ति का लाभ भी इस श्रीसंघ को प्राप्त हुआ।

आ. श्री पदमसागरसूरीजी म.सा. का शुभागमन

इसी बीच आचार्य श्री पदमसागरसूरीजी म. सा. आदि ठाणा -13 का दिल्ली से कोबा जाते हुए जयपुर में शुभागमन हुआ। फागुण सुदी 3 रविवार, दि. 1 मार्च, 1998 को जयपुर सीमा मे पहुंचने पर श्रीसंघ के द्वारा आपकी अगवानी की गई। सिरहड्योढी बाजार से भव्य शोभा यात्रा के साथ आपका श्री आत्मानन्द सभा भवन मे शुभागमन हुआ। देवदर्शन के पश्चात् श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन में धर्म सभा हुई जिसमें विभिन्न स्थानों से पधारे हुए संघों के पदाधिकारियों प्रतिनिधियों सहित आचार्य भगवन्त ने भी अपने ओजस्वी प्रवचन से सम्बोधित किया। इस अवसर पर श्रीमती नरेन्द्र कंवर, राज्य मंत्री पर्यटन, राजस्थान सरकार मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थी। आपके साथ साथ विभिन्न संघों से पधारे हुए महानुभावो का भी अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर साधर्मी वात्सल्य का आयोजन भी हुआ जिसका पूरा लाभ श्री पूनमचन्दभाई नगीनदास शाह परिवार द्वारा लिया गया। आचार्य श्री के वीस दिन के जयपुर प्रवास काल में बाहर से पधारे हुए अतिथियों की भोजन व्यवस्था का लाभ भी उपरोक्त शाह परिवार द्वारा ही लिया गया।

प्रतिदिन आपके प्रवचन हुए जिसमें वहुत बडी संख्या में श्रोतागण उपस्थित हुए। श्रीसंघ द्वारा नए खरीद हुए भवन के पुनर्निर्माण कार्य का शुभारम्भ भी आपकी उपस्थिति में हुआ। पुराने जीर्ण शीर्ण भवन को गिरा कर समतल बनाई हुई

भूमि पर आपका प्रवचन हुआ तथा इस अवसर पर आयोजित साधर्मी वात्सल्य का लाभ भी श्री पूनमचन्दभाई नगीनदास शाह परिवार द्वारा लिया गया। दि 9-3-98 को इसी भूमि पर श्री माणिभद्रजी के हवन का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ जिसका लाभ श्री नरेशकुमारजी दिनेश कुमारजी राकेश कुमार जी मोहनोत द्वारा लिया गया।

दि 11-3-98 को शिवजीराम भवन म, दि 14 3 98 को श्री महावीर साधना केन्द्र जवाहरनगर मे दि 6-3-98 को श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय प्रागण एव प्राकृत भारती भवन का उद्घाटन समारोह मे तथा दि 17-3-98 को न्यू लाईट कालोनी स्थित जिनालय परिसर मे तथा दि 18-3-98 को दादावाडी, मोती डूगरी रोड पर आपके प्रवचन हुए तथा शेष दिनो मे श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन मे प्रवचन होते रहे।

दि 20 मार्च 1998 को प्रात आपने बरखेडा के चतुर्विध पैदल यात्री सघ के साथ जयपुर से विहार किया।

बरखेडा तीर्थ का पैदल यात्री सघ

जैसा कि आपको विदित है कि जयपुर से 30 किमी दूर स्थित बरखेडा ग्राम मे भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी का प्राचीन तीर्थ स्थित है। मूलनायक भगवान की प्रतिमाजी लगभग सात सौ वर्ष प्राचीन एव तीन सौ वर्ष पुराना जिनालय है। जिनालय के जीर्ण शीर्ण होने के कारण यहा पर नींव से लेकर शिखर तक विशाल एव भव्य जिनालय का नव निर्माण कार्य दिसम्बर 1995 मे प्रारम्भ हुआ था जो अबाध गति से जारी है।

आचार्य श्री पदमसागरसूरीजी म सा आदि ठाणा-15 के जयपुर पधारने पर श्री सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती जीवन बाई जी चौधरी की भावनानुसार एव महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म सा की प्रेरणा से आचार्य श्री की पावन निश्रा मे बरखेडा का पैदल यात्रा सघ निकालने की भावना जाहिर की जिसे आचार्य श्री ने मान देकर सहर्ष स्वीकार किया। शुक्रवार दि 20 मार्च, 1998 को आपने अपने शिष्य समुदाय सहित महत्तरा साध्वीजी सुमगलाश्रीजी म सा आदि ठाणा-9, साध्वी श्री शुभोदयाश्रीजी म ठाणा-6 खरतरगच्छ की साध्वी श्री शशीप्रभाश्रीजी म सा आदि ठाणा 8 एव लगभग 750 पैंदल यात्रियो के साथ प्रात 6 बजे श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन से प्रस्थान किया। प्रथम दिन श्री शखश्वर पार्श्वनाथ जिनालय, मालवीय नगर मे तथा दि 21-3-98 को शिवदासपुरा मे विश्राम के पश्चात् दि 22 मार्च 1998 रविवार को प्रात शिवदासपुरा स चतुर्विध सघ ने बरखेडा ग्राम मे प्रवेश किया। अद्भुत प्रभु प्रतिमाजी के दर्शन कर आप भाव विभोर हो गए। यहा पर धर्म सभा का आयोजन हुआ जिसमे आचार्य भगवन्त ने चल रहे जीर्णोद्धार की भूरि भूरि प्रशसा की और जयपुर श्रीसघ को साधुवाद दिया। यह महान तीर्थ का चतुर्विध पैदल सघ निकालने के लिए उन्होने सघपति हीराभाई चौधरी परिवार की भी प्रशसा की। इस अवसर पर नव-निर्मित भवन के दोनो हालो मे आचार्य श्री विजयानन्द सूरी म सा एव आचार्य श्री वल्लभसूरी जी म सा के स्थापित चित्रा का अनावरण भी चढावे के साथ क्रमश श्री उमरावमलजी सचेती परिवार एव श्री देवेन्द्र

कुमारजी सुरेन्द्र कुमार जी ओसवाल के कर कमलों से सम्पन्न हुआ । आचार्य भगवन्त की प्रथम गुरु पूजन के चढावे का लाभ श्री पूनमचन्द भाई नगीनदास शाह परिवार द्वारा लिया गया । संघ की माल कार्यक्रम में संघपति जी को माल पहनाने का चढावा बुलाया गया और पहली माल पहनाने का लाभ शान्तीलाल सूरजमलजी भास्करभाई चौधरी परिवार द्वारा लिया गया । संघपतिजी ने घोषणा की कि माल के चढावे से जो भी राशि प्राप्त होगी उसे बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार में भेट करते हैं । इसी अवसर पर सघपतिजी ने यह भी घोषणा की कि इस पावन प्रसंग की यादगारी मे उनके परिवार की ओर से चांदी की आगी बनवाकर वे भगवान ऋषभदेव स्वामी को समर्पित करेंगे ।

आज के दिन जयपुर एवं आसपास के क्षेत्र टोंक आदि से उमडे दर्शनार्थियों की अपार भीड देखे बनती थी एव मूलनायक श्री ऋषभदेव भगवान के प्रति प्रगट आस्था उत्तरोत्तर बढती प्रतीत हो रही थी । स्वामी वात्सल्य में प्रथम बार लगभग 2500 यात्रियों ने लाभ लिया । इसी अवसर पर तीर्थ के वार्षिकोत्सव का आयोजन भी सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर आयोजित साधर्मी वात्सल्य का भी लाभ भी श्री हीराभाई मंगलचन्दजी चौधरी (मंगलचंद ग्रुप) परिवार द्वारा लिया गया । श्री संघ की ओर से संघपति परिवार का अभिनन्दन किया गया । आचार्य भगवंत साधु, साध्वीवृंद, यात्रालुगण एवं कार्यकर्तागण सभी का संघपति द्वारा बहुमान किया गया एवं सभी के प्रति आभार व्यक्त किया ।

पैदल यात्री संघ सम्बन्धी विस्तृत विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है ।

बरखेड़ा में प्रथम बार चातुर्मास

बरखेडा तीर्थ के सम्बन्ध में विस्तार से प्रकाश डाला जाता रहा है और चल रहे जीर्णोद्धार कार्य के प्रति भारतवर्ष के संघों एवं श्रद्धालुओं का आकर्षण बढा है । यात्रियों की संख्या मे भी उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है ।

इसी क्रम में आचार्य श्री अरिहन्तसिद्धसूरीश्वरजी म. सा की समुदायवर्ती साध्वी श्री मृदुरसाश्री म. सा आदि ठाणा-4 ध्यान साधना निमित्त एकान्त, अनुकूल एवं सुरम्य स्थान पर चातुर्मास करने की भावना को लेकर वे जून के अंतिम सप्ताह मे जयपुर पधारी तथा आपने बरखेडा में चातुर्मास करने की भावना व्यक्त की । यह जयपुर तपागच्छ संघ का परम सौभाग्य एवं बरखेडा तीर्थ की अभिवृद्धि की कडी में एक श्रृंखला और जुडने का यह परम पुनीत प्रसंग उपस्थित हुआ एवं बरखेडा तीर्थ पर निरन्तर चल रहे निर्माण कार्य के साथ यहा प्रथम बार चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है ।

शुक्रवार, दि. 3 जुलाई, 1998 को आपका चातुर्मासिक प्रवेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें ग्रामवासियों के साथ साथ जयपुर से पधारे हुए श्रावक श्राविकाओं ने भी भाग लिया । धर्म सभा हुई जिसे पूज्य साध्वीजी म सा. ने सम्बोधित किया । साधर्मी भक्ति का आयोजन भी सम्पन्न हुआ तथा संघ पूजा करने का लाभ श्रीमान ज्ञानचन्दजी टुकलिया एवं श्री मोतीलालजी भडकतिया परिवार द्वारा लिया गया । तीर्थ एवं साध्वी श्री के दर्शनार्थ बाहर से पधारने वाले यात्रियों की सुविधा हेतु चौके की व्यवस्था भी यहां चालू की गई है ।

दीक्षा पर्याय की अनुमोदना

शासन दीपिका महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्री जी म सा के 38वे दीक्षा वर्ष एव उन्हीं की शिष्या विराजित पू सा श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म सा की दीक्षा की रजत जयन्ती के उपलक्ष मे दि 5 फरवरी 98 को श्री कपिलभाई शाह के निवास स्थान पर धर्म सभा का आयोजन हुआ । धर्म सभा मे श्री सघ की ओर से प्रभु प्रतिमाये भेट कर आपका अभिनन्दन किया गया । इस उपलक्ष मे यहा पर भी शाह परिवार की ओर से भक्तामर महापूजन पढाया गया और सघ भक्ति की गई ।

इसी प्रकार मालवीय नगर म विराजित साध्वी श्री शुभोदयाश्रीजी म स के दीक्षा पर्याय के 49 वर्ष पूर्ण होने पर श्री सघ की आज्ञा से श्री ज्ञानचन्दजी सुशील कुमारजी छजलानी क निवास स्थान पर समारोह हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रीमान हीराचन्द जी वैद ने की । इस शुभ अवसर पर आपके द्वारा प्रकाशित हुई "आदिश्वर अलबेलानी प्रश्नोत्तरी" एव ' भव आलोचना जिन भक्ति सामयिक" नामक पुस्तको का विमोचन श्री हीराभाई चौधरी एव हिन्डोन निवासी श्री कपूरचन्दजी जैन के कर कमलो से हुआ । धर्म सभा मे वक्ताओ ने साध्वी जी के दीर्घ दीक्षा पर्याय की पूर्णता पर आप के प्रति भाव भरी अभिव्यक्तिया की गई । सघ भक्ति के साथ-साथ दिन मे श्री शाति स्नात्र पूजा भी पढाई गई ।

दीक्षार्थी बहिनो का अभिनन्दन

परम पूज्य महत्तरा साध्वीजी म सा की पावन निश्रा मे साण्डेराव मे दि 30-4-98 को सम्पन्न हुई कु ममता एव सगीता चौपडा के दीक्षा क प्रसग पर जयपुर श्रीसघ के प्रतिनिधि उपस्थित हुए । पू आचार्य श्री धर्मधुरन्धरसूरीजी म सा एव पू महत्तरा साध्वीजी म सा का कामली बोहराने के साथ साथ दीक्षार्थी बहिना का स्मृति चिन्ह भेट कर अभिनन्दन किया गया ।

साथ ही खरतरगच्छ आमनाय की साध्वी श्री शशीप्रभाश्रीजी म सा की पावन निश्रा म जयपुर मे दि 7-2-98 को कु दीक्षा लाढा एव दि 27-5-98 को कु ममता जनीवाल की दीक्षा के अवसर पर भी इस सघ के प्रतिनिधि उपस्थित हुए तथा स्मृति चिह्न भेट कर दीक्षार्थी बहिनो का अभिनन्दन किया गया ।

कुचेरा मे चातुर्मासिक प्रवेश

शान्तिदूत आचार्य श्री नित्यानन्दसूरीजी म सा एव महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म सा आदि ठाणा के कुचेरा मे दि 4-7-98 को हुए चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर भी सघ का प्रतिनिधि मण्डल उपस्थित हुआ जिसम महासमिति के सदस्य श्री उमरावमलजी पालेचा, दानसिहजी कर्णावट अभयकुमारजी चौरडिया नरेन्द्रकुमारजी लूनावत, मोतीचन्दजी वैद नरेन्द्रकुमारजी कोचर, विजयकुमार जी सेठिया आदि सहित बहुत से भाई बहिन उपस्थित हुए ।

साधारण सभा की बैठक

सघ के पजीकरण के पश्चात् पजीकृत विधान के अनुसार प्रतिवर्ष भगवान महावीर जन्म वाचना दिवस को होती रही साधारण सभा की बैठक के अतिरिक्त प्रथम बार दि 19-10-97 को साधारण सभा की बैठक सम्पन्न हुई । माननीय सदस्यो ने सघ की अभिवृद्धि, कार्य कलापा मे और सुधार करने सम्बन्धी अपने अपने सुझाव दिए जिन्हे यथा सम्भव क्रियान्वित करने

का प्रयास किया गया है ।

सदस्य बनने हेतु विनम्र निवेदन

तपागच्छ आमनाय की मान्यता वाले महानुभाव जो अभी तक संघ के पंजीकृत सदस्य नहीं बने हैं उनसे साग्रह निवेदन है कि निर्धारित प्रक्रियानुसार सदस्य बनने की कृपा करें ।

शोकाभिव्यक्ति

इस वर्ष श्री संघ को अपने तीन विशिष्ठ समाज सेवी एवं पदाधिकारियों का अभाव सहना पडा है :—

(1) श्रीमान किस्तूरमलजी सा शाह, भूतपूर्व अध्यक्ष, तपागच्छ संघ जयपुर

(2) श्रीमान निहालचन्दजी सा नाहटा, भूपू अध्यक्ष, मदिर श्री ऋखबदेव भगवान ट्रस्ट, (आगरे वालों का नया मंदिर, जयपुर, जहा पर तपागच्छ सघ का उपाश्रय स्थित है ।)

(3) श्री भगवानदास जी पल्लीवाल, भूपू हिसाब निरीक्षक, भण्डाराध्यक्ष महासमिति के सदस्य, तपागच्छ संघ जयपुर एवं श्री महावीर जी तीर्थ रक्षा समिति के मंत्री ।

सभी के प्रति शोकाभिव्यक्ति प्रगट कर श्रद्धांजलि दी गई ।

स्थायी गतिविधियां

विगत चातुर्मास पश्चात् हुए विभिन्न कार्य कलापों में से उल्लेखनीय घटनाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् अब मैं संघ की स्थायी गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहा हूं ।

श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय

इस श्री संघ के 271 वर्षीय प्राचीन जिनालय की व्यवस्था एवं गतिविधियां सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही हैं । इस जिनालय परिसर में आचार्य श्री हीरसूरीश्वरजी म सा. एवं आचार्य श्री विजयानन्दसूरिजी म. सा. की प्रतिमायें बिराजित है । दि 2-6-98 को विजयानन्दजी म सा की तथा दि. 10-9-98 को आचार्य श्री हीरसूरिश्वरजी म सा. की जयन्ति के उपलक्ष में पूजायें पढाई गई जिनका लाभ श्री बद्रीप्रसाद जी आशीषकुमार जी जैन द्वारा लिया गया ।

संघ का वार्षिकोत्सव भी परम्परागत रूप से ज्येष्ठ सुदी 10, वि. सं. 2055 दि. 4 जून, 1998 को सम्पन्न हुआ । इस बार के वार्षिकोत्सव में श्री सघ की आज्ञा से पूजा पढाने तथा साधर्मी वात्सल्य सहित समस्त व्यय का द्रव्य लाभ श्री पतनमलजी नरेन्द्रकुमार लूनावत परिवार द्वारा लिया गया । ध्वजा चढाने का लाभ भी आपने ही प्राप्त किया । सौभाग्य से इस अवसर पर पू. पन्यास प्रवर श्री पदमविजयजी म. सा एवं साध्वी श्री शुभोदयाश्रीजी म. सा. की सुशिष्यायें भी उपस्थित थी जिनकी पावन निश्रा में सत्ररह भेदी पूजा पढाई गई । पूजा पढाने में श्री सुमति जिन श्राविका मंडल ने भक्ति रस की अद्भुत धारा प्रवाहित की ।

लगभग 16 वर्ष पूर्व आचार्य श्री हीँकारसूरीश्वरजी म. सा की प्रेरणा से प्रारम्भ की गई सामूहिक स्नात्र पूजा पढाने का कार्य भी निरन्तर जारी है । वर्ष भर के लिए पूजा पढाने वालों ने अपने नाम पूर्व में ही अंकित करा रखे हैं । इस प्रकार प्रतिदिन वाद्यवृन्द एवं अष्टप्रकारी पूजा की सामग्री के साथ प्रतिदिन स्नात्र पूजा पढाई जा रही है ।

अष्ट प्रकारी पूजा की सामग्री निश्चित मात्रा मे वर्ष भर उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी पिछले सात वर्षो से निरन्तर जारी है । लाभार्थियो की सख्या अधिक होने पर भी आपसी सहमति से प्रत्येक सामग्री का पृथक पृथक लाभ दिया जा रहा हे । सामग्री भेटकर्त्ताओ का विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है ।

इस जिनालय के अन्तर्गत इस वर्ष 1997-98 मे कुल रू 7,19 790/95 की आय तथा रू 1 47,693/25 का व्यय हुआ है । शेष राशी का उपयोग बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार मे किया जा रहा हे । मदिर प्रागण मे आवश्यक मरम्मत एव रग रोगन का कार्य भी कराया गया है ।

श्री सीमन्धर स्वामी मदिर, जनता कॉलोनी

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती जा रही है । मदिर निर्माण का कार्य तो पहले ही पूर्ण हो गया था लेकिन आवश्यक परिवर्तन परिवर्द्धन कराया गया हे ।

यहा का वार्षिकोत्सव भी परम्परागत रूप से मिगसर बदी 12, मगलवार सम्वत् 2055 दि 26-11-98 को सानन्द सम्पन्न हुआ । ध्वजारोहण का लाभ पूर्ववत् डा भागचन्दजी छाजेड परिवार को ही दिया गया । पू मुनिराज श्री पुण्यरत्नचन्द्रविजयजी म एव साध्वी श्री पद्मरेखाश्री जी म सा आदि ठाणा भी इस अवसर पर उपस्थित हुए ।

श्री जिनालय के अन्तर्गत रू 21222/35 की आय तथा रू 43869/50 का व्यय हुआ है । जीर्णोद्धार कार्य पर भी 21983/50 का व्यय हुआ है ।

श्री ऋषभदेव स्वामी का तीर्थ, बरखेडा

इस तीर्थ के बारे म समय समय पर विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की जाती रही है। जीर्ण शीर्ण जिनालय के स्थान पर विशाल भव्य एव सम्पूर्ण आरास का शिखरबद्ध जिनालय बनाने के कार्य का शुभारम्भ महत्तरा साध्वी श्री सुमगलाश्रीजी म सा की प्रेरणा मार्गदर्शन एव निश्रा मे दि 29-11-95 को भूमि पूजन एव दि 1-12-95 को शिला स्थापनाओ के साथ जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ हो गया था जो निरन्तर अबाध गति से जारी है । दि 16-2-97 को गम्भारे की छत पर शिला स्थापनाये होकर शिखर निर्माण का कार्य भी प्रारम्भ हो गया था जो आधे से अधिक पूरा हो चुका है । यात्रिया के आवास हेतु जो एक मजिला भवन बनाया गया था उसके ऊपर दूसरी मजिल मे एक बडा हाल श्री मौरीलालजी रानी वालो के सौजन्य से तथा एक छोटे हाल का निर्माण श्री पतनमलजी नरेन्द्रकुमारजी लूनावत परिवार के सौजन्य से स्व श्रीमती सरला धर्मपत्नी नरेन्द्रकुमार जी लूनावत की स्मृति मे पूरा हो गया है । यात्रियो के बढते आवागमन को दृष्टिगत रखते हुए यहा पर भोजनशाला शीघ्रातिशीघ्र शुरू करने की प्रेरणा रही है । भोजनशाला के भवन के निर्माण कार्य का शुभारम्भ दि 18-1-98 को श्री बुदसिहजी मोतीचन्दजी वैद के सौजन्य से पूर्ण कराने हेतु महत्तरा साध्वीजी म सा के शुभाशीर्वाद एव साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभा श्रीजी म सा आदि ठाणा-3 की निश्रा मे दि 18-1-98 को भूमि पूजन के साथ सम्पन्न हुआ । भवन निर्माण कार्य जारी हे । महत्तरा साध्वीजी म सा की प्रेरणा स

ही इस भवन के परिसर में एक फोटो लगाने का नकरा रू. 5100/- निर्धारित किया गया है। फोटु के माध्यम से राशी भेंटकर्त्ताओं का उत्साह प्रशंसनीय है। चतुर्विध पदयात्री संघ एवं बरखेड़ा तीर्थ स्थल पर प्रथम बार सम्पन्न हो रहे चातुर्मास का विवरण विस्तार से ऊपर दिया जा चुका है। संघ का वार्षिकोत्सव भी इस बार चतुर्विध पैदलयात्री संघ के शुभागमन के अवसर दि. 22-3-98 को ही सम्पन्न हुआ जिसके साधर्मी वात्सल्य का लाभ श्री हीराभाई मंगलचन्द चौधरी (मगलचंद ग्रुप) परिवार द्वारा लिया गया।

जिनालय के जीर्णोद्धार कार्य पर देवद्रव्य के अन्तर्गत जुलाई, 98 तक रू. 65,11,950.75 की आय तथा रू. 85,21,408.95 का व्यय हुआ। इस प्रकार लगभग बीस लाख रूपये की राशि श्री संघ के कोष से समायोजित हुई है। आवास गृहों के निर्माण आदि के अन्तर्गत साधारण सीगे में 13,23,551.00 की आय तथा 10,04,806.82 का व्यय हुआ है। विभिन्न ट्रस्टों एवं संघों से प्राप्त राशि का विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

महत्तरा साध्वीजी म. सा. की प्रेरणा है कि यहां पर एक धर्मशाला का और निर्माण कराया जावे। क्षेत्र की भूमि सीमित होते हुए भी आठ कमरों की एक धर्मशाला बनाने का प्रस्ताव विचाराधीन है।

कार्य विशाल एवं योजनायें महत्त्वाकांक्षी हैं तथा विभिन्न संघों ट्रस्टों एवं जिनालयों में एकत्रित राशी के सही सदुपयोग का सुअवसर भी है। अतः सभी दानदाताओं से इस पुनीत कार्य में अधिक से अधिक योगदान करने की साग्रह विनती है।

श्री शान्तिनाथ स्वामी जिनालय, चन्दलाई

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। आवश्यक मरम्मत सफेदी आदि का कार्य भी कराया गया है।

इस जिनालय का वार्षिकोत्सव परम्परागत रूप से मगसर बदी 5 बुधवार, दि 19-11-97 को धूमधाम से मनाया गया है। सत्तरह भेदी पूजा पढाने के साथ साथ साधर्मी वात्सल्य का आयोजन भी सम्पन्न हुआ। ध्वजा चढाने का लाभ श्री नरेशकुमारजी दिनेशकुमारजी राकेश कुमारजी मोहनोत द्वारा लिया गया।

इस जिनालय के अन्तर्गत रू. 1562/50 की आय तथा रू. 9293 का व्यय हुआ है।

श्री जैन श्वे. तपागच्छ उपाश्रय

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालों का रास्ता तथा भगवान आदिनाथ जिनालय मारूजी का चौक परिसर में स्थित तपागच्छ उपाश्रय की व्यवस्था भी सुचारु रूप से सम्पन्न होती रही हैं।

नए खरीदे हुए भवन का पुनर्निर्माण

जैसा कि पूर्व विवरण में अंकित किया गया था कि श्री संघ द्वारा घी वालों का रास्ते में बनजी ठोलिया की धर्मशाला के पास मकान सं 1816 खरीदा गया था। बरखेड़ा के कार्य के कारण पिछले वर्ष इसे बारे में कोई प्रगति नहीं हुई थी लेकिन अब इस ओर कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गई। आचार्य श्री पदमसागरसूरीजी म. सा. के जयपुर आगमन से पूर्व ही जीर्ण शीर्ण पुराने भवन को गिराकर समतल भूमि तैयार कर दी गई तथा इसी भूमि पर आचार्य भगवन्त का प्रवचन, माणिभद्रजी का हवन, साधर्मी वात्सल्य सम्पन्न

हुआ था जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

नवनिर्मित कराए जाने वाले चार मजिले भवन की रूपरेखा नक्शे आदि तैयार हो रहे है जिन्हे अतिम रूप देने के पश्चात नगर निगम मे स्वीकृति हेतु प्रेपित किये जावेगे । नगर निगम से नक्शे पास होकर आते ही कार्यारम्भ कर दिया जावेगा । निर्धारित नकरो का विवरण पृथक् से प्रकाशित किया जा रहा है

निर्माण कार्य की देखरेख सहित सम्पूर्ण कार्य को पूर्ण कराने हेतु पृथक से समिति का गठन किया जा रहा हे । श्री नरेन्द्रकुमार जी लूनावत ने इस समिति का सयोजक का दायित्व वहन करना स्वीकार कर लिया हे ओर उन्ही की देखरेख मे पुराने भवन को गिराकर समतल भूमि तैयार करने का कार्य पूर्ण हुआ है ।

श्री वर्धमान आयम्बिलशाला

श्री वर्धमान आयम्बिशाला की व्यवस्था भी सुचारु रूप से सम्पन्न होती रही है । महत्तरा साध्वी जी म सा की प्रेरणा से बरखेडा तीर्थ निर्माण कार्य पूर्ण होने तक वर्ष भर प्रतिदिन क्रमवार हो रहे- इस क्रमिक आयम्बिल के साथ साथ अन्यान्य को भी आयम्बिल करने की प्रेरणा मिली हे जिससे आयम्बिलकर्त्ताओ की सख्या मे भी वृद्धि हुई है ।

इस सीगे मे रू 1 01 215/30 की आय तथा रू 56,180/- का व्यय हुआ है । आयम्बिलशाला सीगे की बापू बाजार की दुकान के विक्रय से प्राप्त राशी को स्थायी कोष स जमा कराने के फलस्वरूप प्राप्त ब्याज के कारण यह सीगा आर्थिक दृष्टि से पूर्ण रूपेण सुदृढ है । आवश्यकता इसी वात की है कि इस व्यवस्था का अधिक से अधिक उपयोग तपस्वीगण करे ।

श्री जेन श्वेताम्बर भोजनशाला

आचार्य श्रीमद् कलापूर्णसूरीश्वरजी म सा की सद्प्रेरणा से वर्ष 1985 मे स्थापित भोजनशाला की व्यवस्था भी सुचारू रूप स सम्पन्न होती रही हे। न केवल बाहर से पधारे हुए अतिथि अपितु स्थानीय व्यक्ति, छात्र, परिवार रहित रह रहे, कर्मचारी आदि भी इसका पूरा लाभ उठा रहे है । खाद्य सामग्री के भावो मे अत्यधिक वृद्धि होने पर भी यह सीगा टूट से मुक्त रहा हे। इस वर्ष रू 1,62 104/- की आय तथा रू 1,54,878/- का व्यय हुआ है । लगभग 14021 व्यक्तियो द्वारा इसका उपयोग किया गया है ।

श्री समुद्र इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म सा की सद्प्रेरणा से स्थापित इस कोष मे भेट एव ब्याज से कुल रू 28102/40 की आय तथा रू 7504 का व्यय हुआ हे । मासिक सहायता शिक्षा चिकित्सा एव अन्य कार्यो हेतु राशी भेट की गई हे ।

महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर - आर्थिक सहायता देने के साथ साथ यह सोच भी रहा है कि महिलाओ एव बालिकाओ को प्रशिक्षण देकर इस तरह से तैयार कर दिया जावे कि व स्वरोजगार करके स्वावलम्बी जीवन व्यतीत कर सके । इसी भावना को मूर्त रूप देने के लिए प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश के दिनो मे प्रशिक्षण शिविर का आयोजन प्रतिवर्ष किया जा रहा है। इसी क्रम मे इस बार भी दिनाक 5 जून से 22जून 98 तक सुश्री ¯।रोज कोचर एव सुश्री आशा बसल के सयोजकत्व मे प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया

गया जिसमें विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण दिया गया। शिविर सम्बन्धी विस्तृत विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है । शिविर में विभिन्न विषयों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों एवं प्रशिक्षिकाओं को स्मृति चिन्ह भेंट कर पुरस्कृत करने का समारोह दि. 12-7-98 को साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्रीजी म. सा. की निश्रा में सम्पन्न हुआ जिसमें संघ के अध्यक्ष हीराभाई चौधरी ने पुरस्कार वितरित किए।

श्री साधारण खाता

सात क्षेत्र के विभिन्न सीगों में यही खाता सबसे अधिक द्रव्य साध्य है । इस वर्ष इस सीगे पर अत्यधिक द्रव्य भार रहा जिसमें मुख्य रूप से शासन दीपिका सा. श्री सुमंगलाश्रीजी म. सा की महत्तरा पदवी के अवसर पर जयपुर श्रीसंघ की ओर से हस्तिनापुर में ली गई बोली का भुगतान, आचार्य श्री पदमसागरसूरीजी म. सा. का जयपुर आगमन, साधु साध्वी वृन्द की विहार व्यवस्था, चिकित्सा आदि पर व्यय, सम्पूर्ण भवन की सफेदी, खरीदे हुए नए भवन को गिराकर समतल भूमि कराने का खर्चा, आवश्यक मरम्मत कार्य, रंगरोगन आदि पर व्यय आदि रहे है । इस वर्ष इस सीगे के अन्तर्गत रू. 425182/83 की आय तथा रू. 681979/50 का व्यय हुआ । वर्षो पश्चात् यह सीगा इस वर्ष टूट में रहा है जिसका समायोजन पूर्ववर्ती वर्षो की इस सीगे की बचत के अन्तर्गत किया गया है ।

पूर्व व्यवस्थानुसार ही इस वर्ष भी चारों वार्षिकोत्सवों के आय व्यय का समायोजन एक साथ किया गया है । इस बार बरखेडा एवं श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालयों के वार्षिकोत्सवों का द्रव्य भार क्रमशः श्री मंगलचन्द ग्रुप एवं श्री लूनावत परिवार द्वारा वहन करने के कारण दो चिट्ठे ही कराए गए । इस उपलक्ष में कतिपय दानदाताओं से राशी प्राप्त कर बरतनों की खरीद की गई है और अब संघ के पास में बरतनों की पर्याप्त व्यवस्था हो गई है ।

जीवदया खाता

विभिन्न अवसरों पर अनुकम्पा दान के रूप में जीवदया हेतु एकत्रित की गई राशी के अन्तर्गत रू 39,500/20 की आय हुई तथा 28,145/- का व्यय हुआ है। साध्वी श्री पदमरेखा श्री जी म सा की सद्प्रेरणा से श्री बनास काठा जिला सहायक फड ट्रस्ट को 6000/- तथा श्री माडल पाजरा पोल को 1000/- भेजे गए । श्री राजस्थान गो सेवा सघ जयपुर द्वारा प्रारम्भ की गई गो-पालन योजना जिसके अन्तर्गत एक गाय के लिए 1111/- की राशी निर्धारित की गई, 5 गायों के लिए 5555/- की राशि इस कोष से भेंट की गई। कई दानदाताओं ने पर्यूषण पर्व के दिनों में काफी बडी धनराशि भेंट की हैं । जयपुर और बरखेडा मे प्रतिदिन कबूतरो को ज्वार डाली जा रही है ।

श्री ज्ञान खाता

इस सीगे के अन्तर्गत इस वर्ष रू 140283/ की आय तथा रू 7820/70 का व्यय हुआ है ।

जैसा कि पूर्व विवरण में अंकित किया गया था कि महत्तरा साध्वीजी म. सा. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में तथा साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म सा. के अथक प्रयासों से आराधना साधना, तप ज्योत एवं विभिन्न पूजा संग्रह नामक पुस्तकों का प्रकाशन किया गया था । इसी कडी

म इस वर्ष भी श्री पर्व देव वदना नामक पुस्तक का प्रकाशन भी जयपुर तपागच्छ सघ के सौजन्य से हुआ हे ।

श्वताम्बर स्कूल मे चल रही धार्मिक पाठशाला मे 1100/- रू का योगदान किया गया है। साध्वीजी म सा श्री पदमरेखाश्रीजी म सा की पुस्तक प्रकाशन हेतु रू 11,000/- का योगदान श्री अरविन्द भाई शाह अहमदाबाद को इस वर्ष मे भेजा गया हे ।

धार्मिक पाठशाला

प्रशिक्षक के अभाव मे पूर्व मे चल रही धार्मिक पाठशाला को बद करना पडा था अब प्रशिक्षिका की सेवाए मिल जाने से दिसम्बर, 97 से धार्मिक पाठशाला पुन प्रारम्भ कर दी गयी है। अभिभावकगण अपने बालक-बालिकाओ को धार्मिक शिक्षा एव सस्कार निर्माण हेतु अधिक से अधिक सख्या मे इस पाठशाला मे भेजकर लाभ उठाव तभी इसकी उपयोगिता हे ।

पुस्तकालय एव वाचनालय

पुस्तकालय एव वाचनालय की व्यवस्था भी सुचारू रूप से सचालित है । नए कर्मचारी की नियुक्ति के पश्चात् अनवरत रूप से पुस्तकालय से पुस्तके प्राप्त करने की व्यवस्था उपलब्ध है ।

उद्योगशाला एव सिलाई शाला

यह व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारु रूप से सचालित होती रही हे । जैन महिलाये एव बालिकाय इसका अधिक से अधिक उपयोग कर लाभान्वित हो सके तो ही इसकी उपयोगिता है ।

माणिभद्र के 39वे अक का प्रकाशन

महासमिति के लिए यह अत्यन्त सतोष का विपय है कि सघ के पूर्व स्वनाम धन्य पदाधिकारियो द्वारा चालीस वर्ष पूर्व प्रारम्भ की गई स्मारिका प्रकाशन की यह कडी निर्बाध रूप से जारी है । इस वर्ष इस स्मारिका का 40वा अक प्रकाशित किया जा रहा है । 39व अक का प्रकाशन भी यथा समय हुआ तथा इसका विमोचन भगवान महावीर जन्म वाचना दिवस को श्रीमान भागचन्दजी सा छाजेड (ओसवाल अगरबत्ती) के कर कमलो से सम्पन्न हुआ था । इस 39वे अक के प्रकाशन मे विज्ञापन के द्वारा दानदाताओ से रू 57,350/- की प्राप्ति एव रू 48,109/- का व्यय हुआ है ।

पिछले दो अको मे बरखेडा तीर्थ के अधिपति मूलनायक भगवान श्री ऋषभदव स्वामी के चित्र प्रकाशित किए गए थे । इस वर्ष मालवीय नगर मे नव-निर्मित जिनालय के मूलनायक भगवान महावीर श्री वासुपूज्य स्वामी का चित्रमय परिचय के प्रकाशित किया जा रहा है।

आचार्य भगवन्तो, साधु-साध्वीजी म सा विद्वान सृजनकर्त्ताओ की लेखनी से पठनीय सामग्री के साथ साथ सघ का वार्पिक विवरण एव अकेक्षित आय-व्यय विवरण हर वर्ष प्रकाशित किया जा रहा हे । चूकि यह स्मारिका भगवान महावीर जन्म वाचना दिवस पर निश्चित रूप से प्रकाशित होती है अत विद्वान मनीपिया लेखका एव सृजनकर्त्ताओ से विनम्र निवेदन है कि अपनी रचनाये एक माह पूर्व अवश्य भिजवाने की कृपा करते रहे ताकि उन्हे सम्मिलित किया जा सके ।

श्री सुमति जिन श्राविका सघ

पूज्य साध्वी देवेन्द्रश्रीजी म सा की सद्प्रेरणा से स्थापित श्राविकाओ की सगठित सस्था श्री सुमति जिन श्राविका सघ के कार्य कलाप भी वर्ष भर सुचारु रूप से सम्पन्न होते रहे है ।

पूजा पढाने एवं भक्ति के कार्यक्रम प्रस्तुत करने के साथ साथ विभिन्न संघों में सम्पन्न होने वाले आयोजनों में श्राविकाओं का योगदान एवं सहयोग सदैव प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय रहता ही है।

श्रीमती उषा साण्ड, मंत्री द्वारा प्रस्तुत श्राविका मण्डल का विस्तृत विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

मण्डल की गतिविधियां भी वर्ष भर सुचारू रूप से संचालित होती रही हैं तथा सभी आयोजनों में मण्डल के सदस्यों का भरपूर सहयोग प्राप्त होता ही है। आज की सबसे बडी आवश्यकता यह है कि नवयुवक इस संस्था के साथ जुडें तथा समाज सेवा के कार्यो में समर्पित हों।

मण्डल मंत्री श्री अशोक पी. जैन द्वारा प्रस्तुत विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

संघ की आर्थिक स्थिति

इस वर्ष संघ की निधि में कुल रू. 54,22,157/53 की आय तथा रू. 54,35,017/37 का व्यय हुआ है जिसका विस्तृत विवरण संलग्न *अंकेक्षित आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा वर्ष 1997-98 में दिया गया है। बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार कार्य के साथ साथ विभिन्न सीगो में निरन्तर हो रही वृद्धि के उपरान्त भी रू. 12,859/84 की टूट रही है।

कर्मचारी वर्ग

संघ की गतिविधियों को संचालित करने में कर्मचारी वर्ग का सहयोग एवं निष्ठा अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। महासमिति द्वारा भी उनके आर्थिक हितों के प्रति सजगता रखते हुए इस वर्ष भी अप्रैल, 98 से उनके वेतन में पर्याप्त वृद्धि की गई है तथा एक माह का वेतन पुरस्कार स्वरूप पृथक से दिया जा रहा है।

धन्यवाद ज्ञापन

उपरोक्त विवरण में प्रसंगवश आए हुए दानदाताओं एवं सहयोगकर्त्ताओं के नामों का उल्लेख ही हो सका है लेकिन श्रृंखला बहुत विस्तृत है जिनके उदारमना सहयोग से यह श्रीसंघ उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। महासमिति सभी ज्ञात-अज्ञात दानदाताओं, भक्तिकर्त्ताओं एवं सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

श्री राजेन्द्रकुमारजी चतर, सी ए निरन्तर कई वर्षो से संघ के अंकेक्षक का दायित्व सेवा भावना से निशुल्क निभा रहे हैं जिसके लिए महासमिति आपके प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करती है। न केवल महासमिति अपितु साधारण सभा द्वारा भी आपको ही तीन वर्ष के लिए श्रीसंघ का अंकेक्षक नियुक्त किया गया है।

समापन

इस प्रकार महासमिति द्वारा अनुमोदित उपरोक्त विवरण एवं आय-व्यय विवरण वर्ष 1997-98 श्री संघ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मैं इस विवरण का समापन कर रहा हूं।

जय महावीर

*** नोट :** सघ के पंजीकृत विधान के अनुसार अंकेक्षित आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा 1997-98 का अनुमोदन संघ की साधारण सभा की आगामी बैठक में किया जाना है। उक्त विवरण श्री संघ के सभी माननीय सदस्यो की सूचनार्थ प्रकाशित किया गया है। इसी प्रति का उपयोग साधारण सभा की बैठक में भी करने की कृपा करें।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

आय–व्यय खाता

(कर निर्धारण

गत वर्ष की रकम	व्यय		इस वर्ष की रकम
1,18,763 25	**श्री मदिर खर्च**		1,47,693 25
	श्री आवश्यक खर्च	1,08 834 25	
	श्री विशेप खर्च	38,859 00	
3,40 107 35	**श्री साधारण खर्च**		6,81,979 50
	श्री आवश्यक खर्च	2 21,629 50	
	श्री विशेप खर्च	4 60 350 00	
52,734 25	**श्री ज्ञान खर्च**		7,820 70
	श्री आवश्यक खर्च	7,820 70	

घी वालों का रास्ता, जौहरी बजार, जयपुर

वर्ष 1997-98

वर्ष 1998-99

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
7,69,707.70	**श्री मंदिर खाते आमद**		7,19,790.95
	श्री भण्डार भेंट व गोलख	6,78,827.05	
	श्री पूजन खाता	6,394.80	
	श्री किराया खाता	2,100.00	
	श्री ब्याज खाता	7,713.00	
	श्री चंदलाई मंदिर	1,562 50	
	श्री जोत खाता	16,019,70	
	श्री मंदिर जीर्णोद्धार	7,173 90	
83,956.75	**श्री मणीभद्र भण्डार खाते आमद**		1,28,117.35
5,25,569.65	**श्री साधारण खाते आमद**		4,25,182 83
	श्री भेट खाता	1,96,329 98	
	श्री किराया खाता	9,804.00	
	श्री मणीभद्र प्रकाशन	57,350.00	
	श्री ब्याज खाता	48,227.00	
	श्री साधर्मी वात्सल्य	63,296.00	
	श्री उपाश्रय खाता	71 85	
	श्री उद्योग शाला	1,090.00	
	श्री सदस्यता शुल्क	65.00	
	श्री आवेदन शुल्क	65.00	
	श्री बहुमान खाता	25,223.00	
	श्री अट्ठाई महोत्सव	23,661.00	
1,29,611.40	**श्री ज्ञान खाते आमद**		1,40,283.75
	श्री भेंट खाता	1,24,580.75	
	श्री ब्याज खाता	15,303.00	
	श्री पुस्तक विक्री	400.00	

44,481 05	श्री आयम्बिल शाला खर्च		57,243 00
	श्री आवश्यक खर्च	56,180 00	
2,248 00	श्री विशेष खर्च	1,063 00	
34,52 365 00	श्री वरखेडा मदिर खर्च		41,44,823 32
	पूजन खर्च	14,247 00	
	जीर्णोद्धार	31 17,400 50	
	जोत	10,560 00	
	जीर्णोद्धार साधारण	10,02,615 82	
72,213 45	श्री जनता कॉलोनी खर्च		65,853 00
	श्री मदिर खर्च	43,869 50	
	जीर्णोद्धार	21,983 50	
9 596 00	श्री जीव दया खाते खर्च		28,145 00
1 42,530 05	श्री भोजनशाला खाते खर्च		1 54,878 00
5 901 55	श्री वैय्यावच खाते खर्च		38,593 60
11 161 00	श्री साधर्मी सेवा कोष खाते खर्च		7,504 00
-	श्री नया भवन निर्माण खाते खर्च		1 00,484 00
4 21 442 40	श्री शुद्ध वचत सामान्य कोष मे हस्तान्तरित की गई		
46 73,543 35			**54 35 017 37**

(हीराभाई चौधरी)
अध्यक्ष

मोतीलाल भडकतिया
सघ मत्री

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ (पजी.) जयपुर

60,298.00	**श्री आयम्बिल खाते जमा**		1,04,548 30
	श्री भेंट खाता	9,335.55	
	श्री ब्याज खाता	91,879.75	
11,110.00	श्री फोटो खाता	3,333.00	
28,64,882.40	**श्री बरखेड़ा मंदिर आमद**		36,38,217.85
	भेंट व गोलख	51,999.10	
	जीर्णोद्धार मन्दिर	24,79,114.75	
	जोत खाता	9,500.00	
	साधारण बरखेडा	10,46,602.00	
	भोजन शाला बरखेडा	51,002.00	
19,115.25	**श्री जनता कॉलोनी मंदिर**		21,222.35
	श्री भेंट व गोलख	21,222.35	
	श्री जीर्णोद्धार	-	
13,123.00	**श्री जीव दया खाते आमद**		39,500.20
1,64,193.00	**श्री भोजनशाला खाते आमद**		1,62,104 00
969.00	**श्री वैय्यावच खाते आमद**		4,715.00
20,758.15	**श्री साधर्मी सेवा कोष खाते आमद**		28,102.40
-	**श्री नया भवन निर्माण खाते आमद**		1,111.00
5,703.05	**श्री गुरुदेव खाते आमद**		3,606.90
4,525.00	**श्री शासन देवी खाते आमद**		5,095.05
21.00	**श्री सात क्षेत्र खाते आमद**		559.60
	श्री शुद्ध हानि सामान्य कोष में हस्तान्तरित की गई		12,859.94
46,73,543.35			**54,35,017.37**

(दानसिंह कर्नावट)

कोषाध्यक्ष

वास्ते चतर एण्ड चतर,

चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट

आर.के. ~ त

पार्टनर
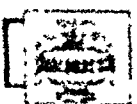
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

चिट्ठा

गत वर्ष की रकम	दायित्व		इस वर्ष की रकम
27,83 220 01	**श्री सामान्य कोष**		27,70,360 17
	गतवर्ष की रकम	27,83,220 01	
	इस वर्ष का घाटा		
	आय-व्यय खाते से	12,859 84	
19,231 00	**श्री ज्ञान स्थाई खाता**		19 231 00
	गत वर्ष का जमा		
1 54 354 00	**श्री आयम्बिल स्थाई मिति खाता**		1,63,441 00
	गत वर्ष का जमा	1,54 354 00	
	इस वर्ष की आय	9,087 00	
22 171 05	**श्री श्राविका सघ खाते**		22 171 05
	गत वर्ष की रकम		
41 080 00	**श्री भोजनशाला स्थाई मिति खाते जमा**		41,581 00
	गत वर्ष की रकम	41,080 00	
	इस वर्ष की आय	501 00	
2,74 233 00	**श्री साधर्मी सेवा कोष स्थाई खाता**		2,74,233 00
	गत वर्ष की रकम		
13 805 00	**श्री जोत स्थाई खाता**		-
	यह रकम आय-व्यय खाते मे जमा की गयी		
1 860 00	**श्री सम्तसरी पारना खाते**		1,860 00
3 844 30	**श्री नवपद पारना खाते**		3,844 30
51 000 00	**श्री आयम्बिल शाला जीर्णोद्धार**		51 000 00
33,64 798 36			**33 47,721 52**

(हीराभाई चौधरी)
अध्यक्ष

मोतीलाल भडकतिया
सघ मत्री

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ (पजी.) जयपुर

घी वालों का रास्ता, जौहरी बजार, जयपुर

वर्ष 31-03-1998 तक

गत वर्ष की रकम	स्वामित्व		इस वर्ष की रकम
6,75,216.45	**श्री स्थाई सम्पत्ति खाता**		6,75,216.45
	गत वर्ष की रकम		
26,10,020.92	**बैंकों में जमा**		25,70,292 17
	(1) मियादी जमा		
	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर	19,49,835 30	
	देना बैंक	5,32,144.00	
	(2) चालू खाता (बीकानेर एण्ड जयपुर बैंक)	1,435.04	
	(3) बचत खाता		
	दी बैंक ऑफ राजस्थान	2,436.36	
	बडौदा बैंक	295.17	
	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर	84,146.30	
52,345.25	**श्री विभिन्न लेनदारियां**		75,076.25
	श्री ऊगाई खाता	618.25	
	राजस्थान स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड	727.00	
	श्री अग्रिम खाता	73,731.00	
27,215.74	**श्री रोकड वाकी**		27,136.65
	Notes on Accounts Schedule-A		
33,64,798.36			**33,47,721.52**

(दानसिंह कर्नावट)
कोषाध्यक्ष

वास्ते चतर एण्ड चतर,
चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट

आर.के. च
पार्टनर
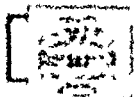
Auditor's Report

1 (FORM No 10 B)

(See Rule 17 B)

AUDIT REPORT UNDER SECTION 12a (B) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 IN THE CASE OF CHARITABLE OR RELIGIOUS TRUSTS OF INSTITUTIONS

We have examined the Balance Sheet of Shri Jain Shwetamber Tapagach Sangh, Ghee Walon Ka Rasta, Jaipur as at 31 march, 1998 and the Income and Expenditure Account for the year ended on that date which are in agreement with the books of account maintained by the said trust of institutions

We have obtained all the informations and explanations which to the best or our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit In our opinion proper books of accounts have been kept by the said Sangh, subject to the comments that old immovable properties, jewellery have not been valued and included in the Balance Sheet and Income and Expenditures are accounted for on receipt basis as usual

In our opinion and to the best of our information and according to information given to us, the said accounts subjects to above give a true and fair view

(1) In the case of the Balance Sheet of the State of Affairs of the above named trust/institution as on 31st March 1998

(2) In the case of the Income & Expenditure account of the profit of loss of its accounting year ending on 31st March, 1998

For CHATTER & CHATTER
Chartered Accountants

(R. K. CHATTER)
Partner

SHREE JAIN SHWETAMBER TAPAGACH SANGH
GHEE WALON KA RASTA, JOHARI BAZAR, JAIPUR

SCHEDULE - 'A'

Basis of Accounting and Notes on Accounts.

1. Sang follows cash basis of accounting.
2. Depreciation on fixed assets, not provided.
3. Old Property / ornaments / Angies and other worship goods, and articles are not included in the assets / income as usual
4. Previous year figures have been regrouped / rearranged wherever considered necessary.

(Seal)

For Chatter & Chatter
Chartered Accountants
Sd/- R.K. Chatar
17-8-98
Partner
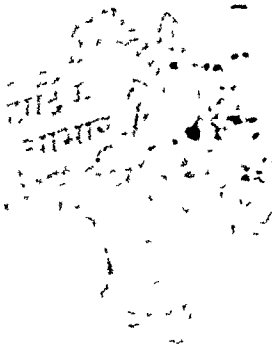
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी) जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालो का रास्ता, जयपुर

फोन 563260/569494

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ आमनाय के समस्त भाई बहिनो की सेवा मे

विषय सघ के सदस्य बनने हेतु निवेदन ।

महोदय/महोदया,

जैसा कि आपको विदित है कि वर्ष 1997 मे इस श्रीसघ का पजीकरण कराया गया था और पजीकृत विधान के अनुसार सघ का सदस्य बनने के लिए आवेदन- सदस्यता का निर्धारित शुल्क के साथ आवेदन कर सदस्यता प्राप्त करना आवश्यक हो गया था। उपरोक्तानुसार पजीकृत सदस्य बनने पर ही महासमिति के 1997 मे सम्पन्न हुए चुनाव मे भाग ले सके-यथा चुनाव मे खड़े हो सके एव मतदान कर सके थे । पजीकृत परिवारो को सघ की गतिविधियो महोत्सवो आदि की नियमित रूप से सूचनाए प्रेषित की जाती है । यही प्रक्रिया भविष्य मे भी लागू रहेगी ।

अत महासमिति ने श्रीसघ के उन सभी सदस्यो से, जो अभी तक सदस्य नहीं बने है, पुन निवेदन करने का निश्चय किया है कि उपरोक्त प्रक्रिया अनुसार आवेदन कर श्रीसघ की सदस्यता प्राप्त करने की कृपा करे ।

आवेदन करने हेतु निर्धारित प्रपत्र सघ की पेढी पर उपलब्ध है ।

निवेदक

मोतीलाल भडकतिया

सघ मत्री

हार्दिक शुभकामनाओ सहित

कुन्नीलाल मूसल एवं मूसल परिवार

-चेतन कुमार मूसल

4320, नथमलजी का चौक, के जी बी का रास्ता,
जौहरी बाजार, जयपुर (राज)
फोन 571204 (निवास)

पर्यूषण पर्व के पावन अवसर पर क्षमायाचना सहित

पडित भगवानदास जी जैन द्वारा अनुदित ग्रथ उपलब्ध है —

(1) **वास्तुसार प्रकरण** (नया सस्करण)

(2) **प्रासाद मण्डन** (हिन्दी एव गुजराती भाषा मे)
(गृह निर्माण, देवालय एव मूर्ति शिल्प के प्रमाणित ग्रथ)

(3) **मेघ महोदधि वर्ष प्रबोध** (हिन्दी भाषा)
(ज्योतिष का विश्वसनीय ग्रथ)

पत्र व्यवहार का पता

पारसमल कटारिया

2-क-20, शास्त्री नगर, जयपुर - 302 016

फोन 301548